पूर्णसंख्या—१०१

ब्राज़ील-दर्शन

जुलाई १९४८ } श्रावण २००५ वर्ष ११ संख्या १

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

वार्षिक मूल्य ६)

विदेश में ८)

इस प्रति का ॥)

ब्राज़ील और ब्राज़ीलियन

ब्राजील संसार के सब से बड़े देशों में से एक है। इसका क्षेत्रफल ३२५०००००० वर्गमील से भी अधिक है। केवल चीन कनाडा, उत्तरी अमेरिका का ही क्षेत्रफल उसके क्षेत्रफल से अधिक है। ब्राजील अमेरिका के एक तिहाई भाग से भी अधिक भाग विस्तृत है। और उसके किनारे बहुत से द्वीपों का समूह फैला है। इस पर टिनीडाड और फर्मान्डों नोनोरहा के समूह पाये जाते हैं। किनारे के समीप मराका, मराजो पाये जाते हैं जो अमेजक के मुहाने के द्वीप हैं। इसके अतिरिक्त सैन, लुई सैन सेवास्टियन ग्रैंड आइल्स अवरोल्हा फ्रैड्स, सैन्य कैथीरिना आदि द्वीप स्थित है। किनारे की लम्बाई ५°१० उत्तरी अक्षांश से लेकर ३०°१° दक्षिणी अक्षांश तक फैला हुआ है। जो चार हजार मील से भी अधिक है। यह केप ओरेंज से लेकर श्रयी नदी तक अटलांटिक महासागर से घिरा हुआ यूरोप का सब से निकटवर्ती स्थान सेन्ट शेक अंतरीप है जो ग्रैन्डो नारहे में स्थित है ब्राजील का सबसे निकटवर्ती बन्दरगाह न्यूयार्क से तीन हजार मील दूर है। लिस्बन से परनाम्बुको की यात्रा में आजकल दस दिन से भी कम समय लगता है। यह यात्रा आजकल स्टीमर से की जाती है।

ब्राजील के चारों ओर किनारे पर चालीस से भी अधिक समुद्री तट पाये जाते हैं। यह आवश्यक नहीं है कि उन सब का वर्णन किया जाय क्योंकि केवल दस बारह ही ऐसे तट हैं जो आज कल महत्वपूर्ण समझे जाते हैं। राय डी जेनेरी संघीय शासन की राजधानी है। इसका वर्णन सबसे पहले करना आवश्यक प्रतीत होता है। क्योंकि सभी तटों मे यहाँ वार्षिक सामुद्रिक जहाज अधिक ठहरते हैं। परन्तु उत्तर में मनाओन का तट भी बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ से ब्राजील के राष्ट्रीय सामुद्री बेड़े इतने अधिक लाये और भेजे जाते हैं जितना कि किसी दूसरे तट से नहीं भेजे जाते इसके अतिरिक्त यह संसार में सब से अधिक आयात-निर्यात के साधन उपस्थित करता है और उन्हें बाहर भेजता है। पारा भी सब तटों की भाँति एक महत्वपूर्ण तट है। यह किनारे के उत्तरी भाग में स्थित है। परनाम्बुकी का बन्दरगार इसलिये अत्यन्त प्रसिद्ध है क्योंकि सबसे पहले यहीं पर यूरोप के जहाज रुकते थे। बहिया का बन्दरगाह अपनी सामुद्रिक विरामस्थल के लिये प्रसिद्ध है। यह पुराने समय में अपनी व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। सैन्वीज का तट अपनी सुरक्षित स्थित के लिए प्रसिद्ध है। यह अत्यन्त धनी रियासतों का बन्दरगाह है। यह जहाजी शक्ति में राम डी जेनेरी से दूसरी श्रेणी में परिमाणित किया जाता है।

यहाँ पर पहली संघीय राजधानी के बन्दरगाहों का वर्णन करना सबसे उचित प्रतीत होता है। इसलिए नहीं कि यह संघात्मक शासन के राजधानी के बन्दरगाह है या समुद्री

ब्राजील-दर्शन

बेड़े की स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं बल्कि इसलिए कि प्रकृति ने इनको विश्व के सर्वोत्तम तट बनाए हैं। किसी अच्छे बन्दरगाह के जो गुण होने चाहिए वे सभी इसमें विद्यमान हैं। समुद्र की गहराई, विस्तीर्णता, जहाजों के शरण लेने की सुविधा, प्राकृतिक सुविधाओं, स्वच्छ जल तथा सभी ऋतुओं की कठिनाइयों से बचने का साधन इन बन्दरगाहों को अत्यन्त महत्वपूर्ण बना देते हैं। रम्य की खाड़ी इन सभी प्राकृतिक सुविधाओं से युक्त है। प्राकृतिक सौन्दर्य ने इस खाड़ी को और भी अद्वितीय बना दिया है। यह प्रशांत महासागर की इतनी सुन्दर खाड़ी है कि न्यूजीलैंड की "स्वर्ग।का द्वार कहते हैं। न्यूजी लैंड इस खाड़ी का एक सब से उत्तम बन्दरगाह है।

इस खाड़ी के पास नगर का दृश्य अत्यन्त मनोहर प्रतीत होता है। दाहिनी ओर निकथेराय है। यह स्थान बड़ा ही सुहावना है। इस नगर के विशाल भवन जो पहाड़ी बर्फीली चट्टानों के सम्मुख बनी हुई हैं वे अत्यन्त चित्ताकर्षक है। खाड़ी में जो स्टीमर इधर उधर घूमते हुए वे प्राचीनता की याद दिलाते हैं। बाईं ओर संघ की राजधानी पानी के धरातल से पर्वत की ऊँचाई तक उठा हुआ दृष्टिगोचर होता है। नगर के ठीक सामने कोबरा द्वीप, फ़िसकल द्वीप और कैस फरोक्स द्वीप स्थित है। ये सभी द्वीप समूह नाव की यात्रा के लिये बड़ी सुविधा जनक है। नामकरण किए हुए यहाँ पर कुल ४६ द्वीप हैं। इसके अतिरिक्त बहुत से ऐसे भी द्वीप हैं जिनका नामकरण नहीं हुआ है।

खाड़ी का बन्दरगाह या खाड़ी लगभग २० मील लम्बी है।

इसकी चौड़ाई १२ मील है। इसके अतिरिक्त अवेनिडा राय-बरैन्कों एक अत्यन्त सुन्दर मार्ग है। यह डेढ़ मील के लगभग नगर के अन्दर प्रविष्ट कर गया है। यह उत्तरी समुद्र तट से दक्षिणी समुद्र तक की ओर घुसा हुआ है। इसके पश्चात् यह अवेनिडा बैशमार से मिल जाता है। यह सुन्दर मार्ग अत्यन्त रमणीक स्थान से होकर गया है। इसको अच्छी तरह से बनवाया गया है इसके दोनों ओर अच्छे अच्छे वृक्ष और वाटिकाएँ बनवाई गई हैं। यह सड़क पानी के तट के किनारे से ही बनाई गई है। अतएव एक ओर पानी का सुहावना दृश्य और दूसरी ओर प्राकृतिक दृश्य तथा सुन्दर वाटिकाएँ इस मार्ग की सुन्दरता को बढ़ा देती है। इस प्रकार यह सड़क लगभग चार मील की लम्बाई तक पराइया बरमेलट्टा में जाकर समाप्त होती है। यह सड़क संसार से सबसे सुन्दर है। अतएव यह सड़क प्राय: भ्रमण के लिये ही अधिक प्रसिद्ध है। यहाँ पर लोग मोटर से, घोड़े से यात्रा करते हैं। इस सड़क पर लोग पैदाल यात्रा करते हैं और अपना मनोरंजन करते हैं।

राय की खाड़ी अनगिनत सुन्दर और रहने योग्य स्थानों से भरी हुई हैं। यहां के जंगली प्रदेश, सुन्दर और चित्ताकर्षक पर्वतीय स्थान अपने रंगीन दृष्यों से जो मनोहरता उपस्थित करते हैं वे वर्णन के बाहर हैं। जगह जगह पर सुन्दर झाड़ियां, फूलों से अच्छादित वाटिकाएँ मस्तिष्क की थकावट को दूर कर देती है पर्वत की ऊँची ऊँची चोटियाँ सूर्य्य की सुनहरी किरणों से जब चमकती है और मन्द वायु जब अपने समीपवर्ती फूलों

की सुगन्ध से सारे वातावरण को सुगन्धित करती है तब यह खाड़ी अपनी अनुपम मनोहरता के लिए दर्शकों के प्रसंशा पात्र भी बन जाती है। इस प्रकार गैंडे जनयरों की खाड़ी का दृष्य है जो ब्राजील की सामुद्री तट की एक अनुपम और उत्तम खाड़ियों में से एक है

इसके अतिरिक्त दूसरी खाड़ियां हैं जो कि क्रमशः उत्तर से दक्षिण के तट तक फैली हुई है। इस खाड़ियों का एक साधारण दृष्य उपस्थित करने के लिए हमें पारा क बन्दरगाह से ३,००० मील की यात्रा करनी पड़ेगी। यह पारा का बन्दरगाह अमेजन नदी के मुहाने पर स्थित है, जो लगभग ८० मील समुद्र के धरातल से ऊँचा है। जब कोई भी जहाज इस तट से चालीस मील की दूरी पर होता है तब आमेजन नदी की पीली पानी की धार दिखाई पड़ने लगती हैं। पारा का बन्दरगाह और नगर गाजरा की खाड़ी की बाईं ओर स्थित हैं। यह स्थान समुद्र के तट से कुछ निचले प्रदेश में स्थित है अतएव यहां की जलवायु स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी नहीं है। परन्तु आजकल गवर्नमेंट ने अस्पतालों के निर्माण से तथा और भी दूसरे साधनों से इस स्थान को लोगों के निवास के योग्य बना दिया है। यह बन्दरगार यूरप वालों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यूरप के समस्त जहाज पहले पारा में ही रुकते हैं। अतः ब्राज़ील का यही सब से पहला बन्दरगाह है जहाँ पर वैदेशिक जहाज़ आकर रुकते हैं। इसके अतिरिक्त यह बन्दरगाह आमेजन स्टीम नेवीगेशन कम्पनी का सबसे मुख्य स्थान है। इसलिए यहाँ पर लगभग २०० स्टीमर सर्वदा उपस्थित रहते हैं और वे

आमेजन में तैरते रहते हैं। इस बन्दरगाह पर प्रकाश का भी बड़ा सुन्दर प्रबन्ध रहता है। बिजली का भी प्रबन्ध हो गया है। पारा के ही बन्दरगाह से आमेजन की घाटी में प्रवेश करने का मार्ग है। यह सब से धनी प्रदेश की राजधानी है और संभवतः यह ब्राजील का सब से मुख्य बन्दरगाह बना रहेगा।

इसके पश्चात् सानलुई का स्थान दर्शनीय है। यह राज्य का सबसे मुख्य बन्दरगाह और राजधानी है। यह नगर प्रायः बन्दरगाह के ऊपर ही बना हुआ है परन्तु यह अन्दर तक फैला हुआ है यह सान लुई द्वीप के उत्तरी-पूर्वी भाग में अधिक तर फैला हुआ है। यहाँ पर तीन अँग्रेजी जहाजों की श्रेणी है जो यहाँ से काटूगो का व्यापार करती हैं। सानलुई ब्राजील का सबसे मुख्य स्थान है। अनुमान किया जाता है कि प्रतिवर्ष यहां पर २५०" इञ्च से भी अधिक वर्षा हुआ करती है। इस खाड़ी के चारो ओर फ्रान्सीसियों और डचनिवासियों के किलों के ध्वंसावशेष भी पाये जाते हैं। जो प्राचीन समय का स्मरण दिलाते हैं।

फारटलेजा सियरा की राजधानी और बन्दरगाह है। यह स्थान इसलिए नहीं प्रसिद्ध है कि यह एक उत्तम बन्दरगाह है है बल्कि इसलिए कि यहाँ के निवासी इस बात के लिए निश्चय कर चुके हैं कि वे इसको एक सुन्दर बन्दरगाह बनावेंगे। वे लोग पानी को अन्दर तक लाने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं जिससे कि जहाजों को अन्दर आने और रुकने के लिए काफी सुविधा हो। फारटलेजा का बन्दरगाह बहुत से युरोपीय और अमेरिकन जहाजों के रुकने के उपयुक्त बन गया है। यहां पर बहुत से

स्टीमर रुकते हैं और ब्राजील के यात्री उतरते हैं।

नेटाल पार्टेंजी नदी के दाहिने तट पर स्थित है। यह इस नदी से लगभग १½ मील की दूरी पर स्थित है। यह अत्यन्त मनोहर राजधानी है और राय ग्रैंडोडीनार्टे का बन्दरगाह है। यह ब्राजील का सब से आनन्ददायक और सुन्दर बन्दरगाह है। इसकी जलवायु गर्म, सूखी और स्वास्थ्यप्रद है। आजकल यह प्रयत्न किया जा रहा है कि इस बन्दरगाह को उत्तरी ब्राजील का सब से प्रधान बन्दरगाह बनाया जाय और यही सामुद्रिक जहाजों का सबसे प्रधान अड्डा है। इस बन्दरगाह पर बड़े-बड़े जहाज किसी समय आ सकते हैं और जा सकते हैं। और ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक दिन यह ब्राजील का सबसे प्रधान बन्दरगाह माना जायगा। यहाँ का समुद्रिक व्यापार दिन प्रति दिन शीघ्रता से बढ़ता जाता है। इसके अतिरिक्त यह एक सैनिक अड्डा भी बन रहा है। कवाडेलों, पराहिबा का सबसे मुख्य बन्दरगाह है यहां से कारगों का व्यापार होता है। यह स्टीमरों के रुकने का अच्छा स्थान है।

परनामबुकों या रेसिफ ब्राजील का एक अत्यंत प्रसिद्ध फाटक है। उत्तरी प्रदेश के सभी जहाज, जो दक्षिण की ओर जाते हैं वे सब पहले इसी बन्दरगाह में प्रविष्ट होते हैं। यह स्थान कुछ कुछ पहाड़ी हैं और सामुद्री धरातल से कुछ नीचा है। रीफ नामक एक पौधा होता है जो जिसका विस्तृत श्रेणी दर्शकसे सबसे पहले आकर्षित करती है इसी रीफ और समुद्र के बीच की धार बन्दरगाह के लिए प्रयुक्त की जाती है। इस बन्दरगाह से बहुत सी रेलवे लाइन मिली हुई है। जिसके कारण अन्दर का

सामान इस बन्दरगाह से आसानी से भेजा जाता है। यह बन्दरगाह अपनी प्रसिद्धता में पारा के समान है। ब्राजील प्रसिद्ध बन्दरगाहों में इसका चौथा स्थान है।

बहिया या सान सालवे डोर का बन्दरगाह तीसरे नम्बर का बन्दरगाह है। यह ब्राजील के मुख्य बन्दरगाहों में से एक है। व्यापारिक उपयोग के लिये यह पहला बन्दरगाह है जो सबसे पहले प्रयोग में लाया गया। इसका इतिहास १५०० ई० से है। बहिया की खाड़ी ४१ मील लम्बी और ४० मील चौड़ी है। इस खाड़ी की अधिक से अधिक यह चौड़ाई है। संसार में यह सबसे सुरक्षित बरन्दरगाह है। परन्तु फिर भी जहाजों के प्रवेश करने में आज भी महान् आपत्ति और खतरे का सामना करना पड़ता है। कहीं कहीं पर १०० फीट की ऊँची चट्टानें हैं जो जहाजों के लिये खतरे से खाली नहीं है। यद्यपि आजकल साफ रास्ता निश्चित हो गया है और वहां पर प्रकाश का अच्छा प्रबन्ध रहता है। वहिया नगर कई मील तक बसा हुआ है। यह बन्दरगाह पुराने समय से अपने व्यापार के लिए प्रसिद्ध है। इसका व्यापार सानफ्रान्सिसकों से अधिक मात्रा में होता से। इस खाड़ी के चारों ओर पुर्तगालियों और हालैंड निवासियों के किलों का ध्वन्सावशेष आज भी विद्यमान् हैं।

इसके पश्चात् यदि हम आगे बढ़ें तो हमें विक्टोरिया का अत्यन्त सुन्दर बन्दरगाह मिलता है। यह स्पिरिटोसैंटों की राजधानी है। इसका प्रविष्ट द्वार बहुत से द्वीपों से घिरा हुआ है। इसके चारों ओर का प्रदेश पहाड़ी है। अलवरों पर्वत की ऊँचाई ३००० फीट है। बन्दरगाह ६ मील लम्बा और लगभग

आधा मील चौड़ा है। इसका किनारा घने जङ्गलों पर्वतीय दृश्यों तथा गुफाओं के कारण अत्यन्त मनोहर है। इस बन्दरगाह पर बहुत से योरुपीय जहाज रुकते है और यहां से व्यापार करते हैं।

रायडीजनेरों से लगभग २०० मील दक्षिण-पश्चिम की ओर सैंटो का बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह स.ओपालो का एक प्रसिद्ध बंदरगाह है। यह प्रजातंत्र राज्य के दूसरे नम्बर का व्यापारिक बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह भी अन्य बन्दरगाहों की भांति प्राकृतिक दृश्यों से भरा हुआ है। इसका दृश्य भी दर्शकों को आकर्शित कर लेता है। यह बन्दरगाह जहाजों के रुकने के लिए काफी सुरक्षित है।

इसके पश्चात् हम पराना के तट पर परानिग्वा की खाड़ी में प्रवेश करते हैं। यह बहुत बड़ी खाड़ी है और अच्छी तरह से सुरक्षित है। इस खाड़ी पर दो मुख्य बन्दरगाह हैं पहला परानिग्वा का बन्दरगाह जो प्रवेश करते समय ही मिलता है और दूसरा अन्टोनिना का बन्दरगाह जो खाड़ी के सिरे पर विद्यमान है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर लगभग ३० मील की दूरी पर स्थित है। प्रवेश करते समय हनी द्वीप इस खाड़ी को दो भागो में विभाजित कर देता है। यह बन्दरगाह अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए प्रसिद्ध हैं।

फलोरियानोपोलिस, सैन्टाकै थे रिना की राजधानी है और दक्षिणी ब्राजील का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इस पर तट सभी स्टीमर रुकते हैं।

रायग्रेंडेडोसोल, इसी नाम की रियासत की राजधानी है। और ब्राजील के दक्षिणी तट का सबसे प्रसिद्ध बन्दरगाह है। इस बन्दर की स्थित को सुधारने और अधिक सुरक्षित बनाने के लिए अत्यधिक प्रयत्न किया गया। है और यह अब काफी अच्छा बन्दरगाह बन गया है। दक्षिण का व्यापार इसी बन्दरगाह से होता है। पैटोस झील के सिरे पर अलजेर का बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह अत्यन्त प्रसिद्ध है। यह व्यापार केन्द्र है। इसका सभी सामान जहाज के द्वारा रायग्रैन्डेडोसोल को भेज दिया जाता है। वहां से वह अन्यत्र भेजा जाता है।

यह सभी सामुद्रिक फाटक १२० प्रकाश करने वाले खम्भों से प्रकाशित किए जाते हैं यह खम्भे जहाजों के आवागमन में बड़ी सुविधा पहुँचाते हैं। तट के समस्त बन्दरगाह सघीय शासन के आधीन हैं। वहीं इन बन्दरगाहों की रक्षा करती हैं। इस तट पर खँडहर तथा चट्टाने नाम मात्र के लिए कहीं कहीं पाई जाती हैं।

२—ब्राज़ील के इतिहास पर एक दृष्टि

पुरातत्व विभाग के अन्वेषकों ने अभी तक यह नहीं निश्चित किया कि ब्राजील निवासियों की उत्पत्ति कहां से हुई। परन्तु आजकल के लोगों की धारणा है कि ब्राजील के मूल निवा-

सी मंगोल जाति के थे। यह अनुमान किया जाता है कि उनके पूर्वज एशिया से आए और वे उत्तरी अमरिका से स्थलसंयोजक होते हुए या फ्लोरिड़ा के मार्ग से दक्षिणी अमरीका में रहने लगे। यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता कि इनके पूर्वज पहले यहां निश्चित रूप से रहने लगे या नहीं। क्योंकि उस समय भग्नावशेष और वहां की प्राचीन स्मृतियां इन विषयों पर बहुत थोड़ा प्रकाश डालती है। इन बातों पर बहुत से योरुपीय लोगों ने खोज की पर उसका कोई भी परिणाम निकला। मशका में मुर्दे को जलाने के भी चिह्न मिले हैं परन्तु वे चिह्न जापान और मिस्र के शव-दाह से अत्यन्त भिन्न हैं। इसके अतिरिक्त जो पत्थर और हड्डियों के अस्त्र-शस्त्र मिलते हैं वे उनके मूल निवासियों के विषय में अधिक ज्ञान नहीं कराते जैसा कि दूसरे देश के करते हैं। इससे प्रथम जब ब्राजील का अनुसन्धान हुआ तब यहां पर हल्के रंग के रेड (इंडियन) रहते थे। वे लोग धनुष और तीर से सुसज्जित रहते थे। यह इन लोगों के अस्त्र होते थे। इन अस्त्रों से वे बड़ी वीरता के साथ युद्ध करते थे।

नई दुनियां की खोज के पश्चात् शीघ्र ही ब्राजील का अनु-सन्धान किया गया। इसका भी कोलम्बस ने पता लगाया था। कोलम्बस और वास्कोडिगामा दो प्रसिद्ध नाविक थे जिन्होंने असीम साहस और धैर्य से इन स्थानों का पता लगाया। यह नाविक लोग लगभग एक ही समय के अनुसन्धान कर्ता थे। लोगों ने सबसे पहले अनुमान किया कि नई दुनिया अवश्य ही एक महान प्रदेश

होगा। परन्तु सबसे पहले पिन्जोन ने, जो कोलम्बस के आधीनता में काम कर रहा था १५००, ईस्वी में इस देश का पता लगाया इसके तीन मास पश्चात् वास्कोडिगामा का शिष्य कैबराल इस भूमि पर आया।

ब्राज़ील की खोज का इतिहास इस प्रकार है। विंसेन्ट यानेज़ा पिञ्ज़ान एक स्पेन का युवक था जो कोलम्बस की आधीनता में काम कर रहा था। वह उसकी आज्ञानुसार सन् १४९९ ई० में नये देशों को खोज में चल पड़ा। यह सन् १४९४ में टाइडेसिलास की सन्धि के अनुसार खोज करने के लिए निकला था। पिञ्ज़ान २८ जनवरी सन् १५०० ई० में ब्राजील के तट पर आ पहुँचा। जिस तट पर वह पहुँचा उसका नाम उसने कैबोडी सेन्टा मैरिया डे ला कैंमोले रक्खा। सम्भवतः आजकल इसको अगस्टाइन का अन्तरीप कहते हैं। यह परनाम्बूका के समीप है।

पिजान यहां के निवासियों के खोज न कर सका क्योंकि वे लोग अधिक जंगली थे और अधिक डाकू थे। इस असफलता के पश्चात् वह और द्वीपों की खोज में गया। वह ब्राजील के उत्तरी पश्चिमी तट की ओर पहुँचा। यहाँ के निवासी कुछ सीधे स्वभाव के थे। उन लोगों से इसकी मित्रता हो गई। यहाँ के निवासियों ने पिञ्ज़ेन के नाम का इस प्रकार स्वागत किया मानों उनकी पहले से घनिष्ट मित्रता रही हो। इस प्रकार वह आमेजन की ओर थोड़ी दूर बढ़ा। सम्भवतः वह पारा बन्दरगाह तक गया होगा। इसके पश्चात् वह स्पेन लौट आया।

ब्राज़ील-दर्शन

इधर वास्कोडिगामा सन् १४९८ ई० में केप आफ गुड होप की प्रसिद्ध यात्रा करके लिस्बन लौटा था। इसके पश्चात् वह दक्षिण-पश्चिम के देशों की खोज करने के लिए निकल पड़ा। इसी के साथ साथ उसने 'ईस्ट इंडीज' की यात्रा समाप्त की।

९ मार्च सन् १५०० ई० में वास्कोडिगामा ने लिस्बन से प्रस्थान किया। एक जहाज पेड्रो अलवरेस कैबराल की अध्यक्षता में चला। वह जहाज २५ अप्रैल को बाहिया के तट पर जा पहुँचे। इसको पोर्टोसेगुरो' कहते हैं। कैबरेल ने इस स्थान पर पुर्तगाल के राजा के नाम पर आधिपत्य स्थापित किया और इसको 'टाराडा सैंटा क्रूज़' कहना आरम्भ किया जिसका अभिप्राय यह कि यहां पर क्रिश्चियन धर्म का झंडा स्थापित हो गया।

यह काम बहुत ही धार्मिक उत्साह के साथ किया जाने लगा यहां के निवासी भी पूर्ण रूप से उनके कामों में सहयोग देते थे। जहाज के दो आदमी यहां पर रहने के लिए छोड़ दिए गये। इसके पश्चात् एक जहाज 'कासपार डी ले मोस' की अध्यक्षता में उत्तरी तट की खोज करने के लिए भेजा गया। उसको यह भी आज्ञा दी गई कि वह वहां का पता लगा कर शीघ्र लिस्बन लौट आवे। इधर कैबराल इण्डीज चला गया और मोज अच्छी तरह से लिस्बन लौट गया। मई में उसी वर्ष पुर्तगाल के राजा ने एक दूसरा बेड़ा तैयार कराया और नवीन देशों के अनुसंधान के लिए उसे भेजा। यह बेड़ा एक वेनेशियन की अध्यक्षता में भेजा गया था। इस वेनेशियन का नाम अमेरिगो वेस पुगी था। वह प्रसिद्ध ज्योतिषी और विज्ञान वेत्ता था। वह होजेड़ा के साथ रह चुका था जिसने वेनेज्वेला

और ट्रिनीडाड का सन् १४६६ ई० में पता लगाया था और सन् १५०० ई० में पिञ्चान के साथ लौट आया था। यह बेड़ा केब्राल से मिला। केब्राल इंडीज से लौट रहा। वेनेशियन के साथ केब्राल फिर लौट गया और वहां पर दोनों ने प्रत्येक नदी, पहाड़ अन्तरीप, खाड़ी का दक्षिण में सैंटोज तक नाम करण किया।

अमेरिगो-अफ्रीका के मार्ग से लिस्बन को लौटा और सन् १५०२ ई० में उसने दूसरी यात्रा आरंभ की। इसके साथ छः जहाज थे। और उसका अध्यक्ष डबार्टे कोल्हों भी था। इसके साथ इसने यात्रा आरम्भ की। परन्तु एक भारी बवण्डर ने इन जहाजों को तितर बितर कर दिया। डार्टे कोल्हों का जहाज संभवतः फर्नान्डो नी शीन्हा द्वीप के समीप नष्ट हुआ थी। और अमेरिगो दूसरे जहाजों के साथ आल-सेन्ट्स नामक खाड़ी में पहुँचा। इस खाड़ी को बाहिया की खाड़ी भी कहते हैं। यहां पर ये लोग उतरे और उन्होंने अपना किला बनाया। यहां पर वहां के निवासियों से उनकी घनिष्ट मित्रता हो गयी। अंत में अमेरिगो के शेष जहाज लकड़ी से लदे हुए द्वीप पहुँचे। अमेरिगो की यात्रा की यह कहानी फ्रीबर्ग-बेडेन की पुस्तकों में प्रकाशित की गई। यहां पर यह विचार किया गया कि यह नया खोज किया हुआ प्राय द्वीप अमेरिका के नाम से प्रसिद्ध किया जाय। और ऐसा प्रतीत होता है कि थोड़े दिनों पश्चात् पुर्तगाल निवासी इसको अमेरिका के नाम से पुकारने लगे। जो लकड़ी टेरण्डा-सेटाक्रू से यूरोप में आती थी उसे ब्रासील लकड़ी के नाम से पुकारा जाता था और उस देश को ब्रेसील के

नाम से। यही ब्रेसील आगे चल कर अंग्रेजों के द्वारा ब्राज़ील के नाम से पुकारा गया। इसके पश्चात् सन् १५०४ ई० में फ्रांस के एक नाविक डी गानेवील ने इस देश का भ्रमण किया और उसी समय से पुर्तगाल के जहाजोंने इंडीज के साथ अपना व्यापार सम्बन्ध आरंभ कर दिया। सन् १५१९ ई० में मैगेलेन ने राय की खाड़ी में कुछ सप्ताह रहकर अपना अनुभव प्राप्त किया।

सन् १५०३ ई० से फ्रांसीसी संधि ने लगातार यह प्रयत्न करके आरम्भ किया कि वे ब्राजील पर अपना आधिपत्य स्थापित कर सकें। सन् १५२६ ई० में उनको अपने प्रयत्न में कुछ सफलता मिली परन्तु उसी समय पुर्तगालियों के एक जहाजी बेड़े ने उन्हें बाहिया की खाड़ी में पराजित कर दिया। फ्रान्सीसियों ने पहले पर-नाम्बूकों पर भी जो पुर्तगालियों के अधीन था अधिकार कर लिया था। परन्तु उसको भी पुर्तगालियों ने सन् १५३० में ले लिया। सबसे पहले परनाम्बूकों की यात्रा विन्जान ने की थी। परन्तु कैबरल पहला पुर्तगाली था जिसने यहाँ पर निश्चित रूप से अपना अधिकार किया।

सन् १५३० ई० में सर्वप्रथम एक अँग्रेज ने व्यापारी जिसका नाम हाकिन्स था परनाम्बूकों की यात्रा की। उसी ने इंगलैण्ड और ब्राज़ील के बीच व्यापार आरम्भ किया। जो आडाम्ब बहुत बड़े पैमाने पर किया जाता है। हाकिन्स ने अपनी यात्रा एक बहुत छोटे जहाज से जिसका नाम मध्य पोल था और २५० रु० से आरम्भ की ? इसी जहाज से उसने एक इंडियन अमीर को इंगलैण्ड पहुँचाया। जिसको उसने हेनरी अष्टम के सामने ह्वाइट हाल में पेश किया। इसी समय से अंग्रेजों का ब्राज़ील

से लगातार व्यापार होता रहा।

पुर्तगालियों का उपनिवेश जो बाहिया में स्थापित किया गया था उसका निर्माता डी-आगो-अल्वस्सेकोरिया था। वह करामुरू के नाम से प्रसिद्ध है जिसको १५०० ई० में कैबरल ने वहीं पर छोड़ दिया था। करामुरू वहां का एक अत्यन्त प्रभावशाली और धनी व्यक्ति हो गया। उसने ब्राजील में एक बहुत बड़ा चर्च भी स्थापित किया। पुर्तगाल के राजा की अज्ञानुसार मार्टिन-अफोन्सो-डी-सौसा ने समस्त देश को कैपिटा निपाज् में विभाजित किया। इनमें एक एक थ्योर नियुक्त किये गये। जो इसका प्रबन्ध करें और उपनिवेश के खर्च और परिश्रम का सम्पूर्ण खर्च सहन करने के लिए तय्यार होते थे। यह कैपिटानियाज कुल १५ थे। जिसकी सीमा बहुत काफी थी। परन्तु उपनिवेश बनाने का यह ढङ्ग सफल न हुआ। एक के बाद दूसरे कैपिटानियाज के आधीन होते गये। केवल परनाम्बूको शेष रहा। जिसका प्रबन्ध उवार्टे-कोल्हों ने सम्भवतः बड़ी योग्यता से किया था। सन् १५४९ ई० में देश में अत्यन्त अशांति फैल गई। वहां पर लड़ाई झगड़े होने लगे। ऐसी स्थिति में डामजान-तृतीय ने प्रतिगांव से ४ आदमियों को भेजा। उनके साथ न्यायाधीश और धार्मिक पादरी भी थे। वे लोग देश में शान्ति स्थापित करने के लिए और राज्य की आधीनता स्वीकृत करने के लिये बाहिया में भेजे गये थे। वह सेना थामेंडी जोंआ के आधिपत्य में भेजी गई थी। जिसको करामुरू तथा दूसरे प्रभावशाली व्यक्तियो ने काफी सहायता दी। बाहिया

में दृढ़ किले का निर्माण किया गया और राजधानी नियुक्त की गई।

मनोवल-डा-नीबरे-गा जो जेस्विट दल का एक प्रसिद्ध नेता था और ल्वायला का मित्र था, एक यात्री की स्थापना की और सम्पूर्ण देश में मिशनरियों को भेजा और स्कूल स्थापित किये। थामे-डो-सोजा के अन्दर एक व्यवस्थापिक सभा की भी स्थापना की गई। इस पर समस्त राज्य में शान्ति की स्थापना हुई और विद्रोह को दबाया गया। एक कैप्टन जनरल की हैसियत से उसके सारे अधिकारों को अपने अंतर्गत किया। जो अधिकार पहले कैपिटनियाज के अमीरों को दिये गये थे। इसके अतिरिक्त एक सेना भी स्थापित की गई जिसका काम उपनिवेशों को जहाजी आक्रमणों से बचाना था। अजोर्स से पशु लाए जाने लगे और इस प्रकार की कृषि की जाने लगी। पुर्तगाल से बहुत से अनाथ लड़के और लड़कियां यहाँ लाई गईं। उसके अतीरिक्त ऐसे लोग भी इन नये नये उपनिवेशों में भेजे जाने लगे जो राज्य में किसी विशेष दोष के अभियुत थे। थामेडी-सोजा सन् १५५३ ई० में पुर्तगाल को लौट आया। इसने उवार्टे डा कोस्टा को वहाँ के उत्तराधिकारी नियुक्त किया जो वहाँ के निवासियों के द्वारा मार डाला गया। उसके पश्चात् मुम्फ डी-सी वहाँ का उत्तराधिकारी नियुक्त हुआ। उसने बड़ी योग्यता के साथ डी-सोजा का काम पूरा किया।

उसी समय सन् १५४० ई० में फ्रांसिस्को-पिजारो ने जिसने पीरु को खोजा और जीता था, सुना कि पूर्वी देशों में धन विद्यमान है। उसने अपने भई गोन्जालो को ३०० स्पेनिश

सैनिकों के साथ और ४ हजार साथियों के साथ उसे जीतने के लिए भेजा गोन्जोलो-पिजारों ने अपने जहाजी बेडे को और सामान के साथ भेजा उसने फ्रांसिस्को डी० आरेलेना को जो उसका कैप्टन था यह आज्ञा दी कि वह वहाँ से जो कुछ भी सामान पावे, लेकर, शीघ्र ही अपनी सेना के साथ लौट आवे। आरेलेना लौटा नहीं वह आगे बढ़ता ही गया। वह समुद्र की ओर नदी की तरफ बढ़ता ही गया। जब पिजारो आरेलेना के न आने से अधीर हो गया तब वह स्वयं सेपा नदी की ओर बढ़ा। वहाँ पर उसे एक स्पेनिश के द्वारा ज्ञात हुआ कि आरेलेना ने उसके साथ विश्वाशघात किया है। पिजारो पीरू को लौट आया और उसने अपनी सारी आपत्ति की कहानी लोगों से कह सुनाई। उसने यह भी बताया की उसे किस तरह स्त्रियों से भी इस नदी के पास लड़ना पड़ा। अतएव विजय की सारी व्यवस्था असफल रही। आरेलेना जो पहला नाविक था जिसने आधे ब्राजील को पानी से पार किया स्पेन पहुचा उसने अपनी यात्रा की सारी कहानी लोगों से कह सुनाई। उसकी भी स्त्रियों के साथ जो लड़ाई हुई वह कहानी लोगों को सत्य प्रतीत होने लगी। लोगों को पहले की कहानी पर अब विश्वाश होने लगा। इसलिए पानी के अंग को उन्हों ने "अमेजन की नदी" के नाम से प्रसिद्ध किया।

जैसे जैसे गन्ने की पैदावर ब्राजील में बढ़ने लगी वैसे वैसे अफ्रीका से कुली यहाँ पर लाए जाने लगे। वह कार्य अधिकतर सन् १५४० ई० से होने लगा था फ्रांसीसियों से प्रायः सारी शताब्दी तक खतरा रहा। सन् १५५५ ई० में शबरी खाड़ी में

फ्रांस वे ह्यूग्यू नीज अपना उपनिवेश स्थापित करना चाहते थे। यह धारणा अधिक भया वह सिद्ध हुई। इसये पुर्तगालियों ने राज्य की ओर से एक कैप्टन नियुक्त किया जिससे दक्षिणी तट सुरक्षित रहे। १५८० ई० में यह देश सीधा पुर्तगालियों से पुर्तगाल सम्राट के हाथ में आ गया। और इस शताब्दी के अंतिम समय में समस्त देश फ्रान्सीसी अंग्रेजी डच तथा स्पेनिश सैनिकों के द्वारा कुचला दिया जाने लगा। १५८३ ई० और १५९१ ई० सेन्वेड़ ले लिया गया और थोड़े दिनो तक यह अंग्रेजी के अधीन रहा। परन्तु ऐसा नहीं हुआ कि उन लोगों ने ब्राजील के उपनिवेशी को जीतने का घोर प्रयत्न किया।

इसी समय ब्राजील के नेताओं ने बारही आक्रमणो की सामना किया और १६०८ ई० में एक राज्य दक्षिणी ब्राजील में स्थापित किया गया। इस राज्य की राजधनी रियोडी जेनेरो नियुक्त की गई। उस समय पर भी गवर्नर जनरल थे। एक डियागो डी मेनेजेज था जो बाहिया में रहा करता था और दूसरा फ्रांसिस्यिो डि० सोजा था जा रियो डी जेनेरो में रहा करता था। यह प्रबन्ध कई वर्ष तक बड़ी मित्रतापूर्वक चलता रहा परन्तु तुम्हरी राज्य के सामने डच और फ्रांसीसियों की उत्तरी तट न जमने देने का एक बहुत कठिन काम था। इन दो आक्रमणकारियों से उत्तरी ब्राजील का शासक बहुत सतर्क रहता था। परन्तु सन् १६१२ ई० फ्रांसीसियों ने मरन-हव नामक स्थान पर एक दृढ़ किले का विभाग किया। इस को वे सेन्टलुई के नाम से पुकारते थे। जो जनरल सान-लुई के नाम से प्रसिद्ध

है। वे लोग सन् १६१४ ई० में वहां से निकाल दियेगये। केवल वे ही लोग वहां रहने के अधिकारी हुए जो वहाँ की स्त्रियों से व्याह कर चुके थे। दूसरे वर्ष डचों ने पारा नामक स्थान पर एक उपनिवेश स्थापित किया। अंत में वे लोग भी सन् १६२५ ई० में निकाल दिए गये। ३० वर्ष तक इसी प्रकार अब पुर्तगालियों और स्पेन निवासियों से ब्राजील के लिये लड़ते रहे। सन् १६१७ ई० में रायो-डी-जेनेरो की शासन व्यवस्था कुचल दी गई। सात वर्ष पश्चात् एक उत्तरी शासन मरन-हव और सियरा को नियंत्रित करने के लिये नियुक्त किया गया। उस राज्य की राजधानी सान-लुई स्थापित की गई। बाहिया को डचों ने सन् १६२४ में ले लिया। परन्तु सन् १६२५ ई० में स्पेन और पुर्तगाल की संयुक्त सेना ने उसे फिर ले लिया। इस तरह पचीस वर्ष तक डचों ने लगभग सभी शेष उपनिवेशों और बन्दरगाहों को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। सन् १६३६ ई० में नासू का मौरिस राजकुमार ब्राजील में डचों की ओर से गवर्नर जनरल बना कर भेजा गया। इसी समय पुर्तगालियों ने स्पेन के राज्य के विरुद्ध सन् १६४० ई० में विद्रोह किया और उन्हें सफलता भी मिली। मार्किवस डि०मान टालवा ब्राजील का वाइसराय नियुक्त किया गया। यह नया पुर्तगाल का राजा स्वीकार किया गया। थोड़े दिनों के पश्चात् पुर्तगाल की सेना ने ब्राजील निवासियों का साथ दिया। उनकी सहायता से उन्होंने डचों को निकालने की प्रतिज्ञा की एक बन्दरगाह के बाद दूसरे उनके आधीन होने लगे। और जनवरी सन् १६५४ ई० तक डचों में

ब्राजील के समस्त स्थानों को उन्होंने समर्पित कर दिया। इसी समय दक्षिण के रहने वाले लोगों ने आक्रमण करना आरंभ कर दिया और उन्होंने उत्तर और पश्चिम के समस्त देशों को सेंटविन्सेएट बन्दरगाह से सैन्वेज तक अपने अधिकार में कर लिया। यह "मैमेलूक्स" जो उस समय इसी नाम से प्रसिद्ध थे पाराग्यू नदी तक फैल गये और वे स्पेन वालोंसे भी लड़ने लगे जो यूरुग्वे के पश्चिम में रहने लगे थे। सन् १६४० ई० में प्लेट नदी के पास एक उपनिवेश स्थापित किया गया। इसको रायो डी जेनेरो को एक दल ने स्थापित किया था। इसको स्पेन वालों को सन् १७७० ई० में दे दिया गया। इस शताब्दी के अंत होने के पहले बहुत से आक्रमण हौबा टे राजधानी से किए गये। इस आक्रमण का उद्देश्य यह था कि बहुमूल्य जवाहरातों और मणियों की खोज हो जो अन्दर छिपे हुये थे इंडियन जो बहुत से हीरे, जवाहिरात और सोना लाते थे उन्हीं से इस देश में उसके मिलने की कहानी सुनी। पालिस्टास ने इसी खोज के लिये बहुत प्रयत्न किया अंत में उन्होंने सोने चाँदी, हीरे, जवाहरात आदि खदानों का पता लगाया जो अत्याधिक मात्रा में निकाली जाने लगी। यह घटना जब यूरोप में फैली तब वहां इस देश के इतिहास में एक नया युग प्रारम्भ हुआ।

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांसीसियों ने ब्राजील पर अधिकार करने की चेष्टा की। सन् १७१५ई० में एक बड़ी सैना चली और उसने रायो-डी-जेनेरो पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया।

परन्तु थोड़े दिनों के पश्चात् उसे हर्जाना देकर उसको छोड़ना पड़ा । इसी समय ब्राजील में बहुत विद्रोह हुए । जिस से यहां के निवासियों की दशा बहुत शोचनीय हो गई इसके पश्चात् फ्रांसीसी उत्तर की ओर खदेड़ दिये गये । वे लोग वोयायोक नदी की ओर खदेड़े गये थे । सन् १७१३ ई० में फ्रांसीसी और पुर्तगालियों के सन्धि के बाद यही नदी ब्राजील की उत्तरी सीमा निर्धारित की गई । सन् १७५३ और १७५८ ई० में यह कानून बना दिया गया कि इंडियन को गुलाम न बनाया जाय । इसी समय से गुलामों का व्यापार करने की प्रथा का अंत होने लगा ।

अठारहवीं शताब्दी के मध्य में चार नये रैपिट नीज या प्रांत बनाए गये । इनका नाम गोयाज माटी-ग्रोसे, सैंटा-कैथेरिल और माइनास-जेरायस है । सन् १७४९ ई० में लिस्बन के वैदेशिक मन्त्री की राय से ब्राजील से जेस्विट्स निकाल दिये गये और समाज की ओर से शिक्षा दी जाने लगी । खदान, व्यापार और भूमि सम्बन्धी कार्यों के लिये कानून बनाये गये और वे पुर्तगाल के राज्य से सन्धि सम्बन्ध रखने लगे । सन् १७६२ ई० से राज्य की राजधानी बहिया से राय-डी-जेनेरो बनाई गई । तभी से यह सदैव के लिए ब्राजील की राजधानी हुई । उस समय राय की सम्पूर्ण जनसंख्या लगभग तीस हजार थी । सन् १७८१ ई० में मीनाज गेरायस में प्रयत्न किया गया । कि ब्राजील को स्वतन्त्र बनाया जाय । माइन्यास गौराज ब्राजील का खदान केन्द्र है । उस पर बहुत से लोगों ने आक्रमण किया

ब्राज़ील-दर्शन

यह समय यूरोप और उत्तरी अमरीका के इतिहास में बड़ी अशांति का समय था।

प्रजातन्त्र वाद का संदेश ब्राजील में और दूसरे देशों में फैलाया जा रहा था। यह संदेश माइनास में उस समय लाया गया जब कि वहां लोग स्थाई होकर रहने लगे थे। और उसके ऊपर कानूनी दबाव डाला जा रहा था जो उनकी उन्नति को दिन प्रति दिन कम करता जाता था। प्रान्त का कैप्टन जनरल और केन्द्रीय शासन जो राय-डी-जेनेरो में स्थापित हुआ था पूर्णरूप से लोगों की नजारो से चुका था। उसके परिमाणस्वरूप माइनाज के कुछ नेताओं ने पुर्तगालियों को देश से निकालने के लिए और वहां पर प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने के लिये षडयन्त्र रचने लगे। इन षडयन्त्रकारियों का नेता क्विस-जोसे डा-सिल्जका एक्स-बियर था। इन लोगों का षडयन्त्र सफल न हो सका और वे पुर्तगाली शासन को समाप्त न कर सके। उनमें से बहुत से लोग कैद कर लिये गये और बहुत से मार डाले गये। एक्स-वियर फांसी पर लटकाया गया और उसके शरीर का एक भाग सारी राजधानी में घुमाया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन लोगों ने ब्राजील की स्वतन्त्रता के लिये बहुत बड़े त्याग किए उनका इतिहास आज भी ब्राजील के साहित्य में बड़े गौरव से पढ़ा जाता है और उनका प्रजातन्त्र शासन की स्थापना का उत्साह उदाहरण के लिये पेश किया जाता है।

उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ की जनसंख्या तीन करोड़ से भी अधिक हो गई। और यहाँ का व्यापार यूरोप से बहुत तेजी

से चलने लगा। यह व्यापार ४ करोड़ पौंड के लगभग होने लगा। सन् १८०१ ई० में स्पेन और पुर्तगाल के बीच जो युद्ध हुआ उसने इन उपनिवेशों के व्यापार में बहुत क्षति पहुँचाई। सबसे पहले ब्राजील अपने दक्षिण के स्पेन निवासियों के साथ युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हुआ और बहुत युद्ध करने के पश्चात् यूरुगुई को जीत लिया। उसी समय ठीक उत्तर में उसने केयी को जीता। इस प्रकार सम्पूर्ण फ्रेञ्च-गायना ब्राजील में सम्मिलित कर लिया गया। थोड़े दिनों के पश्चात् यूरुग्वे स्वतन्त्र हो गया और उसपर ब्यूनोजएयर्स का आधिपत्य हो गया। इसके लिए बहुत दिनों तक युद्ध छिड़ा रहा। अंत में ब्राजील और ब्यूनोजएयर्स उस बात पर सहमत हुए कि उनका राज्य स्वतन्त्र घोषित किया जाय। वे यूरुग्वे के स्वतन्त्र उपनिवेश के नाम से प्रसिद्ध हो गए। १८१५ की वियना की संधि के द्वारा फ्रेञ्च-गायना फ्रान्सीसियों को वापस कर दिया गया।

सन् १८०७ ई० में पुर्तगाल का राजा जोआ नेपोलियन के दबाव से अपने सम्पूर्ण दरबार को लिस्बन से रायो-डी जेनेरो को हटा दिया। यह दरबार का परिवर्तन ब्राजील में बड़े हर्ष और उत्साह के साथ किया गया। एक ब्रिटिश सेना फ्रांसीसियों के खतरे से बचाने के लिए इनके साथ रही। मार्ग में राज्य का दल बहिया से गुजरा और वहीं से वह रायो डी-जेनेरो प्रस्थान किया। यहां पहुँचने पर यह घोषणा की गई कि ब्राजील के सभी बन्दरगाह सभी राज्यों से व्यापार करने के लिए स्वतन्त्र है। इस आज्ञा के अनुसार १३ दिसम्बर सन् १८१५ ई० से

ब्राज़ील-दर्शन

ब्राजील एक राज्य की श्रेणियों परिगणित किया जाने लगा। और वह पुर्तगाल के समान एक राज्य हो गया। सन् १८२८ ई० में राजा पुर्तगाल वापस बुला लिया गया। उसने अपने लड़के डॉन-पेड्रो प्रथम को ब्राजील का वाइस राय नियुक्त किया। उसने उसे पुर्तगाल के मन्त्रिमंडल की सलाह से नियुक्त किया था। डॉन-पेड्रों ने ब्राज़ील के शासन प्रबन्ध वैधानिक रूप से संचालन करना आरम्भ किया। यह वैधानिक शासन व्यवस्था पुर्तगाल के आधार पर थी। यद्यपि पुर्तगाल की सरकार ब्रजील के इस स्वतन्त्र राज व्यवस्था से सहमत न थी। उसने अपने शेष अधिकारों से ब्राजील के सभो अधिकारों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। डॉम-पेड्रो को पुर्तगाल वापस बुला लिया। वह ऐसा करने के लिए तैयार न था। उसने पुर्तगाल के मंत्रि-मंडल को भंग कर दिया और ब्राजीलियन का एक नया मन्त्रि-मंडल बनाया। इस मन्त्रिमंडल का प्रसिद्ध नेता जोस-बोनी-फैसियो-डी-एन्ड्रूडा था। इसी समय ब्राजील के निवासियों से यह प्रार्थना की गई कि वे अपनी राष्ट्रीयता के ऊपर विचार करें और देश की गम्भीर परिस्थिति से अपनी रक्षा करें। भाग्य से समय ने उसका साथ दिया। देश के नेताओं ने राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिये जी जान से प्रयत्न किया जिसके परिश्रम स्वरूप एक नवीन और स्वतन्त्र राष्ट्र का निर्माण हुआ।

---

(३)

जिस समय ब्राजील अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहा था-उस समय प्रिंस रीजेंट एपीरैंगा में साओपालो नगर के समीप रहता था इसी समय उसे लिस्बन से ब्राजील की स्थिति को सुधारने की घोषणा मिली। उस समय वह दो द्वन्द्वी भावनाओं के बीच था। वह पुर्तगाल के राजा की आज्ञा का पालन करे या ब्राजील की स्वतन्त्रता घोषित करे यह दो समस्याएँ उसके सामने बहुत टेढ़ी थी। उसे इस बात का ज्ञान हो चुका था कि बाहिया और देश के दूसरे भाग अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर चुके हैं इसके अतिरिक्त साओपालो, माइनस और राय के प्रार्तगाल से अपना संबन्ध हटाने के लिए प्रयत्नशील है। ऐसी दशा में डॉन पेड्रो ने सारे फरमानों को सभी लोगों के सामने जला दिया और हाथ उठाते हुए उसने "स्वतन्त्रता या मृत्यु" घोषणा की यह घटना सात सितम्बर सन् १८२२ ई० में हुई। वह जब पांच सप्ताह पश्चात् राय को लौटा तब वह ब्राजील का सम्राट् घोषित किया गया। पुर्तगाली की सेनाएं और पुर्तगाल के शासन को स्वीकार करने वाले लोग जो इस स्वतंत्रता के आंदोलन से सहमत नहीं थे, पुर्तगाल वापस लौटा दिये गये। इस स्वतन्त्रता के आन्दोलन को दबाने के लिये पुर्तगाल से एक बड़ी सेना भेजी गई परन्तु उसे कोई सफलता न मिली। अंतिम युद्धक्षेत्र बाहिया बना। युद्ध समुद्र पर ही हुआ था। इस

युद्ध में अँग्रेजी सेना ने ब्राजील निवासियों का साथ दिया। और अंत में पुर्तगाल वालों को ब्राजील छोड़ना पड़ा।

ब्राजील का आंदोलन प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना के उद्देश्य से उठा था। वह निरंकुश शासन को समाप्त करना चाहता था। किन्तु ब्राजील के सरकार के द्वारा वह शीघ्र ही दबा दिया गया। सन् १८२५ ई० में अँग्रेजों ने पुर्तगाल सरकार को बाध्य किया कि यह ब्राजील की स्वतन्त्रता स्वीकार करे पुर्तगाल ने इसको उसी वर्ष की संधि के अनुसार स्वीकार कर लिया। उसी वर्ष ब्राजील की पहली पार्लियामेंट राय-डी जेनेरो में इकट्ठी हुई। पार्लियामेंट में बहुत उथल पुथल हुए। उसमें बहुत विरोधी भावनाएँ भी उठाई गई। अंत में रिपब्लिकन की राय बहुमत से पास हुई और उसका मन्त्रिमंडल राज्य का प्रबन्ध करने लगा। सम्राट वहां की सेना का प्रबन्ध करने में असफल रहा। उसने देखा कि उसका मन्त्रिमंडल लोगों की नजरों से तेजी के साथ गिरता जा रहा है। उसने वहाँ का राज्य अपने लड़के पेड्रो के अधिकार में छोड़ दिया और सन् १८३१ ई० में वह यूरोप लौट आया और कुछ दिन के बाद मर गया।

डाम पेड्रो द्वितीय उस समय नाबालिग ही था। इसलिए पार्लियामेंट ने उसके स्थान पर एक रीजेन्ट की स्थापना की और जब तक वह १५ वर्ष का नहीं हुआ तब तक वह राज्य का प्रबंध करती रही। डामपेड्रो उस समय केवल पांच ही वर्ष का था। इस रीजेंट ने राज्य को अधिक सफल तथा स्थाई बनाने की चेष्टा की। पेड्रो द्वितीय की नाबालिगी के समय रीजेन्ट ने बड़ी

योग्यता के साथ राज्य के कार्यों को किया। डाइगोफीजो इसका बड़ा योग्य प्रबन्धक था। इस नये सम्राट के अंतर्गत ब्रजील ने अवर्णनीय उन्नति की। जनता की भलाई के लिए बहुत से कार्य किये गये थे। समस्त राज्य में उद्योग धंधों की स्थापना की गई। और हजारों लोग यहाँ बसाए गये। यहाँ की पार्लियामेंट अँग्रेजी पार्लियामेंट के आधार पर बनी हुई है। उसी के उदार दल के लोगों का बहुमत रहता तो कभी अनुदार दल की। अनुसार यहाँ पर बहुत से कानून जनता के भलाई के लिए बनाए गए। एक स्थाई सेना और जहाजी बेड़ा भी तय्यार किया गया उसका उद्देश्य देश की रक्षा करना था। सन् १८५१ ई० में ब्राजील की सेना यूरूग्वे की सहायता के लिए भेजा गया। और १८५२ ई० में उसे भा स्वतन्त्रता मिल गई।

१८५१ ई० में जिस दल ने गुलामी के व्यापार को कम करने की कोशिस की थी उसे ही सफलता मिली। इसको पूर्ण रूप से बन्द करने के लिये एक कानून भी पास किया गया। सन् १८८८ ई० से गुलामों को बिल्कुल स्वतन्त्र कर दिया गया और ब्राजील में गुलामी प्रथा गैरकानूनी घोषित की गई। ब्राजील वालों का यह सबसे महान् कार्य था। उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता के पश्चात् ही ऐसा कानून बनाया। जिससे अमेरिकन भी इतनी शीघ्रता से न कर सका। जिस समय उसने यह कानून पास किया उस समय की राजनैतिक और समाजिक स्थिति बहुत डाँवाडोल थी। अभी ब्राजील में सत्तर वर्ष राज्य करते नहीं हुए थे और उसकी जनसंख्या ४ करोड़ के लगभग थी

जिसमें १ करोड़ गुलाम थे। इसी समय उसे आंतरिक और बाह्य आक्रमणों से अपनी रक्षा करता था। ऐसे समय में ब्राजील के राजनीतिज्ञों ने बड़े धैर्य से काम लिया उन्होंने उसके बन्दरगाह रेलवे और सड़कों को अच्छी तरह से बढ़ाया। उन्होंने कृषि की उन्नति के लिए पूर्ण सुविधाएँ प्रदान की। उद्योग धंधों को बढ़ाने के लिए भर सक प्रयत्न किया।

गुलाम प्रथा को रोकने का जो कानून पास किया गया उससे राज्य कुटुम्ब लोगों को बहुत प्रिय हो गया। विशेषतया उत्तरी राज्य में जहां पर गुलाम अधिक संख्या में पाए जाते थे राज्य के भक्त हो गये। सियरा और अमेजन के प्रान्तों ने उन्हें स्वतंत्र करने का रास्ता दिखाया था। सम्राट कुछ दिनों के लिए देश से चला गया था। इसीलिए उत्तर दायित्व उसकी लड़की आइ-सबेला के ऊपर पड़ा जो उस समय वहां की रीजेंट थी और जिसे वहां के "स्वतन्त्रता एक्ट" पर हस्ताक्षर करना था। सम्राट बुढ़ा हो गया था और वह इतिहास की साहित्य से विशेष प्रेम रखता था। वह धीरे धीरे राजनीति से अलग हो रहा था। उसने आइसाबेला के ही ऊपर राज्य का सारा भार छोड़ना चाहता था। अंत में डामपेड्रो वहां से चला गया और राज्य का सारा भार आइसाबेला के ऊपर पड़ा। आइसबेला का शासन काल उसी तरह से प्रसिद्ध था जैसे उसके पिता का। वह हृदय से ब्राजील निवासियों की सेवा करना चाहती थी। वह पार्लिया-मेंट के विरोधी दलों के झगड़ों को भी सुलझाना चाहती थी। परन्तु उसके सामने एक रोड़ा था। वह वाइकाउंट उरोप्रेटो था

जो सन् १८८६ ई० में वहां का प्रधान मन्त्री हुआ। उससे पुरानी नीति का अनुसरण करना छोड़ दिया। प्रान्तों में नौकर शाही राज्य स्थापित हो गया। जिससे प्रजा में असंतोष फैल गया।

परन्तु उसने लोगों के असंतोष की ओर आंखें मूंद ली। जिसके परिणाम स्वरूप जनता ने अपने निरंकुश अध्यक्षों को हटाने की प्रतिज्ञा कर ली।

सेना और जहाजी बेड़े में भी असंतोष फैल गया जो सेना जनता को दबाने के लिए भेजी गई थी वह अपने काम में सफल न हो सकी। सातवीं बटालियन राय-डी-जेनेरी से १५ नवम्बर १८८९ ई० को चल पड़ी। इधर रिपब्लिकन पार्टी के लोगों ने सेना को नई सरकार के आधीन करने की कोशिश करने लगे। जब सरकार को यह ज्ञात हुआ तब उसने उनकी आज्ञा को गैर कानूनी घोषित करके सातवीं बटालियन के विरुद्ध सेना भेजी।

जब इन सब का प्रबन्ध रहा तब कैबिनेट के सदस्य इसको देखने के लिये इकट्ठा हुये। इन लोगों ने आन्दोलन आरम्भ किया। मार्शल मैनुयेल ड्यूडोरो-डा-फॉसेका सेना का अध्यक्ष था वह सामने आया और जहाज के मन्त्री को कैद करने की आज्ञा दी। परन्तु मन्त्री ने कैद होने से इनकार किया और उसने अपनी पिस्तौल निकाल कर लेफ्टीनेन्ट को मारना चाहा। परन्तु वह शीघ्र ही दूसरी सिपाहियों के द्वारा मार डाला गया। इसके पश्चात् मार्शल-म्यूडोरी कैबिनेट सभा के अन्दर घुसा

और सभी सदस्यों को कैद कर लिया जिन मन्त्रियों ने उसकी आधीनता करने की प्रतिज्ञा की उन्हें उसने छोड़ दिया। यह घटना समस्त साम्राज्य में फैल गई। और जनता में खुशी मनाई जाने लगी जब यह समाचार डामपेड्रो सम्राट को मालूम हुई तब स्वयं राय-डी-जेनेरों में आया। उसने प्रधान मन्त्री को निकाल दिया और उन लोगों की एक सभा की।

इसी पश्चात् रिपब्लिकन दल के लोगों की सभा म्यूनिसिपल पैलेस में हुई। उन्होंने अस्थाई सरकार बनाई और उसका अध्यक्ष मार्शल ड्यूडोरी को बनाया। उसी रात को उन्होंने निरंकुश सरकार के विरुद्ध एक प्रस्ताव पास किया। इस नई सरकार को जनता के जान माल और वैदेशिक आक्रमणों से रक्षा करने के लिए प्रतिज्ञा करनी पड़ी। रिपब्लिक दल के उद्देश्य और उसके प्रोग्राम भी निर्धारित किए गये। उन्होंने सम्राट को एक प्रस्ताव भी भेजा जिसका सारांश यह है "हम लोग यह कहने के लिए बाध्य हैं कि यहां की अस्थाई सरकार आप का ब्राजील राज्य से सम्बन्ध तोड़ने की अनुग्रह करती है और चाहती है कि आप अपने सम्पूर्ण कुटुंब के साथ शीघ्र से शीघ्र ब्राजील की भूमि को छोड़ दे।" इस घोषणा ने डानपेड्रो और राजकुमारी आइसबेला के हृदय पर एक बड़ी चोट पहुँचाई। उनकी इच्छा थी कि वे ब्राजील में रहें चाहे वे उसपर राज्य न करें। परन्तु ऐसा न हुआ। डामपेड्रो ने वहां के आदमियो से अपनी सारी दशा कह सुनाई परन्तु उसने २५० हजार पौंड देकर और २६००० पौंड प्रतिबर्ष खर्च देने की प्रतिज्ञा करके उससे

प्रार्थना की कि वह ब्राजील छोड़ दे विवश होकर बूढ़ा सम्राट अपने कुटुम्ब के साथ यूरोप लौट आया। डामपेड्रो के जाने के पश्चात् रिपब्लिकन मन्त्रिमंडल के निरंकुश शासन के सभी दोषों को समाप्त करने की कोशिश की। जिन लोगों को पदवियां दी गईं थीं वे छीनी नहीं गईं। परन्तु राज्य की ओर से उसका कोई महत्व न रहा। एक नया राष्ट्रीय झंडा तैयार किया गया। जो आज भी प्रयोग किया जाता है। एक संयुक्त राज्य अमरीका की भांति विधान भी तैयार किया गया। उसके अनुसार सभी प्रान्त स्वतन्त्र कर दिये गये। और संघीय मन्त्रि मंडल विस्तृत मताधिकार से चुना जाने लगा। मार्शल डियूडोरी ब्राजील का प्रथम सभापति नियुक्त किया गया। इस सरकार में विशेषता यह है कि इसकीनीति स्थानीय स्वतन्त्रता केऊपर निर्धारित हुई। उसी समय सभी राज्य व्यवस्थापिका सभा को ठीक तरह चलाने के लिए तैयार हुई। परन्तु इसके तैयार होने के पहले ही संघीय शासन में असन्तोष उत्पन्न हुआ। मार्शल ड्यूडोर बहुत से राज्यों के विरुद्ध हो गया और उसे अंत में संघीय पार्लियामेंट से विरोध करना पड़ा। उसने उसीसमय पार्लियामेंट को भङ्ग कर दिया परन्तु थोड़े ही समय के पश्चात् उसे पार्लिया मेंट की आधीनता स्वीकार करनी पड़ी। उसने अपने पद से स्तीफा दे दिया। उसके पश्चात् वहां का उप सभापति जनरल फ्लोरियनों पीकसाते सभापति हुआ।

पीरसाटो के सभापतित्व में मोटोग्रासो ने विद्रोह किया और उसने अपने को स्वतन्त्र रिपब्लिक भी घोषित किया। सभापति ने विद्रोह को दबाया और उसके नेता को निकाल दिया। परन्तु

इतने से ही काम न चला। उसके पश्चात् राय ग्रैंडी डू शोल में विद्रोह आरम्भ हुआ और धीरे धीरे समस्त साम्राज्य विद्रोह से परिपूर्ण हो गया। राय डी-जेनेरो में भी यह गृहयुद्ध छिड़ गया। इसी समय यहां पर समुद्र से बाहरी आक्रमण हुए। एडेमिरल डा-ग्रामों ने राय-डी-जेनेरो में अपनी बन्दूकों की बौछार से बहुत क्षति पहुँचाई। उसने इस बन्दरगाह पर अपना अधिकार भी कर लिया। वह तब तक सरकार के विरुद्ध लड़ता रहा जब तक कि पीकसाटो के स्थान पर डाक्टर प्रुडेन्टे-डी-मुहम्मद सभापति हो गया। यह नया सभापति समस्त राज्य में शान्ति स्थापित करने में सफल हुआ। उसके पश्चात् सन् १८९८ ई० में डाक्टर कैम्पोसैलीज सभापति हुआ। तत्पश्चात् सन् १९०२ ई० में डाक्टर रोड्रीग्वेस-आलवस उस पद का अधिकारी हुआ। और उस के बाद सावपालो सभापति नियुक्त हुआ। आज कल यहां का शासन अध्यक्षात्मक सरकार के आधार पर हो रहा है। यह उत्तरी अमेरिका की ही भाँति विकसित हुआ। इसका शासन आजकल बड़े सुचारु रूप से चल रहा है।

---

(४)

ब्राजील निवासियों की नसल बिल्कुल नवीन है। यह नहीं कहा जा सकता कि इस नसल का प्रारम्भ कब से हुआ। सम्भवत: उसकी उत्पत्ति यूरोप वालों और इन लोगों के सहयोग से हुई जो यहां पर पहले आए। इसके अतिरिक्त उन मजदूर अफ्रीका

निवासी के भी नस्ल इस नवीन उत्पत्ति का कारण प्रतीत होता है। यहां की जलवायु ने भी नई नस्ल उत्पन्न करने में सहायता दी। ब्राजील की अत्यधिक सम्पत्ति ने भी लोगों के ऊपर प्रभाव डाला।

ब्राजील के लोग त्वचा के रंग से भिन्न नहीं हैं। उनका रंग प्रायः वैसा ही हैं जैसा की दूसरे लोगा का होता है। वे अधिकतर शरीर की बनावट और उसके ढांचे से भिन्न हैं। साधारणतया उनका कंधा चौड़ा होता है। उनकी पांच फुट आठ इंच से ६ फुट तक ऊँचाई होती है और उसकी आवाज गंभीर होती है। वे संगीत और कला के प्रेमी होते हैं। उन्हें प्रायः हर प्रकार के खेलों में दिलचस्पी होती हैं। हंसमुख होते हैं। वे हास्य भी कर सकते हैं। उनको बहादुरी की भी मात्रा अधिक से अधिक पाई जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे यूनानियों के सभी गुणों से सम्पन्न हैं। वे शीघ्र ही क्रोधित हो जाते हैं परन्तु शीघ्र ही प्रसन्न हो जाते हैं। उनमें पुस्तकों के तत्वों को कंठाग्र करने की असीम क्षमता होती है। ब्राजील ने बहुत पहले से एक विस्तृत साहित्य तैयार किया है। बड़े बड़े कवियों और लेखकों ने उसके साहित्य को पूर्ण किया है। ब्राजील के विपरीत यूरोप और उत्तरी अमरीका में अधिक सफल हुए हैं। ब्राजील के विश्वविद्यालय ने भी प्रतिवर्ष ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण किया है जिन्होंने विज्ञान कला और साहित्य के क्षेत्र में विश्व के सामने देश की मर्यादा रक्खी हैं। ब्राजील का शिक्षाक्रम किसी देश से पीछे नहीं है। लेकिन फिर भी ब्राजील

निवासी लड़कियों के शिक्षा की लिए बहुत उत्सुक नहीं हैं। जो लड़की की शिक्षा पर निस्संदेह बहुत जोर देते हैं।

एक ब्राजीलियन को सभी जाति उतनी उन्नति की परवाह नहीं करता जितना कि उससे आशा की जाती है। आज भी उनकी दशा शोचनीय है। उन्हें राज्य में बहुत थोड़ी सी सुविधाएं दी गई हैं। उनकी स्वतन्त्रता बहुत सीमित क्षेत्र में है। उन्हें अपनी शादी के विषय में पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता है और न वे समुद्र की यात्रा स्वतन्त्रापूर्वक कर सकती हैं। विवाह करने योग्य लड़कियाँ सिवा अपने अभिभावकों के दूसरी जगह नहीं जा सकती। स्त्रियां पुरुषों से भी नहीं मिल सकतीं। उनसे केवल वही लोग मिल सकते हैं जो उनके अभिन्न सम्बन्धी है।

पहले यहाँ विवाह अभिभावकों के मतानुसार हुआ करता था। लड़की को उसे तर्क वितर्क करने का कोई अधिकार न था। आजकल बहुत कुछ भार उस व्यक्ति के ऊपर है जिसकी शादी हो रही हो। वह अपनी सलाह विवाह के विषय में दे सकता है। परन्तु शादी का काम अधिकतर लड़कियों के अभिभावकों के ऊपर रहता है। वे इस विषय पर विचार करते है कि अमुक लड़के का स्नेह लड़की से बढ़ने दिया जाय या नहीं। जब उन्हें यह विश्वास हो जाता है कि लड़का शादी के योग्य है तब वे उसे लड़की से मिलने की स्वतन्त्रता दे देते है। इसको वे 'चैसमिन्टो' कहते हैं। इसी प्रकार जब प्रेम भाव बढ़ जाता है तब एक वर्ष के अन्दर उनका व्याह कर दिया जाता है। उनके अभिभावक एक दूसरे की अंगूठी बदल लेते हैं। रात्रि में एक

पार्टी की जाती है। उसमें गाना बजाना होता है। दूसरे दिन प्रातःकाल लड़का और लड़की धार्मिक स्थान पर जाते हैं। उस समय 'कैसमेंटो' पूर्ण हो जाता है। यह विवाह का समाचार वहां के अखबार में छपा दिया जाता है। और अब वे लोग स्वतन्त्रता पूर्वक घूम सकते हैं। सामाजिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं और स्वतन्त्रता के साथ भ्रमण कर सकते हैं।

ब्राजील की स्त्रियों का रंग सुंदर होता है। वे देखने में अच्छी होती हैं। उनका शरीर सुडौल होता है और शरीर का बहुत सा भाग अत्यन्त सुंदर होता है। ब्राजील की स्त्रियां अच्छा पोशाक पहनती हैं। उनकी पोशाक का ढङ्ग पारसी ढङ्ग का होता है। परन्तु उस पोशाक में भी उनकी अनोखी छाप होती है। उसमें कुछ राष्ट्रीयता पाई जाती है। वहां की स्त्रियां हैट नहीं लगातीं। उनमें जेवरों का शौक होता है। गरीब से गरीब औरत बिना सोने के जेवर से संतुष्ट नहीं होती। छोटे छोटे बच्चे भी बहुमूल्य गहने पहनते हैं। धनी घर की स्त्रियां सुस्त जीवन व्यतीत करती हैं। उसे बाहर जाने और साधारण काम करने के लिए स्वतन्त्रता नहीं होती। उसे बाहरी खेल खेलने के भी अधिकार नहीं होते। कभी कभी उन्हें धार्मिक स्थानों को देखने के लिए स्वतन्त्रता दी जाती है। तात्पर्य यह कि स्त्रियों का जो स्थान इंगलैंड, उत्तरी अमरीका और फ्रांस में है वह ब्राजील की स्त्रियों को नहीं प्राप्त है।

ब्राजील वाले बड़े अच्छे व्यापारी होते हैं। परन्तु अभी उनमें इमानदारी उतनी मात्रा में नहीं पाई जाती जितना कि

ब्राज़ील-दर्शन

एक अच्छे व्यापारी में पाए जाने चाहिये। व्यापार के क्षेत्र में वह अधिक बुद्धिमानी से काम करते हैं। मिलने पर एक ब्राज़ील बहुत उदारता से मिलता है। वह दयालु होता है और अपने मित्र का विश्वासी होता है। वह देश भक्त भी होता है। संसार में ब्राज़ील उसका सबसे प्रिय देश होता है। मुश्किल से कोई ब्राज़ील निवासी पाया जायगा जो दूसरे देश में रहते हुए भी अपनी राष्ट्रीयता को छोड़ने को तैयार होता है।

ब्राज़ील वाले अपने वस्त्रों के विषय में बहुत सतर्क रहते हैं। वह अपने बूटों को अच्छी तरह से पालिश किए रहता है उसके वस्त्र अच्छे धुले रहते हैं। कहवा उसका सबसे प्रिय पीने का वस्तु है। खाते वक्त वह बहुत थोड़ी सी शराब भी प्रयोग में लाता है। वह सिगरेट और तम्बाकू का बड़ा प्रेमी होता है। ये चीजें वहां पर अधिक मात्रा में पैदा होती है। इस लिये यदि एक ब्राज़ीलनिवासी इसका प्रयोग अधिक मात्रा में करता है तो उसपर कोई आश्चय न होना चाहिये। आजकल लोग वक्तृत्वा की कला को बढ़ाने के लिए अधिक प्रयत्नशील हैं। अतएव यहां पर अच्छे अच्छे वक्ताओं की कमी नहीं है।

ब्राज़ील निवासी पवित्र चीजों को बहुत आदर की दृष्टि से देखते हैं। वे कट्टर धार्मिक होते हैं। जब वे चर्च से गुजरते हैं तो अपना हैट उठा लेते हैं। कब्र के पास भी वे हैट उठा कर उसकी इज्जत करते हैं। वह बात चीत मनोरंजक ढंग से करते है। उनके अन्दर हास्य की भी शक्ति बहुत ऊँचे पैमाने पर पाई जाती है। वह छोटी सी छोटी बातों में शुद्धता ला देते हैं।

(५)

ब्राज़ील के लोग विशेषतया चार भागों में विभाजित किए जा सकते हैं। पहला यहां के आदिम निवासी जिन्हें इंडियन कहते हैं। दूसरा सफेद यूरोपियन है जिन्होंने अपने साथ काले हब्शियों को यहां पर बसाया इन्हीं तीनों के मेल से एक चौथी जाति उत्पन्न हुई। सबसे पहले यहां पुर्तगीज़ आये। उन्होंने अपनी भाषा अपने रीति-रिवाज़ और धर्म को इस दृढ़ता के साथ ब्राज़ील में जमाया कि वह आज भी लोगों के रहन सहन रीति रिवाज और भाषा की प्रयोग की है। पुर्तगाली सदैव एक उत्साही जाति रही है। वे लोग उपनिवेश स्थापित करने में बड़े योग्य होते थे। उन्होंने जिन देशों को खोजा। उन पर अधिकार किया और उसकी अच्छी तरह बसाया। ब्राज़ील इसका जीता जागता नमूना है। वे लोग कुछ दिनों तक ब्राज़ील में राज्य करते रहे। परन्तु थोड़े दिनों के पश्चात् अंग्रेज, उत्तरी अमरीकान, फ्रांसी, डच, स्पेनिश और जर्मन यहां आए। इन्होंने अपने रीति रिवाजों का प्रचार किया।

साओपालो, अमाज़ोनाज़, पारा राय-डी-जेनेरो में जर्मन लोगों के भी उपनिवेश पाये जाते हैं। अंग्रेज लोग अधिक मात्रा में राय-डी-जेनेरो, साओपालो; परनाम्बूको और अमेजोनाज़ में पाये जाते हैं। उसके अतिरिक्त थोड़े बहुत कारोग्रोसी और दूसरी रियासतों में पाए जाते हैं। इसी प्रकार अमेरिकन तुर्क, ग्रीस निवासी, जापानी और चीनी भी अधिक मात्रा में साओ-

पालो और अमेज़ोनाज़ में पाये जाते हैं। कहीं कहीं पर नार्वे, स्वीडन, स्काटलैंड के व्यापारी तट के नगरों में पाये जाते हैं।

काले हब्शी सभी प्रथम ब्राजील में गुलाम बनाकर १५८३ ई० में लाये गये। कहा जाता है कि सबसे पहले पुर्तगालियों ने इन्हें ऐनपेला के उपनिवेश के लिए भर्ती किया और उन्हें ऊपरी गायना में बसाया। परन्तु अगर सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो पता चलता है कि इसका व्यापार बहुत पहले से होता था। अनुमान किया जाता है कि हब्शी लोग बेचुआना, हाटें टाट काफ़िर, बसूटो और मकालगो के लोगों की संताने हैं। क्योंकि यदि इन लोगों के रीति रिवाज भाषा और आचार विचार पर ध्यान दिया जाय तो बहुत कुछ इनके वास्ते इनसे मिलती जुलती है। आजकल काफिरों की संताने बहुत कुछ पायी जायँगी। जो उसी ढङ्ग के वही गाने गाते हैं वही कहानियां कहते हैं वही खाना पसन्द करते हैं जिसको कफरादिया के काफिर प्रयोग करते थे।

जब सन १८८८ ई० में गुलामी की प्रथा का अन्त किया गया तब उन्होंने बड़ी संख्या में नगर स्थापित किए। पहले इन लोगों को जिम्मेदार बनाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पहले उन लोगों के खाना और कपड़ा अपने मालिकों से मिल जाया करता था। अब उन्हें इसकी जिम्मेदारी स्वयं उठानी पड़ी। यह जिम्मेदारी उन्हें सुखदायी प्रतीत हुई।

ऐसी दशा में वे काम करने में बहुत सुस्त थे। और अपने रहन सहन ने में भी वे सुस्ती दिखाते थे। केवल आवश्यकता

पड़ने पर वे काम करने के लिये तैयार होते थे। विवश होकर अंत में उन्हें उद्योग धंधे और कृषि का काम अपने हाथ में लेना पड़ा। जिसको वे पहले गुलाम होकर करते थे। धीरे धीरे वे वहां के स्थाई कृषक हो गये। और उद्योग धंधों से तथा कृषि से अपनी जीविका चलाने लगे। धीरे धीरे उन्हें अपनी स्वतन्त्रता का मूल्य ज्ञात हुआ। उन्होंने समझा कि स्वतन्त्रता का अर्थ है खेतों को अच्छी तरह से जोतना और अधिक से अधिक अन्न उत्पन्न करना। वे लोग अब अपने कृषि को सुधारने में लग गए। धीरे धीरे स्वतन्त्र किये हुये गुलाम तरह तरह के दूसरे धंधों में लग गये। और वे अपनी जीविका सुख पुर्वक कमाने लगे। परन्तु पहले पहल उनको स्थाई होने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उसके लिये उन लोगों का कहना था कि गोरे मनुष्यों ने गुलामों को इस लिए स्वतन्त्र किया कि उनका काम सस्ता हो जाय।"

सबसे पहले पुर्तगाल और इंडियनों में सम्भवतः सम्बन्ध सन् १५०० ई० में स्थापित हुआ। ५० वर्ष पश्चात् इन दोनों जातियों के मिलने से जो संताने पैदा हुई वे बाहिया और परनाम्बूको में अधिक संख्या में पाई जाने लगी। पुर्तगालियों के विजय की पहली शताब्दी में लगभग ५० हजार यूरोपियन ब्राजील में स्थाई रूप से रहने के लिये आए। दूसरी शताब्दी के प्रारंभ में दस हजार मामेलूम्स या पुर्तगाली और इंडियन मिश्रित समस्त देश में फैल गये। इसके पश्चात् गोरे यूरोपियन और काले हब्शी भी यहां पर फैल गए। जिनके मिश्रण से हजारों

मुलाटोज उत्पन्न हुये। थोड़े दिनों बाद मामेलूम्स और मुलाटोज के बीच विवाह भी होने लगे। पुर्तगाली डच फ्रांसीसी स्पेनिश भी मामेलूम्स, मुलाटोज और इण्डियन के यहां से निवासियों से विवाह करने लगे। इसके सहयोग से एक ऐसी जाति बनी जो बहुत ही आश्चर्यजनक है। इस ढङ्ग के लोग शायद ही कहीं दूसरी जगह पाए जाते हों।

परनाम्बूको में बहुत से डच ब्राज़ीलियन हैं जो अपने पूर्वजों की ढङ्गों को बहुत कुछ कायम रक्खे हैं। परानहब में एक दूसरे ढंग के लोग हैं जो फ्रांसीसियों से मिलते जुलते हैं इसी ढंग के लोग मत्ताटोज, सर्जिपके, परमहिबा और रिचाग्टो-सेंटो में पाए जाते हैं। रायो डी-जेनेरो में लगभग सभी प्रकार के लोग पाए जाते हैं। रायग्रैंडे डू-नाट की रियासत में अधिकतर गोरे वर्ण के लोग पाए जाते हैं। कुछ मामेलूम्स भी पाए जाते हैं। राय-ग्रान्डे डू सोस्ना में स्पेनिश अमेलूक्स की संतानें पाई जाती हैं।

इस प्रकार आजकल ब्राजील की जन संख्या प्रायः सभी जातियों के मिश्रण से बनी हुई है। मुख्यतया पुर्तगालियों के वर्ण के लोग यहां पर अधिक पाए जाते हैं। जिनके अमीर सन् १८०३ ई० से यहां पर रहने लगे। इन लोगो ने अपने ही लोगों में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किया और गोरे यूरोपियन के साथ वहां रहने लगे। इस प्रकार इसमें संदेह नहीं कि संघीय शासन का एक बहुत बड़ा भाग सारे यूरोपियन से बसा हुआ है।

(६)

दक्षिणी अमरीका को छोड़ कर संसार के किसी भाग में असभ्य जातियों का ठीक रूप से इतिहास नहीं जाना जा सकता इस प्रदेश की पूर्ति के लिए दक्षिणी अमरीका बहुत ही मनोहर है। ब्राजील इसके लिये बहुत प्रसिद्ध है। इसका इतिहास जानने के लिए जितनी सुविधा यहां पाई जाती है उतनी आस्ट्रेलिया. न्यूजीलैंड. अफ्रीका, एशिया आदि देशों में नहीं पाई जाती। यहां पर हजार मील के क्षेत्र ऐसे पाए जाते हैं जहां पर न जुड़ाई हुई है और न कोई वहां जा सकता है। यहां पर लगभग दस हजार इंडियन ऐसे होंगे जिन्होंने यूरोपियन का कभी मुह भी नहीं देखा। सन् १९१३ ई० में पहले पहल जब लोग अमेज़न की घाटी में पहुँचे और वहां के इण्डियन से मिले तब उनकी आकृति का आदमी उनके यूरोप के साहित्य में कभी भी नहीं मिला था।

इन जातियों के इतिहास जानने का लिये हमें २५०० वर्ष के इतिहास पर एक दृष्टि डालना पड़ेगा। सिसिली का डिपोडास यह प्रमाण पेश करता है कि आमेज़न के निवासी एशिया के निवासियों से मिलते हैं। वह प्रमाणित करता है कि वे पूर्वी एशिया से आये। परन्तु अंग्रेजी अजायबघर की मूर्तियां प्रमाणित करती हैं कि यहां की स्त्रियां यूरोप और उत्तरी अफ्रीका को जातियों से मिलती जुलती हैं। कुछ लोगों का कथन है कि यहां एक अफ्रीकन आमेजन की एक जाति रहा करती थी जो दूसरे देशों की खोज के लिये समुद्र पार गए थे। सिपियान

उनको 'आदमी का मारने वाला" कहते हैं। म०प अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका की खोज से पता चलता है कि वहां पहले गोरी औरतें राज्य करती थीं। वे वहां से आईं और फिर वहां चली गईं। इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। कुछ लोगों का कहना है कि अफ्रीकन आमेजन लोगों को ग्रीस और मिस्र के लोग जानते थे। उन्होंने ब्राजील को ढूँढ़ा और वहां पर उत्तरी किनारे पर रहने लगे। पुर्तगाली इतिहासकार भी इस बात से सहमत है।

सत्रहवीं शताब्दी में पुर्तगाली और स्पेनिश इतिहासकार कहते हैं कि ये लोग वहां पर स्थापित थे और कुछ देश इतना भी प्रमाणित करते हैं कि वे लोग वहां से चले गए और मना-ओस की पहाड़ी को ओर उत्तर में रहने लगे।

यह सब प्रमाण इण्डियन के गानों से मिलता है। जिसको इतिहासकारों ने सत्य प्रमाणित किया है। आमेजन की घाटी की एक जाति का एक गाना है जो यह प्रमाणित करता है कि किसी समय उत्तरी आमेजन के एक जाति रहा करती थी जिसे गाका-रिस कहते हैं। उन्हीं की बस्ती से होकर एक बहुत सफेद और एक काली नदी बहती थी। इन्हीं दो नदियों के बीच में बड़ी बड़ी पहाड़ियाँ थीं जिसमें औरतें रहा करती थीं। उसके पास गाकारिस के सिवा और कोई नहीं पहुँच सकता था। यह औरतें पहाड़ियों के धनों की रक्षा करती थीं जिसको इन्होंने खोजा था एक बार गाकारिस लोगों ने इस देश का भ्रमण किया। वे लोग अपने साथ उनके लड़कों को लाये उन्हों ने उनका धन पाया। बड़े होने पर वे बड़े वीर और योद्धा हुए। अंत में वे लोग दूसरे

देशों को विजय करने के लिए निकले। वे दक्षिणी पश्चिमी भाग में गये। उसे जीता। वहां पर स्थाई होकर रहने लगे। वहां के रीति रिवाज को उन्हों ने ग्रहण कर लिया। अनुमान किया जाता है कि लड़ाकू औरतें धीरे धीरे वहां से चली गईं या मर गईं। उसके पश्चात् उनके देश पर मनाओज और अरोक्विस जाति के लोगों ने वहां पर अधिकार कर लिया।

डाक्टर मर्कियस ने जो इतिहासकार और अन्वेषक थे सन् १८८७ ई० में एक पुस्तक प्रकाशित करवाई। उसमें उन्होंने ब्राजील के इण्डियनों और गाकारिकों का वर्णन किया है।

इसी प्रकार बहुत से लेखकों ने यह प्रमाणित किया है कि पहले गाकारिक जाति के लोग ही यहां रहा करते थे।

इण्डियनों के पहले विशेषतया ब्राजील में दो राज्य थे। एक जाति जिसको ट्यूथिस कहते हैं उत्तर में आई। और धीरे धीरे समस्त देश में फैल गई। दूसरी जाति गाकारिक थी। जो दक्षिण पश्चिम से आई। ये इण्डियन आजकल रायो-डी-जेनेरो के तट पर पहले बहुत पाए जाते। इन ट्यूथिस और गाकारिक जातियाँ बाद में सैकड़ों जातियों में परिणत हो गई। उनके आचार विचार में तथा रहन सहन में वहुत अंतर हो गया। आजकल ये जातियां ट्यथी-गारकिस जातियों की उत्पत्ति हैं या नहीं यह विषय बड़ा विवादग्रस्त हो गया है। इस पर अभी तक लोग कोई निश्चय नहीं कर सके। प्रत्येक लेखक ने भिन्न-भिन्न प्रकार से इसका वर्णन किया है। इस प्रकार उसका वर्णन एक दूसरे से इतना विरुद्ध है कि किसी दो लेखक की खोज एक से नहीं मिलती।

ब्राज़ील-दर्शन

पहले पहल जब यूरोपियन ब्राजील में आये तब उन्होंने हजारों इन्डियन की जातियों को एक दूसरे से धीरे धीरे जीता।

आमेजन की घाटी में लगभग चार जातियों के लोग पाये गये थे। आजकल यहां पर लगभग एक करोड़ इन्डियन हैं। इनमें कुछ सभ्य है और कुछ असभ्य। यह केवल अनुमान ही है! क्योंकि जिन स्थानों की अभी खेती नहीं हुई है या जहां पर अभी तक लोग नहीं जा सके हैं वहां निश्चयपूर्वक कैसे कहा जा सकता है कि कौन सभ्य है कौन असभ्य। पहले की जातियां मनुष्यों का किस प्रकार शिकार किया करते थे। जैसे कि लोग जानवरों का शिकार करते हैं। इनको यूरोपियनों ने बड़े प्रयत्न से हटाया। धीरे धीरे उनकी जनसंख्या भी कम होने लगी। ममेलकस जाति के लोग जो साओपालो में रहा करते थे अपनी उद्दंडता और अपने जंगलीपन के लिये प्रसिद्ध थे। वे मनुष्यों का शिकार करने के नेता थे। वे लोगों का शिकार इतनी उद्दंडता से करते थे कि कोई भी असभ्य जाति उनकी बराबरी नहीं कर सकती। धीरे धीरे जब सभ्य सरकार वहां पर हुई और जब उसने शिक्षा और सभ्यता का प्रचार करना प्रारम्भ किया तथा कमजोर आदमियों की रक्षा का बीड़ा उठाया तब लोग सरकार के अंतर्गत आने लगे। और धीरे धीरे असभ्य जातियों का अन्त होने लगा।

———

(७)

ब्राजील के प्राचीन निवासियों से मिलने में यूरोपियन बहुत कुछ अपना सौभाग्य समझते हैं। जोलोग वहां गये और उनदेशों की खोज करके वहां के निवासियों से मिले उनसे उन्हें संतोष अवश्य होता है। यद्यपि ऐसा करने से उन्हें बड़े बड़े खतरों और बड़े बड़े दुखों का सामना करना पड़ा जो लोग उनसे मिल चुके है। अब उन्हें उनसे मिलने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होता। प्राचीन जातियों से मिलने में सबसे खतरा इस बात का है कि वे सभ्य यूरोपियनों पर संदेह करते हैं और उनका विरोध करते हैं। परन्तु धीरे धीरे वे लोग सभ्यता की श्रेणी में आने लगे हैं।

जो इन्डियन ब्राजील के जङ्गलों में घूमते हुए पाये जाते हैं। वे उग्र स्वभाव के होते हैं। इससे सदेह नहीं कि वे अभी तक सभ्य नहीं हैं। कोई भी अपरिचित मनुष्य यदि उनसे मिलता है तो वह उनसे बड़े आदर से मिलते हैं।

इंडियनों का रहन सहन अन्य जातियों के रहन सहन से भिन्न है। जो इंडियन केवल शिकार पर रहते हैं या इधर उधर घूम कर अपनी जीविका उपार्जन करते हैं वे अपने रहने का स्थान या तो वृक्षों के नीचे बना लेते हैं या जमीन पर झाडियों में। साधारणतया शिकार करने वाली जाति या तो बहुत थोड़ा सा कपड़ा अपने शरीर पर रखती हैं या बिलकुल नहीं।

उनके घर का सामान भी बहुत थोड़ा रहता है जिसको वे

बड़ी आसानी के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जा सकते हैं। जहां पर की जातियां स्थाई रूप से रहती हैं वहां उनकी झोपड़ियां या घर दूसरे ढङ्ग के बने होते हैं। उनके ये मकान चौकोर ढङ्ग के लकड़ी या मिट्टी की दीवारों से बने होते हैं। उनकी छतें छप्पर की बनी होती हैं। बहुत सी जातियां मालोकास में रहती हैं। मालोकास एक हाल की भांति होता है जिसमें बहुत से कुटुम्ब एक साथ रह सकते हैं। इंडियन्स अधिकतर उन ऊँचे और सूखे मैदानोंमें पाये जाते हैं जहां नदी अपनी शीतलता नहीं पहुँचा सकती। यूरोपियनों के आने के पहले कुछ लोग कपास कातते और बुनते थे। वे लोग मिट्टी के बर्तन बहुत अधिकता से बनाते थे। आमेजन की घाटी के मिट्टी के बर्तन बहुत ही दृढ़ता के साथ बनाते थे। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग धंधों में टोकरियाँ लकड़ी की चीजें बर्तन, शिकार करने के अस्त्र, धनुष और तीर, बर्छा, जाल इत्यादि बनाते थे। लड़ने के लिए लोग भाले, धनुष और तीर तथा जिरह बख्तर प्रयोग करते थे।

इंडियनों का भोजन कई ढङ्ग का होता है। जङ्गलों से उन्हें गोश्त, फल. नारियल, तरकारी, अनाज और चिड़ियां मिल जाती थीं और नदियों से उन्हें कई प्रकार की मछलियां प्राप्त होती थीं। इन्हीं चीजों को वे प्रयोग करते थे। खाने के साथ वे केवल पानी ही पीते हैं। त्योहारों में वे लोग भोजन के साथ शराब इत्यादि भी पीते हैं। परन्तु इसकी संख्या बहुत थोड़ी होती है। वे लोग कहवा नाम का एक उन्माद पैदा करने वाला रस प्रयोग में लाते हैं। जो मदिरा से बनाई जाती है। कुल १२ उन्मादक

पदार्थ पाये गये हैं। जिसको वे लोग प्रयोग करते हैं। जब कोई मनुष्य बीमार पड़ जाता है। तब 'पाचे' वहाँ का डाक्टर के तौर पर होता हैं आता है। वह आकर रोगी को देखता है। गंभीरता से अपने सर को हिलाता है। उसे दवा देता है और अपनी फीस लेकर चला जाता है।

जंगल के एक असभ्य इंडियन का गृहजीवन एक सभ्य गृहजीवन से बहुत भिन्न नहीं होता। जहां पर इसके कुटुम्ब झोपड़ियों में रहते हैं वे अपने साथियों को चटाई लेकर स्वागत करते हैं। वे रुचि में कभी कभी गाने गाकर, नाच कराकर व्यतीत करते हैं। कभी कभी वे उन्माद पैदा करने वाली वस्तुओं को पीते हैं। और कभी कभी बात चीत करते करते रात्रि व्यतीत कर देते हैं। गाने के सामान अधिकतर बांसुरी, सितार और ढोलक होती है। इनके गाने प्रायः धार्मिक विचार के होते हैं। वे प्रेम और उत्साह पैदा करने वाले निवासी गाने भी गाते हैं। कुटुम्ब में युद्ध के गाने बहुत कम गाए जाते हैं। जब स्त्रियां या नौकर घर में भोजन बनाते रहते हैं। तब वे नदी में स्नान करने के लिए चले जाते हैं। खाना खाने के पश्चात् वे अपने अपने काम में लग जाते हैं। कोई शिकार करने चला जाता है या अपने दूसरे काम में जाता है। युवतियां खेतों में चली जाती हैं और बूढ़ी औरतें बच्चों की देख भाल करने के लिए घर में रहती हैं। दोपहर के समय लगभग सभी स्त्रियां घर लौट आती हैं। वे घर के बारे में बात चीत करने तथा रात्रि के भोजन के प्रबन्ध में लग जाती है।

ब्राज़ील-दर्शन

इंडियन प्रायः ईमानदार हुआ करते हैं। उनमें दया, सहिष्णुता का भाव विद्यमान रहता है। वे ईश्वर पर विश्वास करते हैं। असभ्य जातियां शायद ही कभी चोरी करती हों। प्रत्येक एक दूसरे के सामान और घर की रक्षा करता है। उन का अध्यक्ष प्रायः बहुत सी स्त्रियां रखता है। उन्हें वह अलग अलग पहाड़ियों में नियुक्त कर देता है।

साधारणतः गिरोह में एक व्यक्ति एक ही स्त्री रखता है। वह स्त्रियां बहुत छोटी उमर में विवाहित हो जाती हैं और वे युवती होते ही भावी पति के यहां भेज दी जाती हैं। यदि विवाह होने की आयु तक कोई लड़की विवाहित नहीं हो जाती तब तक उसके बाल छोटे कर दिये जाते हैं। उसकी पीठ पर कुछ काले चिह्न लगा दिए जाते हैं जो इस बात को प्रमाणित करते हैं कि वह किसी पुरुष से व्याह करने को तैयार है। कुछ जाति की स्त्रियां अपने मुख को रंगों से रंग लेती हैं। यह रंग उन्हें पौधों से मिलता है। वे कान में बाली पहनती हैं। यह रीति सभ्य जातियों में भी पाई जाती है।

माँ अपने बच्चों को जो चलने के योग्य होते हैं पीठ पर लेकर चलती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्त्रियाँ एक गाड़ी भी रखती हैं जो या तो कपास की बनी होती हैं या दादवे के रेशों से झोपड़ों के लड़के अधिकतर शर्मीले होते हैं। किसी अन्जान मनुष्य के सामने वे नहीं निकलते परन्तु वे साधारण अवसर पर उतने ही गैर जिम्मेदार होते हैं जितना किसी सभ्य जाति के लड़के। लड़कों के खेलने के सामान और उनके खिलौने दूसरे देशों के लड़कों के खिलौनों से मिलते जुलते हैं। लड़कियां

गुड़ियां खेलती हैं। और लड़के जानवरों के खिलौने से मन बहलाया करते हैं। लड़के बड़ों के साथ नाच भी सीखते हैं। इण्डियनों के नाच में बहुत थोड़ी मनोहरता रहती है।

लड़कों का नाम एक सभा में निर्धारित किया जाता है। सभा बच्चे के पैदा होने के बाद ही की जाती है। उसके सम्बन्धी उसका नाम रक्खा करते हैं। यदि बच्चा लड़का होता है तो वह दूसरा नाम भी रख सकता है। जब वह बड़ा हो जाता है तब वह प्रत्येक समय अपने शत्रुओं को मारता है। उसके बहुत से नाम यह प्रमाणित करते हैं कि वह बहुत से शत्रुओं का शिकार कर चुका है। एक स्त्री उन सभी पदवियों को प्रयोग कर सकती है जो उसके पति को प्राप्त है। परन्तु उसका लड़का उन पदवियों को प्रयोग में नहीं ला सकता।

सभ्य इण्डियन यूरोपियनों के सभी रीति रिवाज को ग्रहण कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त सभ्यता की और भी चीजों को उन्होंने ग्रहण कर लिया है। वे अपने घरों को आजकल यूरोप के ढङ्ग से बनाते और सजाते हैं। यहां के लोग काफी परिश्रमी और उद्योगी हैं। वे अपने कुटुम्ब की रक्षा करते हैं। और उसे धन धान्य से पूर्ण रखते हैं। उनके घरों में गाने बजाने के भी सामान पाए जाते हैं। आमोद प्रायः हर घर में पाया जाता है

(८)

जब १५ नवम्बर सन् १८८९ ई० में ब्राजील प्रजातन्त्र राज्य घोषित किया गया तब उनकी सरकार अमरीका के संघीय

शासन के आधार पर बनी। रायो-डी-जेनेरो संघीय सरकार का केन्द्र माना गया। उस वैधानिक शासन का कार्य एक कौंसिल के द्वारा चलाया जाना निश्चित हुआ। संघ की प्रत्येक रियासत स्वतन्त्र घोषित की गयी। उन्हें अपनी अतिरिक्त मामलों में पूरी स्वतन्त्रता प्रदान की गई। ये रियासतें अपने यहां उन सभी कानूनों को बना सकती थीं जो संघ के आधीन न थे। संघ के आधीन सेना और जहाजी बेड़ा, आने वाले सामानों पर चुङ्गी नियत करना, डाक घर और तार घर, बैंक स्थापित करने के अधिकार कर लगाने का अधिकार बन्दरगाहों और तट के जहाजी नौकरियों पर अधिकार, हाईकोर्टस, सिक्के टकसाल, नाप और तौल, संधि और वैदेशिक देशों में वार्तालाप नदियों पर जहाज चलाने का एक रियासत से दूसरी रियासत पर अधिकार तथा और भी राष्ट्रीय अधिकार हैं। संघीय सरकार को यह भी अधिकार है कि वह विदेशी आक्रमण को रोके। वह एक रियासत से दूसरे रियासत के आक्रमण को रोक सकती है और संघीय सरकार को रियासत के लिए उनको बाध्य कर सकती है। वहां शांति स्थापित कर सकती थी परन्तु उसे रियासत की आधीनता पर ही ऐसा करना पड़ता है। वह कानून और संघीय सरकार के फैसले को प्रत्येक राज्य में लागू करने के लिए प्रयत्न कर सकती है। प्रत्येक रियासत का यह कर्तव्य है कि वह अपने खर्च से सरकार की जरूरत को पूरी करे और सफल राज्य प्रबन्ध के लिए उचित सहायता दे। परन्तु संघ का भी यह कर्तव्य है कि वह रियासत को उसकी आर्थिक समस्याओं को सुलझावे और जनता के दुखों को दूर

करने की यथाशक्ति चेष्टा करे। प्रत्येक रियासत अपने यहां टेलीग्राम का प्रबन्ध कर सकती है। परन्तु संघीय सरकार को अधिकार है कि वह किसी भी समय सम्पूर्ण जनता की भलाई के लिये उसे रोक दे। रियासत संघ की सम्पत्ति पर न टैक्स लगा सकती है और न दूसरे किसी प्रकार का कर वसूल कर सकती है। संघीय व्यवस्था के अनुसार ही रियासत अपने ऊपर रोकने और नावों का प्रबन्ध कर सकती है। इन सब प्रतिनिधियों के अतिरिक्त रियासतों की बहुत स्वतंत्रता है। सम्पूर्ण देश बीस रियासतों में बँटा हुआ है। इसमें दो संघीय राज्य हैं। जंगल और खदान तथा बिना जोती हुई जमीन उस रियासतों के अंतर्गत हैं जिनके अन्दर वे पाई जाती हैं।

संघीय शासन सीनेट और हाउस आफ डेपुटीज के सहारे चलाया जाता है मनुष्यों के मताधिकार से इनके सभापति चुने जाते हैं। इसको कांग्रेस कहते हैं। प्रबन्ध कारणी सभा का अध्यक्ष प्रेसीडेन्ट ही चुनता है। ये मन्त्री कांग्रेस में नहीं बैठ सकते। वे वहां पर सवालों का जवाब भी नहीं दे सकते। वे जो सलाह प्रेसीडेन्ट को देते हैं उसके लिए वे उत्तरदायी नहीं हैं। प्रेसीडेन्ट चाहे तो मंत्रियों की सलाह को न भी माने। मंत्रियों का कर्त्तव्य है कि वे शासन के प्रत्येक विभाग का सभापतित्व करें। उन्हें अपने अपने विभाग का काम प्रतिवर्ष लिख कर देना पड़ता है। ये विभाग निम्नलिखित हैं :—

१. वैदेशिक विभाग। २. न्याय और गृह विभाग। ३. अर्थकोष विभाग। ४. आयात-निर्यात। ५. सार्व-

जनिक अर्थ विभाग। ६. कृषि विभाग। ७. उद्योग धन्धे और व्यापार विभाग तथा ८. युद्ध और सामुद्रिक कार्य विभाग आदि हैं।

प्रेसीडेन्ट को अपने चुनाव के समय ३५ वर्ष का होना आवश्यक है उसे ब्राजील का निवासी भी होना चाहिए। प्रेसीडेन्ट चार वर्ष के लिए चुना जाता है। वह देश के बाहर जब तक कि वह प्रेसीडेन्ट है बिना कांग्रेस की आज्ञा के नहीं जा सकता। उपसभापति प्रसीडेन्ट की ही भांति चुना जाता है। वह उसी समय चुना जाता है जब प्रेसीडेन्ट चुना जाता है। दोनों का संबन्धन होना चाहिये और न उसका विवाह संबन्धी कोई सम्बन्ध होना चाहिए। उसका कर्तव्य है कि प्रेसीडेन्ट के अन्दर उसके कथन पर कार्य करे। उप सभापति ही सीनेट का सभापतित्व करता है किसी दोष पर कांग्रेस सभापति और उपसभापति दोनों को निकाल सकती है और उसके ऊपर मुकदमा चला सकती है। सीनेट के सभासद को ३५ वर्ष से अधिक आयु का होना चाहिए। उसके अतिरिक्त उन्हें छः वर्ष से अधिक तक का कम से कम ब्राजील का नागरिक होना चाहिए। प्रत्येक रियासत से सीनेट के सभासद चुने जाते हैं। उन्हें नौ वर्ष तक रहना पड़ता है। कोई भी ब्राजीलियन नागरिक चार वर्ष स्थाई रूप से रहकर हाउस आफ डेपुटीज का सभासद चुना जा सकता है।

प्रत्येक ७०००० निवासियों के बीच एक सभासद चुना जा सकता है। प्रत्येक रियासत से चार सभासद से कम भी नही चुना जा सकते। आजकल इसमें २१२ सभासद हैं। परन्तु शीघ्र

ही उनकी संख्या बढ़ाई जाने की संभावना है। इनका चुनाव तीन साल बाद होता हैं। सभी सनेट और डिपुटीज के सभासद वेतन और भत्ता पाते हैं। संघीय सरकार की आज्ञा के विरुद्ध यह किसी बैंक का काम में भाग नहीं ले सकते। इनके वोटरों के अन्दर भी मुख्यतया कुछ विशेषताएँ आवश्यकीय हैं। उनको कम से कम इक्कीस वर्ष होना चाहिये। मतदाता कोई भी होना चाहिए। भिखमंगे को मत देने का अधिकार नहीं है। मतदाता को अपढ़ सिपाही, भिक्षु तथा कोई धार्मिक संघ का सदस्य न होना चाहिए।

रियासतें संघीय सरकार के आधार पर बनाई गई हैं। परन्तु सभी रियासतें सीनेट नहीं रखती। फेडरल सुप्रीमकोर्ट में १५ न्यायाधीश होते हैं। उनका प्रेसीडेन्ट जीवन भर के लिये चुनता है। सीनेट ही उसमें आवश्यकता पड़ने पर सुधार कर सकता है। रियासतों में भी अदालतें बनी हुई हैं। इनमें उन सभी बातों का निर्माण होता है जो संघ के हस्तांतरित अधिकार नहीं है। जब कभी विधान सम्बन्धी कोई प्रश्न उपस्थित हो जाता है तब रियासत की अदालत में संघ की बड़ी अदालत में अपील की जाती है।

यहां की दलबन्दी कुछ विभिन्न प्रकार की है। इस राजनैतिक दलबन्दी को अमेरिका या अँग्रेजी पार्लियामेंट की दलबन्दी से समानता नहीं की जा सकती। रिपब्लिकन अमेरिका के रिपब्लिकनों से मिलते जुलते हैं। परन्तु उनके आदर्श और विचार बिल्कुल भिन्न हैं। फिर भी यहां के सभ्य मनुष्य रैडि-

कल की धारणा नहीं रखते। ब्राजील की दोनों दलबन्दियां राष्ट्रीयता की भावना से ओतप्रोत है। उन्होंने देश की भलाई के लिए अकथनीय प्रयत्न किया है। कभी कभी सैनिक दल और व्यापारिक नेताओं में संघर्ष हो गया। ऐसे समय में रिपब्लिकन दल वालों ने सैनिक दल के नेताओं का पक्ष लिया। उन्हें व्यापारिक दल से अधिक विश्वासनीय संदेश नहीं प्राप्त हुये। अब जब कि यह बड़ा दल सभी लोगों और सभी वर्गों का स्वागत करता है उसके नेताओं को चुनता है। ऐसी दशा में निस्सन्देह वह सभी के विश्वास का पात्र बनाता है।

---

(६)

जब ब्राजील के सारे प्रान्तों को १८८९ के रिपब्लिक के पश्चात् स्वतन्त्रता मिल गई तब वे एक स्वतन्त्र राज्य की भांति अपनी व्यवस्थापिका सभा बनाने लगे उन्होंने एक प्रबन्धकारिणी सभा भी बनाई। जिसको उन्होंने प्रबन्ध के सारे अधिकार दिये। कुछ राज्य अपने राज्यों को दूसरे राज्यों से अच्छे सभापति बनाने में सफल हुये। क्योंकि उन्हें दूसरों की अपेक्षा स्वतन्त्र राज्य का अनुभव पहले करना था। उनको अपने आंतरिक प्रबन्ध करने के लिए पहले से ही कुछ अधिकार दे दिये थे। दो वर्ष के पश्चात् लगभग सभी प्रान्तों के आंतरिक मामले में स्वतन्त्रता प्रदान की गई और आज संघीय सरकार की देख रेख में राज्यों का शासन बड़ी सफलता के साथ

चलाया जा रहा है कभी कभी उत्तरी रियासतों में गड़बड़ी के चिन्ह दिखाई पड़ने लगते हैं। परन्तु सरकार के सुधार से उनका कार्य फिर सफलतापूर्वक चलने लगता है। व्यापार के लिये साओपालो, माइनाज, जेरास, पारा, आमेजोनाज, राय-ग्रैंडो-डू-शोल, परनाम्बूको बाहिया, राय डी जेनेरो, पराना, टियरा, माटो-ग्रासों, स्पेनिटो-सैन्टो, भल्लायोआन पराहिबा, मरुहब, सरजिये, सैंट कैथीरिक, बिओही, राय-ग्रैंडे-शोल और गायाजे अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। इन सब में सबसे प्रसिद्ध साओपालो है जो प्रथम श्रेणी का व्यापारिक राज्य गिना जाता है। और द्वितीय श्रेणी में माइनाज, पारा और अमेजोनाज आते हैं। इनका व्यापार लगभग एक सा है। राय-डी-जेनेरो भी साओपालो के बाद आता है।

साओपालो एक तटीय राज्य है। उसका भाग दक्षिणी सिरे पर स्थित है। इसकी जनसंख्या केवल माइनाज-जेरास से अधिक है। पहले उसमें मामेलूम्स जाति के लोग रहा करते थे। परन्तु आजकल उसमें करोड़ों मनुम्य प्रायः हर जाति के पाये जाते हैं। मुख्यतया इसमें ब्राजीलियन, इटैलियन, पुर्तगाली जापानी, जर्मन, स्पेनिश, अँग्रेज फ्रान्सीसी, आस्ट्रेलियन और यूनानी पाये जाते हैं। गर्मी के महीने में इसकी जलवायु बड़ी आनन्दप्रद रहती है। उस ऋतु में यद्यपि दिन में काफी गर्मी रहती है परन्तु रात सर्द और सुहावनी होती है। सर्दी के दिनों में उत्तरी सिरे पर बर्फ भी पड़ती है। वर्षा प्रायः पूरे वर्ष होती है। यहां कुल वर्षा लगभग ५२" होती है। गर्मी का

मौसम बरसात का मौसम होता है। और जाड़े में वर्षा बहुत कम होती है। दिसम्बर और जनवरी में सबसे अधिक गर्मी पड़ती है।

साओपालो में दुनियां का लगभग आधा कहवा पैदा होता है। इसके अतिरिक्त यहां पर गन्ना, कपास, चावल, मक्का, तम्बाकू, अंगूर, नारङ्गी और आलू अधिक मात्रा में पैदा होता है। ब्राजील में यहां के निवासी लगभग सभी राज्यों से अधिक व्यवसायी और उत्साही हैं। विशेषतया ये लोग भी दूसरे राज्यों के व्यापार को बढ़ाने के उत्तरदायी है। इन लोगों ने ही सोने हीरे और अन्य बहुमूल्य चीजों की खदानों का पता लगया। उन्होंने ही असाधारण उपजाऊ जमीन का पता लगा कर कृषि की और अन्य लोगों को कृषि करने के लिए प्रोत्साहित किया। यहां के लोगों ने राजनीति में भी अकथनीय उन्नति की। उन्होंने न केवल अपनी रियासत को प्राचीनता से बाहर निकाला और उसे शक्ति और सम्पन्नता प्रदान की, बल्कि उसे उस पद पर पहुँचा जिसके लिए समस्त ब्राजील को गर्व है और जिसके कारण उसकी स्थिति समस्त संसार में दृढ़ हो गई है। निस्सन्देह साओपालो और माइनाज-गेरायस ब्राजील के अत्यन्त मुख्य रियासतें हैं। उनकी सरकारों ने हर प्रकार से लोगों को अपने राज्य में सुविधा प्रदान की जिसके कारण राज्य की उन्नति में उनसे बड़ा सहयोग मिला। साओपालो ने उद्योग धंधों को इस प्रकार से बढ़ाया कि आज राज्य मिलों, फैक्टरियों तथा अन्य कारखानों से भर गया है। यहां की राजधानी शिक्षा का केन्द्र है। अवेनिडा-पालिस्टा एक अतीत मनोहर नगर

है। यह इसकी राजधानी है। यह कुछ पहाड़ी है। उसमें अच्छी अच्छी वाटिकाएँ और पार्क बने हुए हैं जो नगर की सुंदरता को और भी बढ़ा देते हैं। उसमें एमीरैंगों, ममोरियल बिल्डिग बनी हुई है। यह इमारत उस समय बनाई गई थी जब ब्राजील की स्वतंत्रता घोषित की गई थी। यहीं पर दुकानों का प्रबन्ध बहुत असुविधाजनक है। गलियां सकरी होने के कारण व्यापारियों की दुकान के लिए संतोषजनक स्थान नहीं मिलता फुटकर व्यापारियों का ढंग यूरोप के ढङ्ग का है। उनका सजाव तथा सामान रखने का ढङ्ग आदि यूरोप का सा ही है। यहाँ के होटल ब्राजील के अन्य नगरों के पिछड़े हुये हैं। यहां पर सामाजिक क्लब खेलकूद, तथा व्यायामशाला का प्रबन्ध संतोषजनक है।

साओपाली नगर खेल-कूद का केन्द्र है यहां पर घोड़े की सवारी, फुटवाल, क्रिकेट, टेनिस, नाव यात्रा, मोटर यात्रा आदि चीजों की धूम मची रहती है। यहां के लोग पुरानी बातों की खोज में बड़े उत्साह से लगे हुए हैं। कहा जाता है कि सबसे पहले उड़ने की मशीन का उन्होंने ही अन्वेषण किया आजकल के लोग इस बात के लिये प्रयत्नशील हैं कि मनुष्य अपने प्रयत्न से हवा में उड़ सके। यहां के लोग अपने राज्य तथा देश की उन्नति के लिए सदा तैयार रहते हैं। वे अत्यन्त देशभक्त होते हैं।

ब्राजील में माइनज गेरम्पस पांचवीं सब से बड़ी रियासत है। जनसंख्या में इसका पहला नम्बर है। यहां की जनसंख्या साढ़े चार करोड़ है। ये लोग समस्त राज्य में फैले हुए हैं। इसकी राजधानी बेलोहारी जैन्टे है जिसकी जनसंख्या केवल

३००००० है। परन्तु इसके साथ और बहुत से नगर हैं। जिनकी आबादी इससे भी अधिक है। माइनासगेएस में कोई बन्दरगाह नहीं है यद्यपि इसका दक्षिणी पूर्वी भाग समुद्र से मिला हुआ है। यहां पर रेलवे का अच्छा प्रबन्ध है। साओपालो की भांति यह राज्य रेलवे की सुविधा के लिए प्रसिद्ध है। इसके सभी मुख्य नगर रेलवे से मिले हुए हैं। यहां पर खदान और बहुमूल्य पदर्थ पहले बहुत पाए गए थे जिसके लिए यह ब्राजील में पहले से ही बहुत प्रसिद्ध हो गया था। यहां पर खदानों से केवल धान निकाला जाता है। इसका अभी तक निश्चित रूप से अंदाज नहीं लगाया गया। यह रियासत सोना, चांदी, तांबा, टीन, लोहा आदि चीजों से पूर्ण रूप से सम्पन्न है।

आजकल यहां पर कृषि बहुत तेजी से बढ़ रही है। यहां की गेहूँ, कहवा, कपास, चावल और आलू बहुत अधिक मात्रा में बाहर भेजा जाता है। इसके अतिरिक्त यहां पर बहुत से उद्योग धंधे भी किये जाते हैं। यहां हर कल कारखाने भी काफी खुल गये हैं। यहां पर गोश्त, मक्खन, अंडे तथा दूध के जमाने की बड़ी अच्छी मशीनें पाई जाती हैं। उनसे यह सामान तैयार कर के बाहर भेजे जाते हैं।

पारा और आमेजननाज की रियासतें बहुत विस्तार में फैली हुई हैं। प्रायः यह उत्तरी ब्राजील के सम्पूर्ण भाग को घेरे हुए हैं। गेहूँ पश्चिमी अटलांटिक से कोलम्बिया इक्वेडोर, पीरू तथा अमेजन के घाटी के सिरे तक फैले हुए है। रायो-ग्रेंडे-डुशोल की राजधानी, पोर्टो-अलेग्री है। यहां पर रियासत का सम्पूर्ण सामान एकत्रित किया जाता है। इसके अन्दर बहुत से

कारखाने भी खुल गए हैं। जिनके-द्वारा ऊन, कपास, सिल्क, गोश्त तथा कृषि की पैदा की हुई कच्ची चीजें तैयार की जाती हैं। यहां पर सोना, तांबा, तथा दूसरे बहुमूल्य पदार्थ खानों से निकाले जाते हैं। रायोग्रैंडे-डू शोल यद्यपि बहुत विस्तार में फैला हुआ है परन्तु फिर भी वह उतना उन्नति नहीं कर सका जितना कि दूसरे छोटे राज्य कर सके हैं। इस रियासत की अवनति का सबसे विशेष कारण यह है कि इसमें कोई अच्छा बन्दरगाह नहीं है। परन्तु आजकल यह प्रयत्न किया जा रहा है कि उसको अधिक से अधिक जहाजों तथा रेलवे की सुविधा प्रदान की जाय जिससे यह भविष्य में उन्नतिशील बने।

परनाम्बुको और बहिया ब्राजील के उत्तरी-पूर्वी तट पर मुख्य रियासतें हैं। यह रियासतें बहुत पहले से ही प्रसिद्ध हैं। इनमें ही सबसे पहले यूरोपियन आए। ब्राजील के उन्नति का इतिहास यहां से आरंभ होता है। इन्होंने बहुत दुख के अनुभव से अपनी उन्नति का मार्ग ढूँढ़ा इसी कारण से यह रियासतें राजनीतिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में बहुत बढ़ी चढ़ी हैं। परनाम्बुको यद्यपि बाहिया का एक तिहाई है। परन्तु दोनों को जनसंख्या लगभग बराबर है। दोनों रियासतों की राजधानी रियासत के ही नाम पर है। दोनों की राजधानी अपने विस्तृत कारखानों और उद्योग धंधों के लिए प्रसिद्ध हैं। दोनों की उपज अधिकतर गन्ना, कपास और तम्बाकू है। परन्तु बहिया की तम्बाकू और सिगार दुनिया में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। बहिया का हीरा दुनिया में प्रसिद्ध है। परनाम्बुको का गन्ना औ कपास ब्राजील में सबसे अच्छा समझा जाता है।
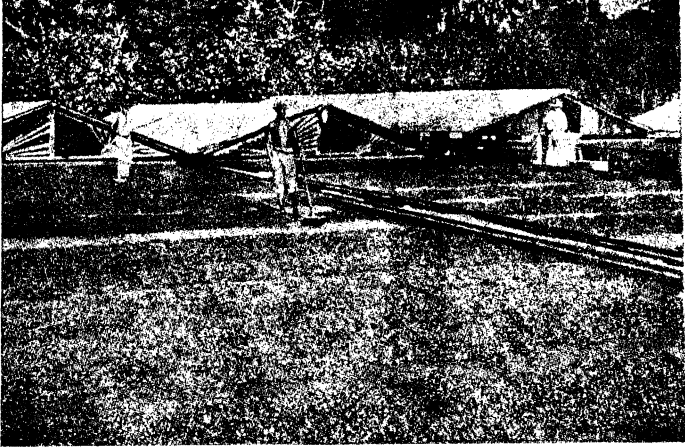
ब्रेज़िल देश में (कहवा सुखाने का ढङ्ग)
पीछे की ओर टीन की छतें रेल की पटरियों पर खड़ी हैं जब पानी बरसता है। तो वे चला कर दानों के ऊपर कर ली जाती हैं।
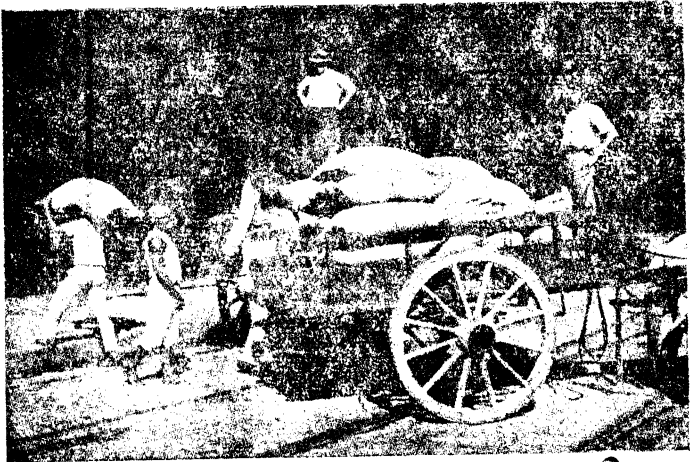
सेंटासमेंसाओपालो के क़हवे के हज़ारों बोरे बाहर भेजने के लिये आते हैं।

साओपालो के बगीचे में कहवा चुनने और तोड़ने का दृश्य।
यह काम मई महीने में आरम्भ होता है।

ब्रेज़िल देश में (कहवा सुखाने का ढङ्ग)
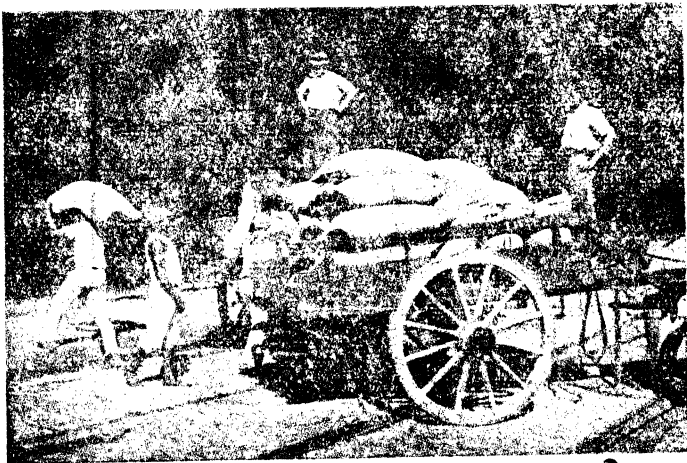
पीछे की ओर टीन की छतें रेल की पटरियों पर खड़ी हैं जब पानी बरसता है। तो वे चला कर दानों के ऊपर कर ली जाती हैं।

सेंटासमेंसाओपालो के क़हवे के हज़ारों बोरे बाहर भेजने के लिये आते हैं।

साओपालो के बगीचे में कहवा चुनने और तोड़ने का दृश्य ।
यह काम मई महीने में आरम्भ होता है ।

ब्राज़ील-दर्शन

अलगोआज और सजिप की रियासतें बहुत छोटी हैं। वे परनाम्बुको और बहिया के बीच सैनफ्रांसिस्को नदी के उत्तरी और दक्षिणी किनारे पर स्थित हैं। सैनफ्रांसिस्को एक प्रसिद्ध जहाजी मार्ग है। इन रियासतों में कोई भी नगर केवल इनकी राजधानी को छोड़कर प्रसिद्ध नहीं है।

निकथेरम्य रायो की खाड़ी के दाहिनी ओर स्थित है। यह रायो-डी-जेनेरो रियासत की राजधानी है। परन्तु यहाँ पर यह न भूल जाना चाहिये कि खाड़ी के दूसरी ओर रायो-डी-जेनेरो का नगर भी है जो संघीय शासन की राजधानी है। रायो-डी-जेनेरो रियासत की सम्पूर्ण जनसंख्या डेढ़ करोड़ है। इसमें ४०००० की जनसंख्या नेकथेएम और तीस हजार पेड्रोपोलीस में पायी जाती है। नेकथेरम रियासत का व्यापारिक केन्द्र है और पेड्रोपोलीस जो समुद्र के धरातल से ३००० फीट कीऊँचाई पर स्थित है रायो-डी-जेनेरो के व्यवस्थापिका सभा के सभासदों का प्राय: निवास स्थान है।

सावोपालो से मिला हुआ पराना है। इसका थोड़ा सा सामुद्रिक तट है। यहां पर चाय और कहवा बहुत मात्रा में पैदा होता है। हरावा माटे नामक एक चाय यहां पर बहुत पैदा होती है। यह चाय करोड़ों मन प्रति वर्ष बाहर भेजी जाती है। पराना रियासत का दो तिहाई भाग पराना नदी से घिरा हुआ है। यह नदी ब्राज़ील के दूसरे नम्बर की नदी है। पराना रियासत एक पहाड़ी भूमि है जो नदियों से आच्छादित है। उसकी जलवायु साधारण है। केवल सर्दी में कभी कभी बर्फ गिरती है। यहां पर सोने, हीरे, तांबे, लोहे और कोयले

की खानें है और उसकी खोदाई भी होती है। इस रियासत में अच्छे अच्छे बन्दरगाह हैं। इसके नगर बहुत तेजी से उन्नति कर रहे हैं।

टिपरा रियासत समुद्र के तट पर स्थित है। इस रियासत की सम्पूर्ण आबादी लगभग एक करोड़ है। इसकी राजधानी फोर्वेलेजा है। जिसमें ७०००० लोग निवास करते हैं। इस रियासत का सबसे मुख्य पेशा जानवरों का चराना है। करोड़ों जानवर के झुंड यहां पाए जाते हैं। सोना तथा अन्य खनिज पदार्थ यहां पाये जाते हैं किन्तु अभी तक उनकी ठीक खोज नहीं हुई है।

माटोग्रासी और गोयाडी ब्राजील के मध्य में सबसे बड़ी रियासत है। आज भी इसको आसानी से वहीं धर दिया जा सकता है यहां का आयातनिर्यात नदियों के द्वारा होता है। माटोग्रासी में पैरागुई नदी, आमेजन की घाटी तथा मड़ीरा नदी के द्वारा जाया जा सकता है। इस रियासत में जानवर बहुत पाए जाते हैं। इसमें जानवरों के कितने झुण्ड पाए जाते हैं इनको आवाज नहीं लगाया जाता है। यहां पर कृषि तथा हीरे के खदान के ऊपर बहुत ध्यान दिया जाता है। यहां से चाम और गन्ना काफी संख्या में बाहर भेजी जाती है। मोयाज इस रियासत की राजधानी है। जानवर पालना और खनिज पदार्थों को निकालना यहां का मुख्य पेशा है।

स्पिरिटो सैंटो एक छोटी सी रियासत है। यह बहिया के दक्षिणी तट पर स्थित है।। विक्टोरिया दूसरी राजधानी है।

कहवा इसकी मुख्य उपज हैं। यह रेलवे द्वारा रायो-डी-जेनेरो से मिला हुआ है। माइनीज-गोरम्स के उत्तर में परहिबा एक रियासत है। इसका मुख्य उद्यम कपास पैदा करना है।

तट पर रायो-ग्रैंडे डु नार्टे की एक अत्यन्त उन्नतिशील रियासत है। दूसरी राजधानी नैटाल है। रियासत की जलवायु गर्म खुश्क तथा स्वास्थ्यप्रद है। सान-लुईज की खाड़ी में मरनहम की रियासत है। इनकी राजधानी सैनलुई है। यह रियासत अभी हाल ही में बनी है। रियासत में बहुत सी रेलवे और सड़कें हैं। यहां के लोगों का मुख्य उपज कृषि है। लोग अधिकतर कपास और गन्ने की खेती करते हैं। यहां की जलवायु बहुत तर है।

सैंटो कैथारनि प्राय: ब्राज़ील में एक जर्मन रियासत है। यह पराना कौर रायोग्रैंडे-डू-नीज के मध्य स्थित है। इसकी राजधानी फ्लोरियन-नी-पोली है। सम्पूर्ण यूनियन का यह सब से सुन्दर स्थान है। इसकी स्थिति अत्यन्त मनोहर है। इसको "सुन्दरता की वाटिका" कहते हैं। इस रियासत की जनसंख्या अधिकतर जर्मन लोगों की है।

पाइनी की रियासत यूनियन की सबसे अवनतिशील रियासत है। यहां पर अधिकतर पुर्तगाली ही रहते हैं। इसकी राजधानी मेरेज्निा है जो परनहिबा नदी के तट पर स्थित है। कपास यहां की मुख्य उपज है जो बाहर भेजी जाती है। आजकल यह रियासत धीरे धीरे व्यापार और कृषि में उन्नति कर रही है।

———

(१०)

एशिया में १००० वर्ष पहले से कहवा का प्रयोग किया जाना सुना जाता है। आजकल यह निश्चय नहीं किया गया कि कहवा का पेड़ पहले पहल वहाँ से आया। संभवत: यह प्राय: सभी देशों में पाया जाता था। इसके पेड़ बहुत अधिक मात्रा में फारस, हिन्दुस्तान, दक्षिणी अफ्रीका, अरब, मलाया, अबीसिनिया और ईस्ट-इंडीज में पाए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्राजील वालों से कहवे का प्रयोग या तो जावा से आने वाले हालैंड निवासियों से ज्ञात हुआ था सबसे आने वाले फ्रांसीसियों से १६वीं शताब्दी के बदले ब्राजील के कहवे की खेती बहुत नाम मात्र की होती थी।

कहवे का पौदा पन्द्रह से बीस फीट ऊँचा होता है। इस पौदे की मोटाई ६"×२½ होती है। इसके फूल सफेद रंग के फल होते हैं। इसकेफल बहुत छोटे होते हैं। जो पकने पर लाल होते हैं। परन्तु कभी कभी पूर्ण रूप से पीले हो जाते हैं।

जब सन् १९०८ ई० में यह नियम लागू हुआ कि कहवे की खेती बिल्कुल बंद कर दी जाय इस समय सावोपालो में २५०००८० एकड़ कहवे की खेती की जाती थी। सावोपालो कहवे की कृषि के लिए प्रसिद्ध था। इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण देश में कहवे की खेती बहुत अधिक मात्रा में की जाती थी।

कहवे के पौदे अधिकतर पहाड़ी भूमि में उगते हैं। इन पहाड़ी स्थानों की ऊँचाई समुद्र की सतह से १ हजार से दो

रिओ डि जेनेरो का हवाई दृश्य ।

एमेज़न नदी के किनारे पर बसे हुए मनाओस शहर का एक दृश्य ।

हजार फुट होनी चाहिये। इसकी भूमि बहुत तर होनी चाहिए। इसके लिए लाल भूमि बहुत लाभदायक होती है। सावोपालो के लाल भूमि का कहवा संसार में प्रसिद्ध है। सन् १८५० ई० में सावोपालो में कहवा इतनी अधिकता से पैदा किया जाने लगा कि सन् १८६७ ई० में दुनिया के बाजार कहवे से भर गया और उनका बिकना बन्द हो गया। ऐसी स्थिति में इसके व्यापार से देश को बड़ा धक्का पहुँचने वाला था परन्तु वहां की सरकार ने बहुत बुद्धिमानी के साथ राष्ट्र को एक बहुत बड़ी हानि से बचा लिया। बुद्धिमान मनुष्यों ने इस बात पर बिचार करना अब आरम्भ कर दिया है कि कहवे के स्थान पर दूसरी लाभदायक वस्तुओं की कृषि की जाय।

(११)

समुद्र की सतह से सोलह हजार फीट की ऊँचाई पर एक झील है। इसे लौरी-कोचा झील कहते हैं। यह केवल तीन मील लम्बी है। इसके सिरे से कालब के पास प्रशान्त महासागर देखा जा सकता है। इस नीली और ठंडी झील को देख कर शायद ही कोई अनुमान कर सकता है कि यहां से महान् आमेजन नदी निकलेगी। इसी झील से एक सोता अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ निकलता है। वह अपनी शक्ति पिघले हुए बर्फ से एकत्रित करता है और पर्वतीय चट्टानों से लड़ता हुआ आगे बढ़ता है। इसके पश्चात् यह कभी तेजी के साथ ढालू मैदान की ओर जाता है। अंत में यह पहाड़ी स्थान को पार कर जाता है। यह स्थान पहाड़ियों के दूसरे सोते और

झरने इसमें मिल जाते हैं। पहाड़ों को पार करने के पश्चात् यह नदी के रूप में परिवर्तित हो जाता है। इसे लोग मरातम नदी के नाम से पुकारते हैं। यह आगे बढ़ कर प्रशान्त महासागर में गिर जाती है। सैकड़ों मील तक यह उत्तर की ओर बहती है। इसके पश्चात् यह उत्तर-पूर्व की ओर बहती है।

ब्राजील में बहुत सी नदियां हैं परन्तु यहां की सबसे बड़ी नदी आमेज़न है। आमेज़न संसार की सबसे चौड़ी नदी है। यह इतनी चौड़ी और गहरी है कि देखने वाला इसके नदी कहने में आश्चर्य करता है। यह अटलांटिक महासागर में गिरती है। यह ज्यों ज्यों आगे बढ़ती है त्यों त्यों गहरी और चौड़ी होती जाती है। इसकी चौड़ाई १५८ मील है। यह इतनी गहरी है कि प्रति सेकंड ५०००० घन फीट पानी समुद्र में जाता है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पहले दर्शकों ने इसको "समुद्र का स्वच्छ जल" के नाम से पुकारा था।

आमेज़न नदी लगभग २,७२२,००० वर्गमील के बेसिन को सींचती है। यह क्षेत्रफल इसको दो बड़ी नदियोंके उन क्षेत्रफल से जिसको वे सींचती हैं दूना है।

आमेज़न नदी की लम्बाई ४०००० मील है। इसकी गहराई २०० से १७०० फीट तक है। इसकी धारा मन्द है। जो साधारणतया तीन या चार मील प्रति घंटा से अधिक नहीं है। बाढ़ के समय यह नदी अपने धरातल से साठ फीट और ऊँची हो जाती है। यह नदी जून में अत्याधिक ऊँचाई को पहुँच जाती है। दिसम्बर में इसकी ऊँचाई अत्यन्त न्यून हो जाती है। इस नदी में जहाज भी चलाए जा सकते हैं। सामुद्रिक

स्टीमर भी इसमें चल सकते हैं। परन्तु वह उसके दहाने से तीन हजार मील तक जाते हैं। अथवा लिवरपूल से न्यूयार्क तक जहाज जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त छोटे जहाज दहाने से ४० हजार मील की दूरी तक जा सकते हैं। आमेजन में हजारों द्वीप भी पाए जाते हैं। सबसे बड़ा द्वीप मराजो है। यह दहाने पर स्थित है। यह दो सौ मील लम्बा है। इस नदी के पास बहुत घने जंगल हैं। कुछ जंगल तीस तीस मील लम्बे हैं। इन जङ्गलों में अभी तक कोई भी नहीं जा सका।

---

(१२)

ब्राजील जंगलों का प्रदेश है। यहां की गर्म और नम जलवायु समस्त प्रदेश को घने घने जंगलों से आच्छादित कर दिया है। ब्राजील के तिकोने नारियल अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। ये अधिकतर आमेजन की घाटी में पैदा होते हैं। इन्हीं प्लेटुओं और जमीनों पर इनके वृक्ष अकथनीय मात्रा में पाए जाते हैं। इसका नारियल का ठीक नाम केस्तनहा है।

यद्यपि ब्राजील और ब्राजील के नारियल सेअभिन्न सम्बन्ध है। ब्राजील का नाम लेते ही हमें वहां की नारियल का याद आ जाता है। परन्तु यहां नारियल की सैकड़ों किस्में हैं। अच्छे से अच्छे नारियल भी कई तरह के होते हैं। इनको बड़ी आसानी के साथ लोग इंगलैंड में त्योहार और उत्सव के समय पर प्रयोग करते हैं। यही हाल यहाँ के फलों का भी है। यहाँ कई तरह के फल पाए जाते हैं। यहां के जंगल हजारों प्रकार

के फलों से परिपूर्ण हैं। यहाँ की लकड़ियाँ उद्योग धंधों के लिये बहुत ही लाभदायक हैं। इन लकड़ियों की ४०० से भी अधिक किस्में हैं। जो इंगलैंड में प्रयुक्त होती है। यहाँ पर खाने के कई तरह के पौदे उगाए जाते हैं। कहवा, चाय, गन्ना, चावल, मटर, अन्न, अनाज, मीठा, आलू, सेब, अखरोट, मक्का, सरसों, तम्बाकू आदि के पौदे अत्याधिक मात्रा में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहां पर और भी हजारों किस्म के खाने पीने, मसाले आदि के पौदे पाए जाते हैं। कितनी ही पौदे होते हैं जिनका रंग निकाला जाता है। रोशनाई भी इन्हीं पौदों से निकाली जाती है। दवावों का सत्त भी इन्हीं जंगलो की जड़ी बूटियों से निकाला जाता है।

ब्राजील में पन्द्रह सौ से भी अधिक किस्म की चिड़ियां पाई जाती हैं। एक हजार तरह की चिड़ियां आमेजन की घाटी में ही पाई जाती हैं। उरुबू नामक चिड़िया प्रायः हर जगह पाई जाती हैं। यह चिड़ियाँ प्रायः काली ही देखी जाती हैं। परन्तु कभी कभी सफेद रंग की भी देखी जाती है। ब्राजील के तोते बहुत मात्रा में पाए जाते हैं। यहाँ पर और भी चिड़ियाँ हैं जिनका रंग चटकीला और उनकी आहुति चित्ताकर्षक होती है।

---

(१३)

दक्षिणी अमरीका शिकार के मनोरंजन के लिए प्रसिद्ध है। ब्राजील में बहुत थोड़े बड़े जंगली जानवर हैं। परन्तु जो कुछ

भी हैं वे बहुत अनोखे ढंग के पाए जाते हैं। सबसे लम्बा जानवर गोआराबा है उसे कुछ लोग "नदी की गाय" कुछ बैल; मछली कुछ मनाटी कुछ लैमैंटिन और कुछ उगांग कहते हैं। इसकी लम्बाई १४ से २८ फीट तक होती हैं। स्त्री जाति का यह जानवर मनुष्य की शकल का सीना रखती है। उनके आगे के पावों के पंजों में पाँच अंगुलियाँ होती हैं। जैसा कि मानव-जातिमें पाई जाती है। कुछ प्रकृतिवादी तथा वैज्ञानिक इसे शरीर के लगातार विस्तार का अनुमान करते हैं। आजकल वैज्ञानिकों का यह मत है कि मनुष्य पहले पानी का एक जन्तु था अर्थात् सीपी और फिर मेढक था।

गोआरावा आमेजन की घाटी में पाया जाता है। यह बहुत डरावना होता है। इस लिए आसानी से नहीं पकड़ा जा सकता। कहा जाता है कि वह मनुष्य के ऊपर बहुत कम आक्रमण करता है यह आक्रमण उसी समय करता है जब कि वह अपने बचाव के लिए आक्रमण करना आवश्यक समझता है। इसका मांस और चर्बी लोग बहुत पसन्द करते हैं। जंगल का सबसे बड़ा जानवर टापी अमेरिकन है। यह प्रायः सम्पूर्ण देश में पाया जाता है। परन्तु इसका निवास स्थल जंगल ही है। टपिरस छः या सात फीट लम्बे होते हैं और इनकी ऊँचाई तीन फीट होती है। इनकी नाक छोटी सूंड के बराबर लम्बी होती है। उनके अगले पैरों में चार अंगूठे होते हैं। पिछले में तीन अंगूठे होते हैं। यह आसानी के साथ पाला जा सकता है। और इसका मांस खाने में बड़ा अच्छा होता है। यह जड़ें और फल खाता है। यह नदी में खूब तैरता है।

यह चिलाता है तो एक तेज अनोखी खीरी की सी आवाज़ होती है । आमेजन की घाटी के अतिरिक्त दूसरे भागो में टापी पाया जाता है । इस जंगली हिरन भी पाए जाते है । परन्तु इनकी आकृति में कोई विशेषता नहीं होती । हिरन दिन में जंगलों में रहते हैं । परन्तु प्रातः और सायंकाल में खुले स्थानों में खाने के लिए आ जाते है ।

मांस पर जीवित रहने वाले मुख्यतया तीस तरह के जानवर पाए जाते हैं । इसमें से सबसे मुख्य चीता है । सबसे लम्बा चीता आमेजन की घाटी में पाया जाता है । उनकी लम्बाई नौ फीट होती है । यह बहुत मजबूत होता है । इसका माथा चौड़ा होता है । इसके दांत और पंजे बहुत बढ़े हुए होते हैं । यह हर प्रकार के जानवरों का शिकार करता है । यहा चिड़ियाँ को भी खाता है । यह अत्यन्त चलाक होता है । देखने पर मनुष्य और बैलों के ऊपर आक्रमण करता है । ब्राजीलियन इनका शिकार करने के लिए बहुत से कुत्ते रखते है । इन्हीं कुत्तों की लालच से वे आते हैं । ब्राजीलियन समझते हैं कि इसका शिकार मनुष्य को मर्दानगी की पदवी से आभूषित करेगा ।

चीता पानी की ओर भी हो जब वह यह समझता है कि कोई जानवर यहाँ पानी पीने के लिए आता होगा । वह चुपके से किसी झाड़ी में छिप जाता है । वह इस प्रकार अपने शिकार की प्रतीक्षा करता रहता है । जब शिकार पूर्णरूप से कब्जे में आ जाता है तब वह उस पर झपटता है । वह तेजी से अपने पंजों को उसके शरीर में और अपने दांतो

को उसके गले में चुभा कर उसे मार डालता है। जब वह उस पशु का सारा खून चूस लेता है तब मुर्दे को वह उस स्थान से हटाकर ले जाता है। उस मुर्दे को वह किसी एकान्त स्थान में पत्तियों तथा अन्य वस्तुओं से ढंक देता है। भूक के समय आवश्यकतानुसार वह इसे फिर प्रयोग करता है। उसकी गंभीर और डरावनी आवाज जङ्गल के समस्त पशुओं में भय उत्पन्न कर देता है। कुत्ते उसके ऊपर आसानी से आक्रमण करते हैं। परन्तु अनुभव रहित कुत्तो उसके शिकार बन जाते हैं। यह पशु बड़ा चालाक होता है। जब वह समझता है कि कुत्ते का झुंड उसे पीछा कर रहा है तब वह धोखा देकर उनको अलग करना चाहता है। जिससे वह उन्हें आसानी से मार सके। जब ये बिल्कुल थक जाते हैं तब पेड़ों पर चढ़ जाते हैं। ऐसी स्थिति में शिकारियों को उससे बहुत सतर्क रहना चाहिए क्योंकि वह अचानक झपट कर उस पर आक्रमण करता है।

चीता का चमड़ा बहुत बहुमूल्य समझा जाता है। इसी प्रकार के और भी जानवर पाए जाते है। उसमें से कुछ प्राय: काले होते है। कुछ काली चीता के रंग के होते हैं। इनको अमेरिकन शेर कहते हैं।

आमेजन की घाटी में और भी कई प्रकार के विशेष पशु पाए जाते हैं। कैपी वारा एक विशेष जानवर है। यह चार या पांच फीट लम्बा होता है इसके भूरे रंग के बाल होते हैं पशु घास और हरी चीजे खाता है। घाटी में उगी हुई चाजों को यह ज्यादा पसन्द करता है। ब्राजिल के लोग इसके मांस को बहुत पसन्द करते हैं। इसके अतिरिक्त ब्राजोलियन पावा

न्यमक एक जानवर के मांस को बहुत खाते है। यह लगभग दो फीट लम्बा और एक फीट ऊँचा होता है। गह जानवर बहुत साफ सरीफ होता है। यह आसानी से पाया जा सकता है। यह फल और जड़ें खाता है। देखने में यह गायना के सुअरों की भाँति होता है।

कीटिया एक आश्चर्य पैदा करनेवाले जानवर है जो पर्वतीय स्थानों में पाया जाता है। यह सुराखो पेड़ों और चट्टानों के अन्दर रहता है। यह चीता से भी छोटा होता है। परन्तु इसका पिछला भाग लम्बा होता है इसके सामने वाले पैर छोटे होते हैं और पीछे वाले लम्बे होते हैं। उनके आगे वाले पैरों में चार पंजे होते हैं। और पीछे में भी होते है। उसका रंग लाल भूरे रंग का होता है। इसके कान छोटे और गोले होते यह जब कुत्तों के द्वारा शिकार किया जाता है तब यह पास ही पानी में कूद पड़ता है और तैरने लगता है। इसका मांस लोग बड़ी चाव से खाते हैं। इसका चमड़ा बहुत कीमती होता है।

पेकारी एक छोटा सुअर है जो उत्तरी बाजील में पाया जाता है। यह बड़ा चालाक होता है। यह कृषि के लिए बड़ी हानि पहुँचाता है। उसका मांस खाने में बहुत अच्छा होता है। लोग इसका शिकार बहुत करते हैं। यह आदमियों और जानवरों पर बड़ी आसानी से आक्रमण करता है। उस पशु से जिसका खतरे से खाली नहीं है। इन्डियन इसको एक बहुत आश्चर्यजनक संग से मारते हैं। शिकारी उस स्थान के पेड़ पर चढ़ जाता है। जहाँ वह खाने के लिए या रहने के लिए आता है। जब वह देखता है कि उनके झुंड आ रहे है तब वह उस

प्रकार से आवाज निकालता है मानो कुत्ते भूक रहें हो या लड़ रहें हों। ऐसे समय में शिकारी गुस्से में आ जाता है। वह पेड़ के खिलाफ दौड़ता है और उसे गिरा देने की कोशिश करता है। अब इन्डियन अपने स्थान से उस डाल पर जाता है जहाँ से वह उठकर शिकार करने के लिए पहुँच सके। वहाँ जाकर वह उन्हें अपनी लाठी से मार डालता है। उसी प्रकार कभी कभी वह कुछ पूर्ण झुंड को समाप्त कर देता है।

साओपालो नगर के समीप बुतान्तान कार्यालय देखने के योग्य है। यहाँ डाक्टर विटाल ब्राजील में संसार के सबसे प्रसिद्ध डाक्टर हैं। उन्होंने सर्पों के विष के विषय के खोज की है। सर्प के विष के विषय में जो कुछ उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है वह अद्वितीय है। उन्होंने वर्षों से जिन्दा सर्पों को एकत्रित किया था। और उनके विष के विषय में खोज कर रहे थे। उनके पास लगभग दस हजार सर्प थे जो कुछ इंच से लेकर बहुत बड़े बड़े किस्म के थे। बहुत से सर्प घेरों में खेतों और छतों के अन्दर देख गए थे। कुछ सड़कों और मकान के अन्दर रखे गये थे। इन स्थानों पर वे रेंग सकते थे। वे उन्हीं के विषों का अनुभव उनके काटने पर कर रहे थे। एक ग्लास ट्यूब में के विषों को तैयार करते थे। यह उन स्थानों में बेचे जाते थे। जहाँ पर सर्प बहुत काटने जाते हैं। भारतवर्ष से इसका बहुत व्यापार होता था। कहा जाता है कि इसके प्रयोग से सर्प के काटने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।

राचीडेलस ब्राजीली एक आश्चर्य जनक सर्प है। यह विषैला नहीं होता किन्तु यह बहुत ही विषैले सर्पों पर

आक्रमण करता है । और उनको खा जाता है। यह लगभग सात फुट लम्बा होता है। इसका रंग चितकबरा होता है। इसके तीन जीभें होती हैं। जभी कोई मनुष्य इसको पकड़ लेता हैं। तो वह उसको काटता नहीं वल्कि उसके शरीर में लिपट जाता है।

जराका जिसे लैकेसिस लौंसिपोलाटस कहते हैं अत्यन्त सुंदर सुनहला पीले रंग की सर्प है। यह अत्यन्त विषला होता है। इसके काटने से शायद ही कोई मनुष्य बच सके। परन्तु इस पर राचीडेल्स ब्राजीली सर्प बड़ी तेजी के साथ आक्रमण करता है और काट कर उसे मार डालता है। उसके पश्चात् वह उस सर्प को निगल जाता है। इस तरह इस सर्पको लोग बुतान्तान में बहुत पालते हैं। उसे अच्छी तरह से खिलाते हैं और उन जिलों में भेजते हैं जहाँ विषेले सर्प अधिक पाये जाते हैं। यह सर्प वहीं के विषैले सर्पों को समाप्त कर देता है।

लैकेसिस-मुटूज एक अत्यन्त सुंदर सर्प है। उसपर तेज नारंगी का रंग चढ़ा होता है। यह विषैले और घातक सर्पों में सबसे बड़ा होता है। यह दक्षिणी अमरीका में कई स्थानों में पाया जाता है। यह सात फुट लम्बा होता हैं। उसका वजन दस पौंड का होता है। फिर भी युद्ध में यह राखी डेलस ब्राजीली का सामना नहीं कर सकता है। सबसे छोटा परन्तु अत्यन्त सुन्दर विषैला सर्प लैकेसिस आल्टेन्टस है। यह अधिकतर मैदानों में पाया जाता है। इसी प्रकार के बीस और पाइथन सर्प पाए जाते हैं। अयाम्फिल वायना सर्प की बीस

किस्में होती हैं। साधारण तथा जो हर जगह पाया जाता है वह फुलो जी लोसा है। यह बीस इंच लम्बा होता है काला और सफेद रंग होता है। देखने पर इसके दो सिर प्रतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त सर्प की अनगिनत किस्में हैं। परन्तु बहुत कम ब्राजीलियन विज्ञान की खोजो के पहले इसके काटने से मरते थे। जिसका कारण यह है कि इण्डियन बहुत कुछ उनके काटने का उपचार जानते थे। यह उपचार उस समय लोगों में प्रचलित थे।

---

(१४)

१९१३ ई० में ब्राजील से ६,१००,०००० पौंड का सामान बाहर भेजा जाता था और बाहर से ४,१०००,००० पौंड का सामान आता था। उस समय स्वतन्त्र व्यापार की वार्ता यहां चल रही थी। वे लोग चाहते थे कि २,००,००,००० पौंड की कृषि की उपज हो उन लोगों का विचार था कि यदि देश के पैदावार की कीमत बढ़ती है तो वह थोड़े ही दिनों में अधिक धनी हो जाते हैं। परन्तु यदि वे दूसरे देशों की बनी हुई चीजें खरीदते हैं तो उसका व्यापार बहुत घट जाता है। और उन्हें एक मूल्य वाली चीजों पर अधिक मूल्य देना पड़ता है। ब्राजील से मुख्यतया कहवा, रबर, खाल, माटे अर्थात् ब्राजीलियन चाय तम्बाकू, कपास चीनी बाहर भेजी जाती है।

ये सब चीजें कुल व्यापार का ९५ प्रतिशत बाहर भेजी जाती हैं। ५ प्रतिशत जो दूसरी चीजें बाहर भेजी जाती हैं। वे सोने,

हीरे. ऊन केला, दवाइयां लकड़ियां आदि भेजी जाती हैं। ब्राजील का सबसे बड़ा ग्राहक उत्तरी अमरीका है। वह देश का ३९ प्रतिशत चीजे खरीदता है। दूसरे नम्बर का ग्राहक जर्मनी था। जो कुल १४ प्रतिशत सामान खरीदता था। फ्रांस दस प्रतिशत माल खरीदता है। इसके अतिरिक्त ग्रट ब्रिटेन से कुल तीस प्रतिशत सामान ब्राजील में आता है। जर्मनी से १५ प्रतिशत अमरीका से १२, फ्रांस से ९ प्रतिशत सामान मंगाया जाता है। यद्यपि आजकल अब इन संख्याओं में कुछ परिवर्तन हो गया है। परन्तु ब्रिटेन से अब सामान मंगाने की संख्या कम होती जा रही है। कुछ वर्ष पहले ब्रिटेन से ५० प्रतिशत सामान आता था

ब्राजील ब्रिटेन से कोयला, कपड़ा, लोहा की बनी हुई चीजें मशीन, ऊनी कपड़े, जूट, साबुन, बिस्कुट, रबर से बने हुए सामान और कागज खरीदता है। अमरीका से तेल, लकड़ी के सामान कपड़े मशीन, चमड़े, कोयला, लोहे का सामान आदि खरीदता है। फ्रांस और इटली से मोटरकार, शराब, पनीर, सुगन्धित इत्र, कागज, आलू, बीज, मक्खन, हैट, पाइप और हथियार आदि सामान आते हैं। ब्राजील से कहवा और रबर सम्पूर्ण निर्यात का तीन चौथाई बाहर भेजा जाता है। ब्रिटेन ब्राजील से दो तिहाई रबर १५ प्रतिशत कपास ८१ प्रतिशत कहवा लेता है इसके अतिरिक्त ब्राजील से वहां सोना तथा दवाइयाँ भी जाती हैं। अमरीका उससे कहवा, रबर चमड़ा नारियल आदि सामान खरीदता है।

आजकल जर्मनी में कागज सभी किस्म की मोटरें खेती की

मशीनें गोश्त और अन्न, ऊनी कपड़े, जेवर, बीज, रेशम आदि चीजों की अधिक आवश्यकता बढ़ रही है। यहां पर कागज की इतनी मांग हो गई है कि द्वितीय महायुद्ध के पहले ब्राजील में कागज दुनियां में सबसे अधिक मंहगा बिकता था। आजकल यहां के लोग कागज़ बनाने लगे हैं। आमेज़न की घाटी में कुछ ऐसे वृक्ष पाए गए हैं। जिनमे कागज बनाया जा सकता है।

आजकल ब्रीजल में व्यापार की उन्नति के लिए बहुत प्रयत्न किया जा रहा है। वे हर प्रकार से व्यापार की उन्नति के लिए तैयार हो गये हैं। वे लोग इस बात से सहमत हैं कि सभी राज्य के लोग मिलकर सबके काम के लिये सामान तैयार करें और देश की सम्पत्ति को बढ़ाएँ। उन्होंने इस प्रकार एक समुदाय बनाया उसमें अँग्रेज फ्रांसीसी, जर्मन, अमरीकन, पुर्तगाली, स्पेनिश, इटैलियन, ब्राजीलियनों के साथ मिलकर ब्राजील के व्यापार की उन्नति के लिए कटिबद्ध हुए। सम्भवतः उन लोगों में इस बात के लिए कोई श्रद्धा नहीं थी कि कौन इसका नेता हो। वे लोग सभी बड़ी स्वतन्त्रा और बड़े उत्साह से काम कर रहे थे। उसमें जो भी योग्य होता था उसे इस समुदाय का नेता बना दिया जाता था। इनका आफिस अत्यन्त सुसज्जित था। वास्तव में यह समुदाय देश निवासियों को सबसे बड़ी संस्था थी। जो मनुष्य इस समुदाय में सम्बन्धित थे वे लोग नगर के अत्यन्त महान् व्यापारी और धनी थे। उन लोगों के सामने अपना देश नहीं था बल्कि के संसार वे व्यापार पर दृष्टि रखते थे। वे संसार के सभी भागों से बेतार के तार द्वारा

अपना सम्बन्ध रखते थे। वे संसार के समाचार जानने के लिए हमेशा उत्सुक रहा करते थे। उनका सम्बन्ध अधिकतर लंदन, न्यूयार्क, हैम्बर्ग, नेपिल्स से रहता था।

इसी समय ब्राजील के उद्योग धंधों की उन्नति हुई। कपड़ा बुनना लोगों ने सबसे पहले बड़े उत्साह के साथ प्रारंभ किया। आजकल यहां पर लगभग दो सौ कपड़े के मिलें पाई जाती हैं। ये पहले माइनाज जेरास, राय-डी-जेनेरो और तट की रियासतों में पाई जाती हैं। यहां पर ऊनी कपड़े जूट की मिलें भी पाई जाती हैं। राय ग्रैंडे-डू-शोल में १ लाख पौंड ऊनी फैक्टरियों पर खर्च किया जाता है। सावोपालो में जूट की मिलें पाई जाती हैं। समस्त देश में बहुत सी चीनी की फैक्टरियां हैं। इनमें से दो सौ बहुत बड़ी हैं। वे सामुद्रिक तट के नगरों में पाई जाती हैं। परनाम्बूको सम्भवतः चीनी का सबसे बड़ा केन्द्र है। सावोपालो और राय-ग्रैंडे-डू-शोल नगर में आटे की मिलें पाई जाती हैं। लकड़ी चीरने की मिलें प्रायः प्रत्येक नगर में पाई जाती हैं। जूते बनाने की भी बहुत सी फैक्टरियां खुल गई हैं। जिसमें हजारों मनुष्य काम करते हैं। सावोपालो में हैट बनाने की फैक्टरियां खुल गई हैं यहां के हैट यूरोप में भी प्रसिद्ध हो गए हैं। साबुन और मोमबत्ती बनाने की व्यवस्था अभी बहुत उन्नति पर नहीं है।

इसका कारण यह है कि यह उद्योग धंधे इन लोगों के हाथ में नहीं है जो इन्हें उन्नतिशील बना सकें। इनके प्रचार फेक्टरियों के लगभग सम्पूर्ण देश में फैलगई हैं। यहां पर दिया सलाई बनाने की भी फैक्टरियाँ पाई जाती हैं। इसका व्यापार

इतना उन्नति शील हो गया है। कि २ करोड़ पौंड से भी अधिक का सामान बाहर भेजा जाता है। आजकल लोहे, स्वत की बहुत सी फेक्टरियाँ खुल गई हैं। इनकी संख्या तीन सौ और चार सौ के लगभग है। अधिकतर यह सावोपालो और सेदा की राजधानी में पाए जाते हैं।

तम्बाकू की फैक्टरी यहाँ पर बहुत प्रचलित है। उसकी फेक्टरी समस्त देश को आकृष्ट किए हुए है। बाहिया में तम्बाकू फैक्टरी सबसे उन्नतिशील है यहाँ से प्रति वर्ष १० करोड़ पौंड का सामान बाहर भेजा जाता है। बाहिया नगर सिगरेट और सिगार बनाने का केंद्र है। पहले की सिगार और तम्बाकू बनाने की तम्बाकू और सिगार से अच्छी कम होती ब्राजील के सिगार यूरोप से अपना स्थान जमाये जा रहे हैं। यह अंदाज लगाया जाता है कि ७,००,००,००० सिगार प्रति वर्ष केवल बाहिया में बनाई जाती है। जर्मनी में तम्बाकू यहां से तम्बाकू भेजी जाती है। ब्रिटेन में १५०००० पौंड की सिगार प्रति वर्ष भेजी जाती है।

इसके अतिरिक्त देश में बहुत से छोटे छोटे उद्योग धंधे पाए जाते हैं। इन में से लकड़ी के सामान बनाने, गहने बनाने, बर्तन और इत्र बनाने, मक्खन बनाने, गिलास, पनीर शरीब, सीमेंट, इत्र, स्याही आदि चीजों को बनाने के व्यवसाय होते हैं।

इन सब चीजों के बितरण करने का ढंग कुछ कुछ पुराना ही है। कभी ये सामान थोक रूप में और कभी फुटकर के रूप में बेचे जाते हैं। यहां मजदूर अच्छी तरह से फैक्टरियों में

काम करते हैं। हड़तालें बहुत कम होती हैं। अच्छे मजदूर अच्छा सामान तैयार करते हैं। जिसके कारण पहले का व्यापार दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा है।

---

(१५)

ब्राजील एक अत्यन्त धनी देश है। इसमें कई प्रकार की सम्पत्तियाँ पाई जाती हैं। पहले जानवरों और मछलियों की सम्पत्ति दूसरे पेड़ पौध से सम्पत्ति तीसरे भूमि और पहाड़ों की सम्पत्ति चौथे बनस्पति सम्पत्ति पांचवे खनिज पदार्थ सम्पत्ति। पशुओं से बाल, ऊन, तेल और गोरस निकला जाता है। पेड़ों और घाँटों से लकड़ी, रबर, नारियल, देशी मोम चाय, कहवा, कोको तथा पीने की वस्तुएँ अन्य खाद्य सामग्री और लचलचाने वाली चीजे तेल, रंग दवाइयाँ आदि चीजे होती है। पृथ्वी में सोना चाँदी, तांबा, टीन निकेल, लोहा, जस्ता, गन्धक, नमक, संगमरमर, तेल, कोयला, पत्थर हीरा, तथा अन्य बहुमूल्य चीजें पाई जाती हैं।

उन्हीं तीन भागों में इतनी सम्पत्ति होती है कि ब्राजील आजकल अत्यन्त धनी प्रदेश बन गया है। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि इन तीन भागों की सम्पत्ति पूर्ण रूप से परिपूर्ण हो। अभी इसके लिये बहुत कुछ करने को शेष है। अभी यहाँ पर जानवरों का इतना अच्छा प्रबन्ध नहीं किया गया है जितना कि होना चाहिए। यद्यपि कुछ रियासतों में अच्छी नस्ल के जानवरों की उत्पति पर विशेष ध्यान दिया गया है।

परन्तु उन्हे इस कार्य में अभी पूर्ण सफलता नहीं प्राप्त हुई है। ब्राजील प्रदेश दुनियाँ का जबसे बड़ा मांस का बाजार है। इसके कारण ब्राजील को व्यापार में अत्यधिक सफलता मिली है। ब्राजील के दक्षिणी रियासतों में करोड़ों एकड़ भूमि भेड़ों के लिए नियुक्त है। यहाँ पर इन भेड़ों का कार्य बहुत तेजी के साथ होता है। परन्तु इनकी भी नस्ल में बहुत सुधार नहीं हुआ हो। ब्राजील आज कल मांस और भेड़ो के बच्चों की वृद्ध के लिए अनुभव करने में प्रयत्नशील है।

गर्म देश के रहने वाले लोगों का यह विश्वास है कि मांस का भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है वे समझते है कि फल और तरकारियाँ ही यहां पर प्रयोग करना चाहिए। परन्तु कुछ यूरोपियनों का कथन है कि ताजा मांस काम करने के लिए तथा अच्छी तरह से जीवन निर्वाह के लिए उपयुक्त भोजन है। कुछ भी हो यहां के लोग आजकल हर ओर से उन्नति करने में प्रयत्नशील हैं। वे नये नये अनुभव से देश को अधिक धनवान बनाते जाते हैं।

पेड़ों और पौधों के धन तो यहाँ पर अधिकता से पाए ही जाते हैं। कहवा, रबर, नारियल, तम्बाकू, फल आदि चीजें ब्राजील की सबसे मुख्य उपज हैं। परन्तु इसके अतिरिक्त जंगलों में ही इन चीजों और छोटे छोटे पौधों के बीच बहुत सी चीजे पाई जाती हैं। इन्हीं के अन्दर बहुत सी दवाइयाँ तथा गर्म बूटियाँ पाई जाती है। जो लोगों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। इसके अतिरिक्त यहां पर लोग चरागाह में अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बहुत से व्यापारी इन चरागाहों से बहुत कुछ

सम्पत्ति पैदाकर लेते है । यहां की भूमि इतनी उपजाऊ है कि खास कोई भी चीज उपजाई जा सकती है। यूरोप की बहुत सी चीजें यहां पर अधिक मात्रा में उपजाई जाती है। फूल गोभी, आलू इत्यादि चीजे यहां पर बहुत अधिक मात्रा में पैदा की जाती है। परन्तु गोभी फ्रांस से भी मगाई जाती है। आजकल आमेजन की घाटी में अच्छा प्रबन्ध करने से काफी गोभी उपजाई जा सकती है। उसके अतिरिक्त यहां पर खाने की और भी तरकारियां उत्पन्न की जाती हैं। जो लोग गरीब हैं। उन्हें सेब नारंगी तथा अंगूर की लताए बहुत लाभ दायक सिद्ध हुई हैं। वे इसमें थोड़ी सी पूंजी लगा कर शीघ्र ही इसे लौटा लेते हैं। ब्राजील के लोग किसी भी वैदेशिक फल को बोने के लिए और उसका अनुभव करने के लिए तयार रहते हैं। न्यू जीलैंड के बहुत से फलों को उन्होने रायन्डी जेनेरो में बोना आरंभ कर दिया और उन्हें उत्पन्न किया। इनका व्यापार भी अब बहुत बढ़ गया है।

दक्षिणी रियासतों में गेहूँ जौ, चावल बहुत मात्रा में उपजाया जा सकता है। परन्तु यहा पर बहुत सी ऐसी जमीन है जिसमें अभी लोगों ने खेती करना आरंभ नहीं किया है। होटलो में बरतने के समान यूरोप की भाँति बहुत प्रचलित हो गए हैं इसके अतिरिक्त लोगों ने अब मक्खियों को भी पालना शुरू कर दिया हैं परन्तु इसके लिए बहुत रूपए खर्च करने की आवश्यकता हैं। यह मक्खियाँ केवल उन्हीं स्थानों पर पाली जा सकती हैं जहाँ की जलवायु अत्यन्य सुन्दर है और जहाँ फूल बहुत मात्रा में पाए जाते हों।

परन्तु सबसे अधिक धन खनिज पदार्थों से प्राप्त किया जाता है। बहुत खनिज पदार्थों ने अकथनीय बहुमूल्य चीजों से देश की सम्पत्ति को बढ़ा दिया है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि खनिज पदार्थ के सभी स्थान लोगों ने ढूढ़ लिए हैं। बहुत सी रियासतों में अभी सोने की कितनी ही खाने हैं जिनका लोग पता नहीं लगा सके हैं।

सोने के अतिरिक्त हीरे की भी खाने बहुत पायी जाती हैं। परन्तु इनका अभी तक ठीक पता नहीं लगा है। कुछ ब्रिटिश कम्पनियों ने माइनाज गेरास में हीरे की खानों का पता लगाया था। इसके अतिरिक्त कुछ खाने बहिया और गेयाने में पाई जाती हैं। ब्राजील के हीरे अफ्रीका के हीरे से कई बातों में बढ़े चढ़े हैं वे चमक रंग और प्रकाश में उससे ज्यादा कहीं बढ़े चढ़े हैं। माइनाज गेरास और माटे ग्रासो के हीरे अत्यन्त बहुमूल होते हैं। इनकी पवित्रता इसी रूप से परिपूर्ण होती है।

संगमरमर तथा मकान बनाने के अन्य पत्थर भी यहां पर बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इन्हीं पत्थरों से यहां के मकान बनाये जाते हैं।

---

(१६)

ब्राजील के नगरों का दृश्य बड़ा मनोहर है। नगर बड़े सुन्दर ढंग से बसाए गये हैं। दिन प्रति दिन उनमें नये नये सुधार भी किये जा रहे हैं। सावोपालो नगर अत्यन्त मनोहर

है। यह पहले बहुत खराब बना हुआ था। परन्तु आजकल म्यूनिस्पैलिटी के प्रबन्ध से करोड़ों पौंड खर्च करके इस नगर को अत्यन्त सुंदर बना दिया गया है। पुराने और भद्दे मकान गिरा कर सुन्दर मकान बना दिए गए हैं। सुन्दर बाटिकाएं झीलें झरने पुल आदि चीजें यहां की सुंदरता को और भी बढ़ा रही है। इसके अतिरिक्त दूसरे नगर भी बहुत सुंदरता से बनाए जा रहे हैं। बड़े बड़े नगरों में बाहरी दीवालों पर पच्चीकारी बड़े सुंदर ढंग से की गई है। यह पच्चीकारी कहीं कहीं पर बाटिकाओं तथा सार्वजनिक मकानों की चहारदीवारियों में भी की गई हैं। ब्राजील के नगर मकान बनाने की कला से सम्पन्न है। संसार में यहां के मकान बनाने की कला किसी अन्य देश की कला से कम नहीं हैं। रायो-डी-जेनेरो का आवेनिडा-राय-वैंको आध मील की लम्बाई में बहुत सुंदर ढंग से बना हुआ है। इस नगर के मनरो-पैलेस, म्यूनीसिपल-थियेटर तथा कुछ समाचार पत्र के भवन बहुत प्रसिद्ध हैं। चर्च, अस्पताल, स्कूल आदि बहुत अच्छे ढंग से बने हुए हैं। बाहिया में ३६५ चर्च पाये जाते हैं।

ब्राजील में मनाओस सबसे सुंदर शहर है। रिओनीग्रो के उत्तरी किनारे पर ऊँचाई पर यह बसा हुआ है। इसमें बहुत सी मनोहर बाटिकाएँ और दर्शनीय स्थान हैं। इसमें बहुत सी मुख्य इमारतें हैं। आमेजानाज-थियेटर, जस्टिस-पैलेस और हास्पिटल बहुत प्रसिद्ध हैं। यहां का विश्वविद्यालय चर्च सार्वजनिक वाचनालय तथा अजायबघर प्रसिद्ध है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक यह सबसे धनी और महान् नगर विश्व में

गिना जाता था। यह न केवल धन में ही संसार से बढ़ कर था वरन् इसका दृश्य और इसकी स्थिति बड़ी मनोहर थी।

सैनलुई एक प्राचीन नगर है। यद्यपि यह बहुत सुन्दर नहीं बना हुआ है परन्तु इसकी वाटिकाएं ऐसी सुंदर बनाई गई हैं जो शहर की सुन्दरता को और अधिक बढ़ा देती है। पारा और बेलेम में अच्छी अच्छी इमारतें पाई जाती हैं। शहरों के अच्छे अच्छे पेड़ों, पौदों, वाटिकाओं तथा पच्चीकारियों से सजाने की प्रथा समस्त ब्राजील में प्रचलित हो गई है। प्रत्येक ग्राम में सार्वजनिक-वाटिकाएं पाई जाती हैं। गांवों में अभी पूर्ण रूप से पानी के वितरण का प्रबन्ध नहीं हो सका है।

स्पिरिटो सैंटो का विक्टोरिया नगर अत्यन्त आश्चर्यपूर्ण ढंग से बसाया गया है। इसके चारों ओर जंगल है। जो नगर की करधनी या पेटी का काम करते हैं। ओरोप्रेटो के स्थान पर खनिज में काम करते हुए बहुत से लोग पाए जाते हैं। इसमें एक अत्यन्त प्रसिद्ध स्टेच्यू टिराडेन्टीज का पाया जाता है। इसकी काट छांट बड़े सुन्दर ढंग से हुई है। झाड़ियों तथा वाटिकाओं के सुन्दर दृश्य इसके चारों ओर दिखाई पड़ते हैं।

गरीबों के मकान यहां पर इतने सुन्दर ढंग से नहीं बने हुए है जितने लंदन और न्यूयार्क के गरीबों के मकान पाए जाते हैं। यहां के गरीब लोगों की जरूरत बहुत थोड़ी होती हैं। वे थोड़े में ही संतोष कर लेते हैं। वे नशीली तथा मादक-वस्तुओं का अधिक प्रयोग नहीं करते। वे लाटरी आदि चीजों में रुपया नहीं फेंकते। वे कुछ त्योहार उत्साह के साथ मनाते हैं। परन्तु उसमें भी अधिक रुपया नहीं खर्च करते। उनके पास सिनेमा

इत्यादि जाने के लिए रुपया बहुत थोड़ा होता है। इस लिए वे स्वयं मनोरंजन का सामान रखते हैं। वे अपने फुर्सत के समय को संगीत तथा मनोरंजक वार्तालाप में व्यतीत करते हैं। उनका भोजन साधारण होता है। वे अपने खाने को शीघ्रता से परिवर्तित भी नहीं करते। वे मोटा और सस्ता अनाज खाते हैं। परन्तु वे अनाज बहुत वीर्यवर्धक होते हैं। गरीब ब्राजीलियन बुद्धिमानी से अपने रुपये को खर्च करते हैं। उनके घर का सामान बहुत साधारण होता है। वे आडम्बर की चीजों में रुपया नहीं फेंकते। उनके घरों में बर्तन तश्तरियाँ, कुर्सी, मेज़ संदूक जिसमें वे अपने अच्छे अच्छे वस्त्र तथा धन को रख सकें तथा कुछ धार्मिक-तस्वीरें पाई जाती हैं। धार्मिक तस्वीरें उनकी दीवालों पर लगी हुई पाई जाती हैं। घरेलू उद्योग-धंधे समस्त देश में अधिकता से पाए जाते हैं। छोटे छोटे घरों में लोग भाला मादक वस्तुएँ पर्दे, चटाइयां, दरियां, हैट, चप्पल, गहने, मिट्टी के बर्तन टीन की बनी हुई चीजें लकड़ी के सामान गाने बजाने के सामान, दवाइयां शराब कपड़े आदि चीजें बनाते हुए पाए जाते हैं। सावोपालो में इटली के गरीब घराने के बहुत से उद्योग धंधे अपनाये गये हैं।

नगरों में कुछ लोग सुस्त भी होते हैं। उन लोगों का काम केवल घूमना होता है। वे लोग अक्सर धनी घर के लड़के होते हैं। वे लोग मोटरों पर घूमते हुए तथा सिनेमा घरों में देखे जाते हैं। ये लोग व्यापारियों के लिए बड़े असंतोषजनक सिद्ध होते हैं। परन्तु वे समाज का बड़ा काम कभी कभी करते हैं।

वे लोग अधिक उदार होते हैं। उदारता इन लोगों की एक विशेषता है।

यहाँ की पुलिस अधिक चालाक नहीं दिखाई पड़ती। केवल सावोपालो में ही अच्छी और उत्साही पुलिस पाई जाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि वे लोग लम्बाई और अच्छी शरीर की गठान देखकर नहीं भर्ती किए जाते। सावोपालो में ब्राज़ील के अन्य नगरों की अपेक्षा अधिक ध्यान दिया जाता है। साधारण-तया पुलिस के दो भाग होते हैं। एक वह जो हथियारों से सुसज्जित होते हैं और दूसरे नागरिक पुलिस होती है। ये सड़कों पर नियुक्त किये जाते हैं। सैनिक-पुलिस अधिक चा-लाक और फुर्तीली होती हैं। वे लोग सड़कों की सवारियों के आने जाने का अच्छा प्रबन्ध रखते हैं। वे लोग अपना कर्तव्य बड़ी सतर्कता तथा स्फूर्ति से करते हैं।

---

(१७)

इसमें संदेह नहीं कि ब्राज़ील चित्रकला के लिए बहुत पहले से प्रसिद्ध है। चित्र कला कब से प्रारंभ हुई इसके विषय में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। अनुमान किया जाता है कि सबसे पहले ब्राज़ील वालों को इसकी प्रेरणा योरुप निवासियों से मिली। जब पहले पहल योरोपियन यहां आए और वे यहां के लोगों से बिल्कुल मिल गए तब उन्होंने अपनी समस्त विशेष-ताओं को उनसे बताना आरम्भ किया। जो लोग चित्र कला में निपुण थे उन्होंने उन लोगों को इस कला का प्रचार करना आरंभ

किया। इस प्रकार लोगों ने ब्राजील में संगीत, चित्रकला, महल बनाने की कला, तथा साहित्य कला इत्यादि का प्रचार करना प्रारंभ किया। यह कला थोड़े दिनों के पश्चात् समस्त लोगों में प्रचलित हो गई। इन कलाओं को सिखाने के लिए उन योरुपियनों में अपनी कला को प्रसारित करने की लगन थी एक स्कूल भी खोला जिसमें इन कलाओं की शिक्षा भी दी जाने लगी। इस प्रकार इसमें कोई संदेह नहीं कि इन लोगों की कला अधिकतर योरुप निवासियों की कला के आधार पर स्थित हुई हैं।

ब्राजील का सबसे पहला चित्रकार रिकरडों पीटर' था वह एक धार्मिक चर्च का अध्यक्ष था उसकी चित्रकारी का नमूना राय डी जेनरों में बेनेडिक्टाइन चर्च में देखा जा सकता है। रिकार्डो डू पीटर एक वैदेशिक था जो १७०० ई० में राय डी जेनेरो में पैदा हुआ था। इसी को ब्राजील का सबसे प्रथम चित्रकार होने का श्रेय है। उसके काम और उसकी चित्रकारी और बहुत से चर्चो में पाई जाती है।

इसके पश्चात् इसका चित्रकार जो सेलियन्डरी था। वह पहला व्यक्ति था जिसने ब्राजील का दृश्य सबसे पहले खींचा उसके पश्चात् कारिया-डी-लीमा, मेन्युयल डी भरौजो, पेटो अमेरिकन डी-मिलो आदि चित्रकार हुए। उन्होंने मुख्य चित्रकारी से देश की चित्रकला का श्रेय विस्तृत किया इसके पश्चात् धीरे धीरे चित्रकारी की संख्या बढ़ने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी में जोशे फलेमिंडन्डो-अलमिडा हुआ। उसने दृश्यों का तथा चित्रो की अच्छी चित्रकारी की है। उसकी चित्रकला

लगभग उस समय की सभी चित्रकारियों से उत्तम थी। वह साओपालो में पैदा हुआ था। वह कई वर्ष यूरोप में विद्याध्यन करता रहा। लौटने के पश्चात उसने चित्रकारी में नवीनता का परिचय देना प्रारंभ किया। उसने जिस प्रकार चित्रकारी करना प्रारंभ किया उसमें उसका व्यक्तित्व साफ झलकता है। उसकी शैली लेपाजियन थी। उसमें उसका एक विशेष ढंग था।

आधुनिक जमात के सबसे प्रसिद्ध चित्रकार निम्नलिखित हैं।

बनर्डिली, मनुष्यों की चित्रकारी करने मे सबसे अच्छी हैं। अमेडो काल्पानिक चित्रों के बनाने में अद्वितीय समझा जाता है। कलाकारो आकृतियों की चित्रकारी में अपना सानी नहीं रखता। वीनगार्टिनरा पक चलाले के घर में पैदा हुआ था। वह रायग्रेंन्डे-डू शौल का प्रसिद्ध चित्रकार है। इसके अतिरिक्त विस्कों की तथा आगस्टा नात्र की चित्रकार है अपनी योग्यता और दृश्यों की चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। इसके अतिरिक्त यहां पर बहुत से विदेशी चित्रकार भी पाए जाते हैं।

ब्राज़ील मूर्तिकला के क्षेत्र में भी अधिक उन्नतिशील है। सबसे पहला मूतिकलाकार फ्रान्सिस्को पिनहिरो हुआ। वह ब्राज़ीलियन था उसका जन्म रायडी जेनेरो में हुआ था। आम पेड्रों द्वितीय के बहुत से स्टेच्यूज़ को बनाने का श्रेय उसी को प्राप्त है। पिछले मूर्तिकारों में जितनी इज्जत उस व्यक्ति की फैज़ी उतनी आर किसी को नही मिली। हव आजकल भी जीवित है और तेजी के साथ उत्तम श्रेणी के चित्रकारी का काम कर रहे है। बनर्डिली रायडी-जेनेरो के फाइन आर्ट्स स्कूल का

अध्यक्ष है। उसने चित्रकारी का जो नमूना पेश किया है। वह उसे संसार का महान् चित्रकार बनाने में सफल हुई हैं। उसने संगमरमर का एक समूह क्राइस्ट और इनके शिष्यों का बनाया है। उसकी यह कला संसार के चित्रकारों के चित्त को आकर्षित कर लेती हैं। इसके अतिरिक्त फ्रैन्को कोरिया-काइमा बनी यहां के प्रसिद्ध चित्रकार हैं। प्राय: ब्राजील के सभी प्रान्तों में कला के स्कूल पाए जाते हैं। यहां पर इटेलियन और ब्राजीलियन के लड़के बड़ी सुन्दर चित्रकारी करते हैं साधारण रूप से चित्रकला, पानी और तेल की चित्रकारी लकड़ी धातुओं आदि की बनाकर वे लोग बहुत बढ़ चढ़कर हैं। यहां के स्कूलों में कारीगरी तथा लकड़ी शिल्प शिक्षा तथा यह इत्यादि बनाने में किसी देश के कार्यों से कम नहीं हैं। उन्हें जिस ढङ्ग से कला की शिक्षा दी जाती है। उससे ब्राजील के उन्नति शील भविष्य का अदाज लगाया जा सकता है।

लोगों ने इस बात का भी प्रयत्न किया कि सर्वसाधारण जनता में उच्च श्रेणी के संगीत का प्रादुर्भाव किया जाय। परन्तु इसमें उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। ब्राजील के निवासी अपनी ही संगीत कला के प्रेमी हैं। यूरोप के ढङ्ग की संगीत कला में उन लोगों को किसी विशेष प्रकार का आनन्द नहीं मिला। इसलिए सर्वसाधारण जनता उसको न अपना सकी ब्राजील में बड़े बड़े संगीत ज्ञान तथा संगीन बनाने वाले पैदा हुए। जो अपनी विशेष योग्यताका परिचय देते हैं। राष्ट्रीयता की दृष्टि से यहां का संगीत बहुत उच्च श्रेणी का

नही कहा जा सकता। फिर भी लोग बड़े के गुमराह तथा गाने के अन्य औज़ारों को अधिक पसन्द करते हैं। ड्रामा आदि का भी यहां पर काफ़ी प्रचार है। इसकी शिक्षा लड़कों को स्कूलों से ही दी जाती है शिक्षक प्रत्येक समय लड़कों के ऊपर निरीक्षण रखता है। वह हमेशा शब्दों के ठीक उच्चारण और उसके मनोभावों को ठीक ढङ्ग से प्रकट करने पर ध्यान रखता है। वे लोग जब नाटक खेलते है तब पुनर्पित पर लड़के बड़ी योग्यता से अपना पार्ट करते हैं। ड्रामा में अधिकतर सुखान्त ही लोगों को अधिक पसन्द होता है। इन लोगों का गाना अधिक कर्णप्रिय होता है।

ब्राज़ील में सबसे पहले समाचार पत्र सन् १७०० ई० में प्रकाशित हुआ। इसका प्रकाशन पहले परनाम्बुको में हुआ इसके पश्चात् यह औरों प्रेटा में प्रकाशित किया गया ऐसा प्रतित होता है कि पहले पहल यहां के राजाओं ने इस पर रोक लगा दी। अठारवी शताब्दो में रायडो जेनेरो में भी समाचार पत्र प्रकाशित किया गया। परन्तु वह भी थोड़े दिना के पश्चात् समाप्त हो गया सन १८०८ ईस्वी में फिन दूसरा प्रेस राज्य की ओर से स्थापित किया गया। आजकल इसको 'इम्प्रेन्सी नैसिओनता कहते है। यही सबसे पहला स्थाई प्रेस है। जिसमें अधिक रूप से समाचार पत्र प्रकाशित देना आरम्भ हुआ। मिनासमेरायस मे सबसे पहले सन १७०७ ईस्वी में समाचार पत्र प्रकाशित किया गया। बहिया में सन् १८१२ ई० में सबसे पहले समाचार पत्र प्रकाशित किया और परनाम्बुको

में सन १८१४ ई० में समाचार पत्र प्रकाशित हुए परन्तु यह पत्र अधिक दिनों तक न चल सका।

सन् १८१७ से १८२७ ई० तक भिन्न भिन्न रियासतो में बहुत से समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे इन समाचार पत्रों में से बहुत से पत्र आज भी उसी नाम से प्रकाशित किए जा रहे हैं। परन्तु बहुतों के नाम बदल गए हैं। पुराने समाचार पत्र जो आजकल प्रचलित हैं उनका नाम डिआरियो-डी-परनाम्बुको जो सबसे पहले सन् १८२५ ई० में प्रचलित किया गया था और दूसरा जर्नल डू-कामर्सियल हैं। यह सन् १८२७ ई० में प्रकाशित किया गया था। जब यह समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे उस समय ब्राजील में लगभग तीस समाचार पत्र निकलते थे। १९१३ ई० के पश्चात् ब्राजील में १००० से अधिक पत्र प्रकाशित होने लगे। कुछ मुख्य दैनिक समाचार पत्र शाही महलों से भी निकलना आरम्भ हुआ। जर्नल-डू-कामर्सियल समाचार पत्र राय-डी जेनेरा से प्रकाशित किया जाता है यह सत मंजिले मकान से प्रकाशित होता है जिसके बनाने में १ लाख पौंड खर्च किया गया था। यह पत्र सुबह और शाम दोनों समय प्रकाशित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इनका साप्ताहिक और सामाजिक अंक भी निकलता है। इस पत्र को पूर्ण रूप से राजनैतिक नहीं बनाया गया। इसलिए यह पत्र बहुत सिद्ध है। और इसको बहुत से लोग खरीदते हैं। इसमें मुख्यतया ब्राजील के लोगों के ही विचार प्रकाशित किए जाते हैं। उसमें विशेषतया राष्ट्रीय विचार ही छापे

जाते हैं। इसके अतिरिक्त दूसरे दैनिक समाचार पत्र जर्नल-डू-ब्राजील, बोयाहमकोरियो डा परनाम्बुको आदि हैं। प्रत्येक रियासत में कम से कम एक दैनिक समाचार पत्र होता है।

कुछ हास्यात्मक पत्र भी निकलते है। ये पत्र केवल लोगों के मनोरंजन के लिए होते हैं। परन्तु इस मनोरंजन के साथ साथ उन्हें कुछ शिक्षा भी प्राप्त होती हैं इसके अतिरिक्त यहां पर बहुत सी मासिक पत्रिकायें भी प्रकाशित की जाती हैं। इलपसट्रेकाब यहां की सबसे प्रसिद्ध पत्रिका है।

ब्राजील में बहुत पहले से लेखक और कवि अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। मुद्रक यंत्र के प्रारम्भ होने ही यहां का साहित्य भी बहुत अधिक मात्रा में बढ़ गया है। बहुत सी पुस्तकें भी छप गई हैं जिसके कारण लोगों को इसके पढ़ने में बहुत सुविधा हुई है। ब्राजील का साहित्य बहुत विस्तृत है। इसमें हजारों कवियों और लेखकों के अच्छे अच्छे ग्रन्थ मौजूद हैं। यहां का सबसे पहला कवि बेन्टो टिकसिबरा है। उसके प्रबन्ध काव्य में लिखे गये हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ में कल्पना और वीरता के भाव भरे हुए हैं। ग्रेगोरियो-डा-मैरोज-गेअरा जनता का कवि था। वह सत्रहवीं शताब्दी में पैदा हुआ था।

इसने अपने जीवनकाल में अत्यधिक ख्याति प्राप्त की थी। वह व्यंग लिखने में में बड़ा प्रवीण था। उसने विना किसी भय के अमीरों के अत्याचारों का वर्णन किया है। मैनुयेल-बोटेलहो भी सत्रहवीं शताब्दी का प्रसिद्ध कवि था। उसने भी बहुत अच्छी कविताओं से साहित्य का भंडार भरा।

अठारहवीं शताब्दी में भी कवियों ने साहित्य के भंडार को

अधिक बढ़ाया। इस टाचिडोच अठारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में पैदा हुआ था। इसके पश्चात् अन्होलियो-डा-सिवडन हुआ। वह पुरानी शैली को भी अधिक पसन्द करता था। उसने बहुत सी कविताएँ लिखी परन्तु वे सर्वसाधारण की समझ में नहीं आ सकती। उसे बड़े बड़े विद्वान जो पुर्तगाली भाषा जानते हैं समझ सकते हैं। वारजिलियो डी-गामा राजनैतिक विचारों को प्रकट करने में सबसे प्रसिद्ध था। थामस-अंटोनियो अठारहवीं शताब्दी का कवि था वह हास्यरस की कविताएँ लिखने में प्रवीण था। वैरन डी सैन्टो एन्गलो जानवरों, चिड़ियों और फूलों के ऊपर कविता किया करता था। वह एक बड़ा चित्रकार भी था इस प्रकार अठारहवीं शताब्दी के अंत तक ब्राजील का साहित्य भर गया। उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे प्रसिद्ध कवि, लेखक और पत्रकार राय-बर्बोस्य था। वह राजनीति की गंभीर समस्याओं पर लिखा करता था। वह ब्राज़ील के सभापतित्व के लिये भी खड़ा हुआ था। परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। उसने कानून के ऊपर भी पुस्तकें लिखी हैं। वह कई भाषाओं पर अधिकार रखता था। इन भाषाओं को वह बोल सकता था और लिख सकता था, उन्नीसवीं शताब्दी के प्रमुखकार्य और लेखक टोबिपाज, बरेटो जो दार्शनिक पुस्तकें लिखता था। जो अलिसवा प्रबन्धकार था इसके अतिरिक्त मेन्डेज, वैरेन-डी- गजरा और बोलीवीरा इस समय के प्रसिद्ध लेखक हैं। मार्टिन-पिला. टाने-अलेंकार और मरेडो इस समय के योग्य लेखक हैं। इन्होंने ड्रामा (नाटक) की पुस्तकों से ब्राजील के साहित्य को बढ़ाया।

ब्राज़ील-दर्शन

अठारहवीं शताब्दी में कवि और चित्रकारों की संख्या अधिक रही उस समय लोग काल्पनिक संसार में अधिक विचरते थे। इस समय निबन्ध और लेख लिखने की अधिक प्रथा नहीं थी। छोटे छोटे लेखक थे। ये गद्य लिखने में अधिक सफलता नहीं प्राप्त कर सके थे। उन्नीसवीं शताब्दी में गद्य लिखने की प्रथा बहुत विस्तृत रूप से चली। इस समय इतिहास राजनैतिक विषयों तथा सार्वजनिक विषयों पर भी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए।

ब्राजील में मनोरंजन के लिए भी बहुत से सामान एकत्रित हैं। यहां का सबसे मुख्य मनोरंजन आचित्र का इकट्ठा करना है। आचिड एक ब्राजील का पौधा है। इसके फूल बहुत सुगन्धित होते हैं। इस प्रकार का मनोरंजन प्रायः प्रत्येक नगर में पाया जाता है। इसको बहुत ही सभ्य और अच्छे मनुष्य एकत्रित करते हैं। बहुत से लोग इसका ढेर ही इकट्ठा कर लेते हैं। आचिड की १५०० से ६००० तक की किस्में होती हैं। और इसकी प्रति वर्ष नवीन खोज की जाती है।

कुछ लोग आजकल कई तरह के सिक्के इकट्ठा करते हैं। बहुत से पुराने इण्डियन अपने यहां स्पेन और रोमन के सिक्के एकत्रित किये रहते हैं। कुछ लोग पुरानी किताबों को भी एकत्रित करते हैं। औरतों का मन बहलाव गाने चित्रकारी, माला बनाना तथा और कई किस्म की घरेलू चीजें बनाने में होता है। काम से फुर्सत पा कर स्त्रियां इन्हीं चीजों से अपना मनोरञ्जन करती हैं। प्रायः प्रत्येक घर में स्त्रियां कुछ न कुछ चित्रकारी तथा कई किस्म के बेलबूटे बनाने की कला को जानती हैं। यहां

की स्त्रियां प्राय: अपने पुराने रीति रिवाजों के अनुसार ही चलती है।

---

(१८)

ब्रिटेन में खेल-कूद प्राय: सूरज की रोशनी में होते हैं। ब्राजील ने भी यही ढंग बहुत कुछ अपनाया है। प्रजातन्त्र राज्य में यहां के खेल-कूद राष्ट्रीयता के आधार पर भी बढ़ाए गये हैं। यदि उनसे कोई पूछे कि तुम्हारा सबसे प्रिय खेल कौन है तब लोग उत्तर में फुटबाल अपना सबसे प्रिय गेंद बताते हैं। ब्राज़ील के प्रत्येक नगर में फुटबाल के मैदान बने हुये हैं। इसके बहुत से क्लब भी बने हुए हैं। परन्तु उनका फुटबाल कुछ राष्ट्रीय ढंग का होता है। इसको सोसर फुटबाल कहते हैं। यह पहले पहल अंग्रेजों के द्वारा सन् १८६६ ई० में साओपालो में बनाया गया था। शीघ्र ही यह ब्राजील के युवको का सबसे प्रिय हो गया। इसके खोजने का श्रेय सावोपालो के एथेलेटिक क्लब को है। इस खेल में प्रतिवर्ष नगर को बड़ी बड़ी टीमों में प्रतियोगिता हुआ करती है। अंतर्राष्ट्रीय मैच कभी कभी खेले जाते हैं। यह मैच दर्शकों को बहुय प्रिय होता है। अंतर्राष्ट्रीय मैच को देखने के लिये दस-दस हजार लोगों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है। साओपालो और रायो-डी-जेनेरो में इसके मैच प्राय: हुआ करते है। परन्तु मनाओस का फुटबाल मैच बड़ा ही चित्ताकर्षक होता है। उसके अतिरिक्त रगबी फुटबाल भी खेला जाता है। इस फुटबाल को प्राय: वहां के अंग्रेज खेलते हैं। इसको—भी

मैच होते हैं। दूसरी दूसरी रियासतों से भी मैच बदे जाते हैं। ये मैच सैंटोस साओपालो, रायो-डी-जेनेरो तथा परनाम्बूको में खेले जाते हैं। परन्तु इसमें लोग इतना आनन्द नहीं उठाते जितना कि सोसर फुटबाल के मैच में लोग आनन्द लेते हैं।

रियासत की राजधानियों में क्रिकेट खेला जाता है। इसको ब्राजीलियन अधिक पसन्द नहीं करते। वहां के अंग्रेज ही प्रायः इसको खेलते हैं। इनके मैदान साओपालो, सेंटोस, रायो-डी-जेनरो, नेकथेराम और परनाम्बूको में बने हुए हैं। इन्हीं पर प्रतिवर्ष कुछ खेल खेले जाते हैं। इसका सबसे सुन्दर मैच साओपालो और सैंटो के दलों में होता है। फुटबाल के पश्चात् ब्राजीलियन टेनिस का खेल अधिक पसन्द करते हैं। यह फुट बाल की तरह प्रायः देश में हर जगह खेला जाता है। परन्तु यह वास्तव में धनी लोगों का खेल है। जो मनोरंजन के लिए फुर्सत के समय खेला जाता है। यह घास के मैदान पर भी खेला जाता है। स्कूल के मैदान और सार्वजनिक मैदान प्रायः सीमेंट से बने रहते हैं। यहां पर इस खेल को बढ़ाने के लिए कोई विशेष उद्योग नहीं किया जा रहा है। केवल क्लब ही इसको बढ़ाते हैं। परन्तु दिन प्रति दिन यह खेल लोग अपनाते जाते हैं।

कुछ लोग बोट (छोटीनाव) चलाने में आनन्द लेते हैं। बड़े बड़े लोग भी बन्दरगाहों में जाते हैं और जहाजी के द्वारा यात्रा करते हैं। वे जहाज को स्वयं खेते हैं। इसी तरह लोग नदियों में भी जल यात्रा करते हैं। ब्राजील में नदियों और समुद्रों के तट पर इसके सैकड़ों क्लब बने हुए हैं। इन क्लबों में कई

टोलियां होती है। ये टोलियां एक के बाद दूसरी वहां जाती है। और अपना मनोरंजन करती हैं। इन टोलियों में रियासत के बीच बड़ी प्रतियोगिता होती है। दो पार्टियों में जब एक पार्टी जीत जाती है तब विजयी पार्टी उसी तरह से चिल्ला कर के खुशी मनाती हैं जिस तरह अंग्रेजी फुटबाल मैच में होता है।

राय में बेसबाल खेला जाता है। परन्तु इसकी अभी बहुत उन्नति यहां पर नहीं हुई है। इसके अतिरिक्त गल्फ एक दूसरा खेल है जो धीरे धीरे लोगों में बहुत प्रिय होता जा रहा है। इसकी टोलियां राय सैंटो, साओपालो तथा अन्य स्थानों में खोल दी गई हैं। साओपालो की श्रेणी बागर के मध्य में है जिसको यहां के खिलाड़ी पूरे वर्ष भर खेलते रहते हैं।

ब्राजील में अच्छी अच्छी व्यायाम शालाएं भी बनी हुई हैं। तरह तरह के खेल के क्लब भी तैयार किए गए हैं। हर एक क्लब अपने अपने मैदान रखता है। इन क्लबों का कोई भी मेम्बर बन सकता है। प्रत्येक नगर या शहर अपने यहां के सामाजिक साहित्यिक संगीत सम्बन्धी खेल तथा व्यायाम सम्बन्धी क्लबों की यथाशक्ति सहायता करता है। सावोपालो में एक ऐंग्लो अमरीकन क्लब भी पाया जाता है। इसमें स्काटलैंड के निर्वासित किए हुए लोग भी भाग लेते हैं। इसमें अंग्रेज, आइरिश, अमरीकन तथा बेल्जियम निवासी भी पाए जाते हैं।

घोड़े की दौड़ आजकल एक मुख्य मनोरंजन का साधन समझा जाता है। सबसे पहले यहाँ मनोरंजन का साधन सन्

१८४९ ई० में रायो-डी-जेनरो में प्रारंभ किया गया था। पहली दौड़ जब हुई थी तो उसकी सभा नगर के बाहर सात या आठ मील दूरी पर हुई थी। इसको सम्राट डान-पेड्रो द्वितीय ने भी प्रोत्साहन दिया था। परन्तु जनता से इसको कोई विशेष प्रोत्साहन नहीं मिला। अतएव यह बहुत सफल न हो सकी। सन् १८७०-७१ ई० में जब क्लब की ओर से नये नये राष्ट्रीय घोड़ों की दौड़ हुई तब उसके अन्दर कुछ जान दिखाई पड़ी। लोगों ने उसे प्रेम से देखा। २ वर्ष पश्चात् सन् १८७५ ई० में साओपालो में इसका एक बड़ा क्लब खोला गया। उस दौड़ के समय बहुत से राष्ट्र की ओर से अच्छे और तन्दुरुस्त घोड़े लाए गये। उन की दौड़ हुई। जिसने लोगों का ध्यान इसकी ओर आकर्षित करना प्रारंभ किया। सन् १८८० ई० में दूसरी सभा हुई जिसमें रियासत के सभी अच्छे अच्छे घोड़े आये। इस प्रकार धीरे धीरे इसके क्लब बढ़ने लगे। आजकल भी लोग घोड़े की दौड़ से अत्यधिक आनन्द उठाते हैं।

प्रत्येक स्कूल और कालेज में जिम्नाजियम का प्रबन्ध रहता है। इसको लड़कियाँ भी प्रयोग में ला सकती हैं। लड़कियाँ आजकल भी व्यायाम शालाओं में भाग नहीं ले सकतीं। जो लड़कियाँ यहां पर बाहरी खेलों में भाग लेती हैं वे या तो यूरोपियन ढंग को अपनाये हुए हैं। और उसी वातावरण में पली हैं या वे विदेशी हैं। कुछ औरतें साइकिल भी चलाती हैं। ब्रिटेन और अमरीका के स्कूल और कालिजो में जिम्नेज़ियम का बहुत प्रचार है। जिसकी वजह से लड़कों की तन्दुरुस्ती में बहुत परिवर्तन दिखाई पड़ता है। ब्राज़ील की व्यायामशालाएँ

तथा व्यायाम करने की वस्तुएँ उतने उत्साह के साथ नहीं प्रयोग की जाती जितना इंगलैंड, अमरीका, आस्ट्रेलिया में होता है। ब्राजील में अंग्रेजी ढग के व्यायाम बड़े अच्छे ढंग से कराए जाते हैं।

तैरना भी यहाँ की एक अच्छी कला समझी जाती है। तैरना बहुत स्वास्थ्यप्रद समझा जाता है। स्कूलों में वेतन देकर तैराक रखे जाते हैं। जिनका काम लड़कों को इसकी शिक्षा देना होता है। परन्तु इसकी ओर अभी तक लोगों ने बहुत ध्यान नहीं दिया है। शिकार करना और मछली फँसाना भी एक आनन्ददायक कार्य समझा जाता है। कुछ लोग यह काम मनोरंजन के लिए करते हैं। मछली के फँसाने का यह खेल प्रायः हर समय किया जा सकता है क्योंकि यहां पर नदियाँ भरी हुई हैं। और उनमें मछलियां बहुत अधिक मात्रा में प्राप्त होती है। कुछ कुछ मछलियों से शिकारियों से अत्यधिक आनन्द मिलता है। परन्तु यहां का शिकार इतना अधिक नहीं होता जितना अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में किया जाता है।

घरेलू मनोरंजन में सबसे प्रथम स्थान नृत्य का आता है। नृत्य प्रायः प्रत्येक स्थानों में होता है। नगर ग्राम, जिला, कैंप आदि स्थानों में इससे मनोरंजन किया जाता है। "बाल्टस" यहां का बहुत प्रसिद्ध नृत्य है परन्तु इसके अतिरिक्त और बहुत तरह के नृत्य किए जाते हैं। बाहिया का 'मशीशा नृत्य" बहुत प्रसिद्ध है। विलयाई नृत्य बहुत अधिक मात्रा में किया जाता है

संघ और रियासत की ओर से लाटरी भी फेंकने की आज्ञा

दी गई है। इसमें लोग बहुत आनन्द लेते हैं और इससे वे बहुत आकर्षित होते हैं। क्योंकि इसमें थोड़ा धन देने पर हज़ारों लाटरीज़ के जीतने की सम्भावना होती है। लाटरी को बेचने का अधिकार केवल उसी कम्पनी या मनुष्य को होता है जिसको सरकार ऐसा करने की आज्ञा देती है। इसमें गरीब से गरीब आदमी पैसा बचा कर अपने भाग्य को आजमा सकता है। परन्तु यह ढंग बहुत अच्छा नहीं कहा जा सकता। इससे राज्य का रुपया एक स्थान पर एकत्रित हो जाता है। जिसकी वजह से लोगों को अंत में बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस रुपया कमाने के ढंग में चोरी की भी आदत छिपी रहती है।

ब्राजील में नीग्रो और ब्राजीलियन धार्मिक त्योहार भी मनाते हैं और उससे मनोरंजन करते हैं। प्रत्येक त्योहार भी मनाते हैं और उससे मनोरंजन करते हैं। प्रत्येक त्योहार में लोग भोज भी करते हैं। उसमें लोगों की दावतें भी दी जाती हैं। ये दावतें प्रत्येक रियासत में भिन्न भिन्न नामों से पुकारी जाती हैं। इसके लिए एक जलूस भी निकलता है। जलूस में गाना नाच आदि चीजें होती रहती हैं।

---

(१६)

ब्राजील में सबसे पहली रेलवे सन् १८५८ ई० में खोली गई। यह राय की खाड़ी से पेड्रोपोलीस तक बनाई गई। यह केवल दस मील लम्बी थी। इसके पश्चात् इसी स्थान से दूसरी

रेलवे बनाई गई। यह ब्राजील की ग्रेट सेन्ट्रल रेलवे बाहिया, सैनफ्रांसिस्को, सावोपालो से मिलाई गई है। आजकल समस्त देश में चौदह हजार मील रेलवे बनी हुई है। एक चौथाई रियासत की रेलवे है। सातवां भाग रेलवे स्वयं अपने अधिकार में रखती है। जिस पर संघ की सरकार का अधिकार है। एक तिहाई भाग संघ के आधीन है शेष भाग भी सरकार की आज्ञा से स्वतन्त्र है। कुछ रेलवे व्यक्तिगत हैं जो राज्य को कुछ कर देती है। यह रेलवे लाइनें उपजाऊ स्थानों से हो कर निकाली गई हैं। ये बड़े बड़े खनिज पदार्थों से होकर जाती है। सावोपालो रेलवे बड़े खनिज पदार्थ के स्थानों से होकर गई है।

मडीरा ममोरे लाइन बहुत उल्लेखनीय है। यह ब्राजील रेलवे कम्पनी के आधीन है यह २२ मील लम्बी है। यह मडीरा नदी पर पोर्टो वेलहो और रिविशाल्टा के बीच स्थित है। यह रेलवे यात्रियों की आने जाने की सुविधा के लिए बनाई गई क्योंकि नदी से बच कर जाना बहुत कठिन होता था। इस रेलवे को बनाने के लिए संघ की सरकार ने बहुत सा रुपया दिया था। इसके बनाने में बड़ा खर्च लगा था। कितने ही मजदूर बुखार के मारे मर गए। उसी समय मजदूरों की रक्षा के लिये अस्पताल भी खोले गए। कैम्प बनवाए गए। तन्दुरुस्त आदमी वहां पर रक्खे गए। इस प्रकार बहुत मुश्किल से यह रेलवे बनाई गई। यह रेलवे दक्षिणी अमरीका में बहुत उपयोगी है। इसी रेलवे के द्वारा आमेजन की घाटी से यूरोप जाने के लिए लोगों को बड़ी आसानी हो जाती है। व्यापारिक दृष्टि से भी यह रेलवे बहुत प्रसिद्ध है।

सियरा की रेलवे लाइन भी बहुत प्रसिद्ध है। यह दक्षिण में फोर्टलेजा से समस्त देश की लम्बाई तक फैली हुई है। यह अर्जेन्टाइना तथा उत्तरी तट के सभी मुख्य स्थानों से होकर जाती है। यह क्रिककसेडा के मुख्य कृषि प्रदेश से होकर जाती है। यह भियरा के भी धनी मैदानों से हो कर गुजरती है। इसके अतिरिक्त यह हीरे की खानों के पास से होकर जाती है। इस तरह यह लाइन व्यापार की दृष्टि से बहुत प्रसिद्ध है।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे यहां की बहुत प्रसिद्ध रेलवे है। यह माटोग्रासो के कोरम्बा नगर से सावोपालो तक फैली हुई है। आजकल यह बोलीविया से भी मिला दी गई है। जिसकी वजह से ब्राजील में भी हो कर यूरोप की यात्रा आसानी से की जा सकती है। क्योंकि बोलीविया का मध्य ब्राजीलियनों के लिए खुल गया है।

संघ सरकार की ओर से भी बहुत सी रेलवे लाइनें खुली हुई हैं। इस प्रकार विशेषतया दो मुख्य लाइन हैं। एक रायो डी जेनरो से सावोपालो को जाती है। और दूसरी राय से कांट्रिया को जाती है। यह लाइन माइनीस की रियासत में बनाई गई है। इस रेलवे के बनाने में लोगों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ा। परन्तु उन्होंने सफलता के साथ अपनी कठिनाइयों को जीता और रेलवे लाइन तैयार की। पहली बार ब्रिटिश इन्जीनियरों ने इसे बत्तीस मील तक बनाया था। परन्तु सन् १८५८ ई० में डाक पेड्रो द्वितीय ने इसको पूरा करवाया। उसके पश्चात् थोड़ा थोड़ा करके यह बढ़ाती गई।

ग्रेट ट्रंक लाइन जो अभी तक पूरी नहीं बनी है इसके

बनवाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त और बहुत सी लाइनें हैं जो अभी अधूरी हैं। इन लाइनों के बनवाने में लोग क्यों सुस्ती करते हैं इसका विशेष कारण है। लोगों के आने जाने की आसानी आमेजन नदी से पूरी हो जाती है। इन्हें इस नदी के द्वारा व्यापार करने में भी कोई विशेष आपत्ति का सामना नहीं करना पड़ता। सम्भवतः इसीलिये लोग रेलवे के बनाने में उदासीन रहते हैं। दुर्भाग्य से ब्राजील में बहुत सी क्रांतियां हुआ करती हैं। पहले इसका बहुत कुछ कारण सेना और जहाजी बेड़े होते थे। परन्तु इन क्रांतियों का बहुत कुछ कारण समाचार पत्रों का असत्य प्रोपेगेंडा होता था। कभी कभी ऐसी ऐसी क्रान्तियां हुई हैं जिनके होने का कारण बहुत छोटी सी घटनाएं हुआ करती थीं। समाचार पत्रों की ही झूठी तथा नमक मिर्चा मिले लेखों से ही क्रांतियां उत्पन्न हो गई हैं। ब्राजील में अधिकतर यूरोप के निवासी ही पाये जाते हैं। वे लोग आज भी आंतरिक कारणों पर बहुत नहीं बढ़ते जैसा इंग-लैंड में हुआ करता है। वास्तव में लोग इस बात को सोचने के लिए तैयार हो जाते हैं। शिक्षा सैनिक और व्यापारिक लोगों का आपसी सम्बन्ध तो इन्हें क्रांति की ओर तो नहीं ले जाता। ब्राजील में अनिवार्य नौकरी करने की एक प्रथा थी। इक्कीस से चौबीस वर्ष की आयु के लोगों के लिए यह अनिवार्य था कि वे शांति या युद्ध के समय सेना को नौकरी करें। सत्रह और २१ वर्ष की आयु के लोगों से केवल २ वर्ष की सैनिक नौकरी की आशा की जाती थी। स्थाई सेना में पच्चीस हजार से लेकर तीस हजार तक सेना रहती थी। यह घुड़सवारों और

पैदलों की हुआ करती थी। पांच तोपखाने भी हुआ करते थे। संघ तेरह भागों में बांट दिया गया है। प्रत्येक विभाग का एक ब्रिगेडियर जनरल होता था। वही उनकी देख रेख करता था। सिपाहियों को एक शिलिंग के बराबर का वेतन प्रतिदिन के हिसाब से दिया जाता था। खाने के लिये कुछ भत्ता भी दिया जाता था। घुड़सवारों को दुगना वेतन दिया जाता था। अफसरों का वेतन अधिक होता था। छोटे अफसर से लेकर बड़े अफसरों तक की तनख्वाहों में उनके कार्यों के अनुसार अनुपात होता था। महीने में तीस पौंड कम से कम बड़ा वेतन हुआ करता था। मार्शल की तनख्वाह १८७ पौंड होती थी। उसको पेन्शन भी दी जाती थी। बहुत से राइफल क्लब भी आजकल पाये जाते हैं।

लड़ाई के समय सबसे बड़ा कमान्डर मार्शल होता है। उसमें की बहुत सी रियासतें सेना या सैनिक विभाग नहीं रखती। परन्तु बहुत सी रियासतें ऐसी हैं जिन्हें कुछ निश्चित सेना से अधिक रखने का अधिकार नहीं है। केवल राज्य की ही सेनाएँ आवश्यकतानुसार बढ़ाई जा सकती हैं। जब कोई पुलिस हथियारबन्द होता है तो उसके पास बन्दूकें होती हैं। उसे बन्दूक चलाने के लिए अधिकार होता है, तो वे लोग अधिकतर पुलिस के बजाय सैनिक समझे जाते हैं। रियासत में कभी कभी संघीय सरकार की स्थाई सेना और सेना की पुलिस के बीच लड़ाई हो जाती है। इससे पुलिस लोग बड़ा ही प्रभावशाली काम करते हैं। ब्राजील की सेना का प्रबन्ध उतना अच्छा नहीं है जितना कि पुलिस का है। यहां की सेना कभी

कभी विद्रोह को दबाने में पहले अधिक सफल नहीं होती थी ! जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इनका शरीर बहुत अच्छा नही होता। इनकी मार्चिंग और ड्रिल बहुत संतोषजनक नही होती। इन लोगों का सीना भी बहुत छोटा होता है लम्बाई में भी बहुत बड़े नहीं होते।

ब्राजील के तट पर जहाजी बेड़ा भी पाया जाता है। आज कल इसके पास लड़ाई के भी जहाज हैं। वह लड़ाई के लिए और भी जहाज बनाता जा रहा है। दक्षिणी सागरों में ऐसा प्रतीत होता है कि थोड़े दिनों के पश्चात् ब्राजील का जहाजी बेड़ा अधिक उन्नतिशील हो जायगा।

अर्जेन्टाइना की लड़ाई में यहाँ के जहाजी बेड़े ने जो योग्यता दिखाई थी उससे पता चलता है। कि यहां की सरकार अपने को इस क्षेत्र में भी बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

---

(२०)

लगभग यूरोपियनों को ब्राजील में आए हुए साढ़े चार सौ वर्ष हो गए। उसी समय से राष्ट्रीयता बढ़ने लगी। जब सम्राट् का राज्य यहां होने लगा तब राष्ट्रीयता कुछ कुछ कम होने लगी परन्तु कुछ दिनों के बाद वे फिर स्वतन्त्र राज्य की स्थापना के लिए तैयार हुए। और फिर उन्होने संघीय शासन की स्थापना की। यहाँ की संघ सरकार फ्रान्स और अमरीका से बहुत कुछ मिलती जुलती है। परन्तु यहाँ इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि पहले उस सर्वप्रिय सम्राट के समय में जो राज्य

की स्थिति में विकास हुआ वह कुछ दिनों तक इन्हें न मिल सका। ब्राजील का सम्राट ब्राजील को दक्षिणी अमेरिका का प्रसिद्ध देश बनाना चाहता था। वह चाहता था कि यूरोप की सभी सभ्यता और कला यहां पर प्रकाशित हो जाय परन्तु उसका यह उद्देश्य पूर्ण न हो सका। इटली, स्पेन, पुर्तगाल वहां के लोगों की उन्नति करने के लिए उतने तैयार नहीं थे जितना ब्राजील का सम्राट था। आजकल ऐसा करना उन लोगों के लिए बहुत आसान नहीं दिखाई पड़ता।

संघीय सरकार स्थापित होने के समय ब्राजील को बहुत सी आपत्तियों का सामना करना पड़ा। ऐसा होना स्वाभाविक है। प्रत्येक देश को स्वतंत्रता के पश्चात् बड़ी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है. स्वतन्त्र सरकार का पहला समय बड़ा ही खतरनाक होता है। नौसिखिये कर्मचारी लोगों को बहुत सा कष्ट देते हैं।

इसका कारण उसका राज्य के नियमों से अनभिज्ञ होना ही है। शासनकाल उसी समय से चल सकता है जब स्वतंत्र देश को स्वतंत्र हुए कुछ दिन व्यतीत हो जाते हैं। और अच्छे-अच्छे प्रबन्धकर्ता राज्य का भार अपने ऊपर लेते हैं। उस समय स्थिर और शांत वातावरण की आशा की जाती है।

ब्राजील के शासन प्रबन्ध में अभी बहुत सी कमजोरियां हैं। इन कमजोरियों को दूर करने के लिए उसे दक्षिणी अमरीका की संघ सरकार अथवा विशेषकर उत्तरी अमरीका की संघ सरकार से उदाहरण लेना चाहिए। अमेरिका की सरकार के बनने में बहुत सी प्राकृतिक कठिनाइयाँ थी उसके पास उतना

समय काम करने के लिये नहीं था जितना ब्राजील के लिए था। सयुक्त राष्ट्र अमरीका के पहले यूरोपियन जो यहां पर आए थे। कृषि के बारे में बिल्कुल अनभिज्ञ थे। वे लोग वहां की कृषि में उतनी उन्नति न दिखा सके जितना ब्राजील में विदेशी निवासियों ने दिखाया। इण्डियनों के सामने भी एक कठिनाई थीं। मजदूरों की दशा दोनों ही देशों में एक सी थी। अमरीका ने "गुलामी प्रथा" को छोड़ देने की प्रतिज्ञा की। उसने उन्हें स्वतन्त्र घोषित किया जैसा ब्राजील में किया गया था। इसके अतिरिक्त और बहुत सी चीजों में अमरीका और ब्राजील की दशा एक सी है। दोनों ही देशों के निवासी उद्योगी हैं। दोनों ही देशों में संघ की सरकार बहुत उन्नतिशील है। दोनों का विधान प्राय: एक सा है। दोनों देशों के लोगों ने स्वतंत्रता पाने के पश्चात हर एक क्षेत्र में उन्नति की।

ब्राजील में राष्ट्रीयता की बहुत कमी है। वे लोग अधिकतर अपने फायदे को देखते हैं। परन्तु राष्ट्रीय लोगों की संख्या बहुत कम नहीं है। बहुत से ब्राजील के युवक बड़े उत्साही और राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत होते हैं। उनमें शिक्षा की कमी कभी कभी उन्हें स्वार्थ की ओर ले जाती है। कहने का तात्पर्य यह कि उनके अन्दर राष्ट्रीय भावों के पैदा करने की अधिक आवश्यकता नहीं है। वे लोग राष्ट्रीय होते हैं। उनमें सबसे अधिक कमी इस बात की है कि लाभ उठाते समय उनके सामने सम्पूर्ण देश का लाभ नहीं रहता बल्कि उनके सामने अपना लाभ रहता है। कुछ राजनीतिज्ञ यहाँ पर ऐसे भी पाये जाते हैं जो आफिसों में जाते हैं और अपने मित्र तथा सम्बन्धी

और अपने दल को उत्साहित करते और उनकी भलाई के उद्देश्य से उनसे मिलते हैं। इसमें उनके स्वार्थ की जो भावना छिपी रहती है। इससे ब्राजील उन्नति के रास्ते में बहुत दूर नहीं जा सकता है। ब्राजील के लिये और भी बड़ी समस्या है, कैसे वह अपने राज्य को अच्छे राजनीतिज्ञों से भरे स्वार्थ से आगे बढ़ सके। इसमें संदेह नहीं कि ब्राजील में ऐसे लोगों का अभाव है। यहां पर ऐसे लोग पाये जाते हैं जो देश के लिए अपने स्वार्थ की अभिलाषा कर चुके हैं। उन लोगों ने सब कुछ त्याग कर देश की सेवा की। आज भी ऐसे लोग पाये जाते हैं। जो स्वार्थ से ऊँचे उठकर और दलबन्दी को छोड़ कर देश को उन्नति की ओर ले जा सकते हैं। वे लोग इधर उधर पड़े हुये हैं जिनकी संख्या बहुत थोड़ी है और वे अधिक लोगों को प्रभावित नहीं कर सके हैं। कुछ लोग भविष्य के ब्राजील का स्वप्न देखते हैं।

एक ब्राज़ीलियन युवक ने एक अँग्रेज से बात करते हुए कहा "मैं इस बात की कभी प्रतिज्ञा नही कर सकता कि मैं किसी सेना या राजनीतिक नेता की सेवा करूंगा परन्तु मैं इस बात की प्रतिज्ञा कर सकता हूँ कि यदि ब्राजील के लिए कभी आवश्यकता पड़े तो मैं उसके लिए लड़ सकता हूँ।" यह उत्तर उस समय के कुछ लोगों में राष्ट्रीय भावनाओं का प्रदर्शन करता है। ब्राजील में कई दल हैं। और कुछ लोग दलों के शत्रु हो गये हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यह उनके अधिक राष्ट्रीय होने के कारण होता है। परन्तु ऐसा कहना अत्यंत सत्य नहीं कहा जा सकता।

ब्राजील के सामने कुछ और भी समस्यायें हैं। उसे यह

भी निश्चित करना है कि वह अपनी भूमि को क्या करे। उनका कैसा प्रबन्ध हो। वह उन लोगों को कैसे बसाए जो बाहर से यहां कृषि करने के लिए चले आ रहे हैं। इसके लिए पहले बहुत से उपाय किए गए थे परन्तु ये अधिक सफल नहीं हुये।

ब्राजील के लोगों में कुछ विशेष गुण भी होते हैं। वे गुण आजकल तेजी के साथ फैल रहे हैं। उन्हीं गुणों के कारण वे लोग आज संसार की योग्य जातियों में गिने जाते हैं। उनका राष्ट्र एक कर्त्तव्यशील राज्य गिना जाता है। यह सोचना उन्नतिशील नहीं है। वे लोग अपनी उन्नति करने में प्रयत्नशील हैं और उन्होंने अपने को संसार के अन्य राष्ट्रों के समान बना लिया है। उनकी शक्ति प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कुछ ही दिनों के पश्चात् बहुत सम्भव है कि यह राष्ट्र भी संसार की राजनीति का एक अभिन्न भाग हो जाय। जिस पर कि लोगों को अभी बहुत विश्वाश नहीं है। इसी लिए ब्राजील की ओर अधिक ध्यान देने को आवश्यकता है। ग्रेटब्रिटेन का सदैव उसके साथ मित्र व्यवहार रहा है। अँग्रेजों ने कई बार उन्हें खतरों से बचाया है। कई मौकों पर इंगलैण्ड ने उसे सम्पत्ति देकर उसकी सहायता की है। ब्राजील आज अपने को ब्रिटेन का सबसे बड़ा मित्र समझता है।

हमारी दुनियां

पृष्ठ संख्या ८४, चित्र और नक्शों की संख्या ८१, आर्ट पेपर पर तिरंगा कवर। यह वास्तव में भूगोल की पहली सीढ़ी है। मोटे टाइप और सरल भाषा में नाप का साधारण ज्ञान, दिशा-ज्ञान, नियत पैमाने पर नक़शा बनाना, गाँव और शहर के नक़शे का पढ़ना, नदी की रामकहानी, तारे, चन्द्रमा, सूर्य और गोले का दर्शन आदि ११ पाठ हैं। पुस्तक इतनी रोचक है कि बालक आरम्भ करके इसे बिना समाप्त किये नहीं छोड़ना चाहते है। इससे उन्हें भूगोल के मूलमन्त्रों का सहज ही ज्ञान हो जाता है। शिक्षकों के लिये भी इसमें दो शब्द हैं। बिहार, संयुक्त प्रान्त और मध्य प्रान्त के शिक्षा विभाग द्वारा प्राइमरी शालाओं के लिये स्वीकृत। मूल्य केवल आठ आना।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२॥)	२१—टर्की	१)
२—भूतत्व	१॥)	२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
३—भूगोल एटलस	१॥)	२३—भुवनकोष	१)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति	२)	२४—एबीसीनिया	।॥)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग	।॥)	२५—गंगा-अंक	१॥)
६—हमारा देश	॥=)	२६—गंगा-एटलस	॥)
७—संक्षिप्त बालसंसार नया संस्करण	१।)	२७—देशी राज्य-अंक	२॥)
८—हमारी दुनिया	॥)	२८—पशु-पक्षी-अंक	१)
९—देश-निर्माता	॥)	२९—महासमर-अंक	१।)
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	।)	३०—महासमर एटलस	॥)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग	।)	३१—सचित्र भौगोलिक कहानियाँ	॥)
१२—जातियों का कोष	॥)	३२—पशु-परिचय	॥)
१३—अनोखी दुनिया भाग १-१० मूल्य प्रत्येक भाग	।)	३३—प्राचीन जीवन	॥)
सम्पूर्ण भागों का एक जिल्द में २।)		३४—भूपरिचय संसार का विस्तृत वर्णन	३)
१४—आधुनिक इतिहास एटलस	१)	३५—मेरी पोथी	॥=)
१५—संसार-शासन	२॥)	३६—आसाम-अंक	१)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण)	१॥)	३७—द्वितीय महासमर-परिचय	१॥)
१७—स्पेन-अंक	१)	३८—संयुक्त प्रांत-अंक	५)
१८—ईरान-अंक	१)	३९—महासम (दैनन्दिनी) डायरी	२)
१९—चीन-अंक	१)	४०—भारतीय भाषाएँ	१)
२०—चीन-एटलस	॥)	४१—नागरिक दर्शन	॥=)
		४२—हमारा संसार	१॥)
		४३—भूगोल-शब्द-कोष	२)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, ककरहाघाट, इलाहाबाद।